



8091
ASIA ANTICA



ASMA 01/11/55
8097
RUBEN HALL

[illegible]

स्तुतुं नैव विदुः शक्यं च नत ॥ ७ ॥ या नमः सर्वं कनकं शुद्धं मयैव ददाति ॥ विद्याप्रवदविद् अमृतं वदन् प्रनाया ॥ दिव्यीं शृणुतां न कथा कथं च ॥ ८ ॥ अति सुखं हृदी
 तवति न ह्यचन ह्यचेन ॥ ९ ॥ कस्य देवाय नैव यासुः विद्विना न च न्यनु ॥ काश्चन्य ४ वृत्तुलीकाश्च, महाराज नत कुरु ॥ १० ॥ मति मन्त्रानां विश्व, सन शोभति
 सागलात ॥ उगद्विताय जनिता, महाराज नत चन्दमा ४ ॥ ११ ॥ यावत् ॥ मूनयस्य, कवलात्महिताद्यथा ४ ॥ देवाय न ह्यनु मवान् सर्वलोकहिताद्यथा ४ ॥ युति
 सुखायि किंवद, अतलाकहिताद्यथा ४ ॥ १२ ॥ वदायका ४ कतश्च वि, महाराज नत महुतः ॥ सर्वकुरु इजानि, सर्वेति वा मिय ॥ १३ ॥ ॐ ह्य, वासव
 दाया, राजनयनद्विजिता ॥ समस्तानयितानथ, न कस्तु न्दनीयति ॥ १४ ॥ धृयतीहि न्दनाय, नृपकस्तु महत्मान ४ ॥ अमितायेव क नत, मादयतन
 गजैरु ४ ॥ १५ ॥ यदि ह्यस्मिन् दन्यु, रीत्यहान्त क्वचित् ॥ यवयव ह्येव चना, लोक ४ न काथका मया ४ ॥ १६ ॥ अमितायेव क नत, कनिष्ठ ४ नृपकस्तु ४ ॥ वीरि

नावदुष्टकामान् लोहलूखस्यदुष्टयत् ॥ १७ ॥ तत्र ४ किंरुलमाध्यानि कथयामिदवाहयत् ॥ मृनिना विचका मथे, क्वात्वालाकमः ॥ १८ ॥ नि
 द्यायिषु नावतो, अममोक्षा विना विनो ॥ अन्धथमथावसीसान् वन्धनाथोजनस्यमो ॥ १९ ॥ वदुष्टीतकथयामाः मद्राका नूनाकोमृनि ॥ लाक
 चित्तानुलक्षार्थः वदुष्टीत्वा पुनो मृनि ४ ॥ १८ ॥ ०० गिरासे विविचिगर्थः ४ यत्न ४ नरे वनिन्दथ ७ ॥ ताननी तानूमानिन्द, यदि नस्य नमिगय ४ ॥ १९ ॥ तना
 क्कानतमा अह्य, कावक्का जगता रवत् ॥ तानता अचनत् ॥ दयिवा दम आचत ४ ॥ २० ॥ अद्वानस्य जीवके, सर्वयाया निदहिन ४ ॥ यत्न
 वापु विदरि, निर्व्यग्रहासे मविने ४ ॥ २१ ॥ अथ आरावतीथा, मिगिरास समुच्चय ४ ॥ यत्न कावत् नथ ४ ॥ २२ ॥ कचिक्क चिद्रवहिता ॥ २२ ॥
 ॥ तीव्रहावगतीसर्व, याजवीश्वरुसर्व ४ ॥ सान ॥ कावत् समादुष्ट ४ कक्कत्वा हावता दम ४ ॥ २३ ॥ क ४ ग ४ स ४ व ४ तानि, समुच्चय ४ म ४ ल ४ व ४ तान्

म्य २

त्रयक्का सि आनन, मयार्थ कर्तु मूद्यन ॥ २४ ॥ किंरु रा ४ नन रुकिर्मा विवसं समथा चयत् ॥ तन्मदा रा नग्या नित्यना आनानना नमन ॥
 २५ ॥ कक्क वसिज्ज नैवत, नसक्क गितियत् कर्त ॥ न्ययता मिगिरासाना मनुसद्दिन नक्रम ४ ॥ २६ ॥ यत्न आहानमथा काय, मिगिरास समुच्चय ४ ॥
 जनमजय उवाच ॥ उ विव्वा द्वादना यानि वनयूर्ध्व विगामहा ४ विनाटनगने वाभ्र, तथा वर्षे तथा दन ॥ २७ ॥ सहायेर्वदरि ४ सार्द्धं गथेव
 द्यदादिरि ४ हत्वा रावतथाडा लीना अयनल्यभवत् ॥ २८ ॥ लक्क निरुगमेद रुच्चसानुज चसुथा अन ॥ २९ ॥ यत्न यि वायाला नाना
 दमसमागतान् ॥ २९ ॥ यातयिवा पुता नसर्वान् ॥ क ४ ४ वसमन्वित ४ ॥ शारुहि ४ सहिता नाजा, गमयास्तानमाचनत् ॥ ३० ॥ रुलयकनरु
 गानां क्वात्वा तव वया ७ व ४ ॥ नानायन च विवर्थ, किमक्वदतयन ॥ ३१ ॥ वेनम्यायन उवाच ॥ कक्कादकीयना जान, अनयूर्ध्व विविदि

म

नतयुत्थरागावथातउयविष्टसदानुज॥३२॥निस्वसन्त्यथानागमवदनमातुन॥चरिजमहात्मानयून्वावविंसलगा॥३३॥
नानदादवलाव्यासःकविःकान्धथकाव्यव॥नेवावहस्यनिर्दोष्यःश्रुवनागलवाक्यु॥३४॥वनिषायमदग्निश्चइवासाभानसस्त
था॥ज्ज्वचवहवःसिद्धाःसनिष्याःसंनितवर्गाः॥नान्यलभ्ययथाव्यायःसर्वेस्तेऽयतिनन्दितः॥थावाधदवधा नाजावाव्याव्याकलला
वन॥३५॥युमिष्टिनउवाच॥घातयिष्यायियान्युगान्योगान्कुरुचिरुक्तथामयथाजमजयाकाभामूनयः॥यतिरातिन॥३६॥ज्जतिम
आहर्तवालडायद्यास्तनथवृचतथाथयूननश्चैवसुहृत्सम्बन्धिवन्धू॥३७॥नविर्मचतिर्माणाकाशानिघातिनमातुन॥नाककामूव
मथ्युत्सर्वैसांछादकानकं॥३८॥यस्यांगकुडिमानिर्णवात्यचयनिवद्वितः॥समयावाक्यलक्ष्मणगालयायुमिघातिन॥३९॥थन

वद्विनाकालमथनास्मयमिचकिगास्वत्यकालस्यवाक्यकृतसोद्यानितामया॥तन्मदहतिजामानि॥यन्मउन्नरावणसत्यक॥ययनाथ
उज्जदिजीवतिभसूत॥समयातिनलीजनयाथनछन्द्यातिना॥सत्यकचक्रमस्तुक्रवाजनव्यसिगायुन॥ज्ज्वत्सुमारुहःसत्यमित्यकं कंज
वहर्तकांशलाकान्गमिष्यामि॥कुल्लेगल्कर्मदानूल॥ज्ज्वागन्यन्स्वयंकर्तुःसर्वजसुरुतावन॥अष्टज्ञानमथ्युत्कान्यामलस्ययून्वाक॥ज
रिमन्मस्तथावालजगसिंहमिवादिषु॥यावज्जयमहलक्ष्मीवादिनीडायालिता॥तदायुरुतिवारुत्संनसक्राम्यरिवाकि॥उ॥कर्वचयस्तु
नीकाकंकलवाक्यगहायथा॥डोयदाचयिथो॥यू॥यचरिर्विषयाजिगाइ॥खाइ॥खतनयाका॥दृष्टमदक्रममन॥यावन॥कृन्नजनु॥
सम्बन्धोन्मान्मन्स॥यियान्॥गावन्नास्यनिखन्यन्॥हृदयान्नाकनकव॥साहमनकन॥याय॥यधिदीक्ष्यकानक॥आययिष्यायियांयानात्रि

हवकीम, मितिहासयुगातनः ॥ वाक्क (मनयथा) नाजन् शनसौ जीत्यतिवाभित ॥ १२ ॥ वृक्ष (म) काहिसीतक ॥ नाजाने दानमानसः ॥ विषयुवेदनदृष्ट, विषय ॥
 वाचतत्ववीत ॥ १३ ॥ वाक्क (म) उवाच ॥ किन्नमूकसिमूढत्व, म (म) चामनू (म) चति ॥ यदा (म) मयि (म) चक ॥ (म) विषयन्ययवजना ॥ १४ ॥ त्वेवेवाहचयवेत, नाज
 ह्यौयर्थ्यासत ॥ सर्वे (म) वमविष्णम, कुरुकायविदवता ॥ १५ ॥ अदर्शनादिहायात, यून (म) दर्शनेगता ॥ नासोतवनगस्यत्व ॥ दथकिमनू (म) रासि ॥ १६ ॥ अया
 चितस्त्वयात्स, य (म) विष्णमगतामृता ॥ यातागत ॥ तगगत ॥ कातगयविदवता ॥ १७ ॥ नासमत्यकसम्वास ॥ कस्यचित्कितचित्क ॥ अविस्वतसनीभन, किमृता
 न्ये ॥ दथकृजने ॥ १८ ॥ जननदिजनयता, जनकृजनिताजना ॥ जनं (म) चित्तसिमात्मान, मात्मानं (म) चमाजनः ॥ १९ ॥ अयकादीनीद्वतानि यकामव्यतिना
 नग ॥ अयकानिभनान्यव, कातगयविदवता ॥ २० ॥ कगताक्षयितानाजन्, कगताक्षयितामरु ॥ नह्ययश्च शितातद्य, नह्ययश्च शितातद्य ॥ २१ ॥ सर्वयुगाश्चयोगश्च

क्षातिर्वैसीवीवान्ववा ॥ मयश्चर्तनकर्कया, विषया (म) दिनेकवे ॥ २२ ॥ सीधामविषयामका, मनमर्कचडीविनः ॥ अनित्येवोदनेनयः ॥ जीतिर्दयस्य
 वयः ॥ २३ ॥ अभाग्यसिचसंवासा, मयश्चर्तनकर्कया ॥ यल्लिभवेवमूर्खत्वं, वल्लिभवेवमूर्खत्वं ॥ २४ ॥ वृषभचदनिदत्त, मत्यासद्वेगुल्यता ॥ इत्यका
 ल्यप्रमृगस्य, सहस्रस्यापिवाथिव ॥ २५ ॥ नना ॥ गतायूय ॥ यच, त्वकिन्नरवकिन्न ॥ सर्वे (म) यथं मथनी, सर्वे (म) यथं मथनी ॥ २६ ॥ अयमकावमका
 नाः नृणां प्रागर्ह्यनित्यता ॥ तस्माद्विस्वमेवद, अनित्येयानयश्च ति ॥ २७ ॥ क्षानित्यताकृतमति, मानमालि विष्णवति ॥ सङ्गतातिसूवद्धानि, विषयश्चामनान
 मां ॥ २८ ॥ किन्नरकयदमृत्त्व, वृजोवावमृत्विताः ॥ अलानाशमयात्ताक, जनायूयमसंचनन् ॥ २९ ॥ मयश्चर्तनकर्कया ॥ यवर्तयन्न (म) यथा ॥ यथादि यथि
 क ॥ काश्चिद्वायामाशित्य विग्रम ॥ ३० ॥ विश्वमचयूनयति, नह्यदूतसमागम ॥ यथाकादृशकादृशे, समंगत्तामहा (म) ॥ ३१ ॥ जलोधनमयातायात, सुहृद्गुणस

म्यायनडवाच॥ तमवर्णाकद॥ खालं विलयनमहायति॥ कृपयायनयाविष्ठा॥ व्यास॥ यूननरायण॥ ११०॥ व्यासउवाच॥ अग्निवर्त्महान
 जनल्लोककुरुमर्हसि॥ यूननकुरुवक्रामि॥ इक्ष्मणदितियु॥ १११॥ स्वप्नलघायथा॥ विरुला॥ यतिवा॥ मन॥ एवमयाथिवानाज॥ रु
 नाथस्मिन्नाजि॥ ११२॥ नयुधिवासकलया॥ नसुवर्णस्यनामि॥ ११३॥ नहस्य॥ यतंसर्वे॥ ललसा॥ ननयसरुमा॥ ११४॥ नमयाचायिदन्तच
 नतामाना॥ नसुथासकर्मविमियु॥ कन॥ नया॥ कालेन॥ नहगा॥ ११५॥ हनुमा॥ नरुवकाहि॥ तस्य॥ कालस्य॥ याथिव॥ य॥ अ॥ नि॥ रु॥ ते॥ न॥ नि॥ य॥
 य॥ अ॥ द॥ मे॥ न॥ ११६॥ मणिमा॥ गाल्म॥ क॥ सिद्धि॥ काना॥ न॥ पुरु॥ यायथा॥ ११७॥ सु॥ ख॥ इ॥ ११८॥ काल॥ कर्म॥ रु॥ ल॥ य॥ द॥ ११९॥ य॥ स॥ ना॥ लि॥ यि॥ य॥ क॥ सि॥ न्
 न॥ ह॥ य॥ अ॥ यि॥ या॥ धि॥ व॥ क॥ र्म॥ सा॥ अ॥ य॥ जा॥ नी॥ य॥ क॥ न॥ काले॥ न॥ न॥ ह॥ गा॥ १११०॥ त॥ वाम॥ यि॥ च॥ ना॥ अ॥ उ॥ क॥ र्म॥ नि॥ य॥ वि॥ चि॥ न॥ य॥ वि॥ न॥ स॥ ह॥ उ॥ का॥ नि॥ य॥ य॥ न॥

७

एव

म॥ स॥ ग॥ ११११॥ वा॥ क॥ ल॥ य॥ च॥ य॥ सु॥ ना॥ स्त्री॥ य॥ ग॥ च॥ रा॥ न॥ व॥ का॥ दि॥ व॥ ह॥ ल॥ य॥ क॥ अ॥ र्म॥ चा॥ य॥ नि॥ क॥ १११२॥ ज्ञा॥ त्मान॥ स॥ वि॥ जा॥ नि॥ दि॥ नि॥ य॥ म॥ व॥ न॥
 ज्ञा॥ ल॥ गा॥ न॥ च॥ अ॥ र्म॥ य॥ म॥ न॥ स॥ भा॥ ह॥ य॥ म॥ चि॥ त॥ सु॥ ये॥ व॥ कि॥ क॥ ना॥ नि॥ न॥ य॥ द॥ अ॥ र्म॥ मान॥ स॥ क॥ र्म॥ नि॥ १११३॥ या॥ थ॥ न॥ हि॥ म॥ न॥ द॥ वा॥ ल॥ व॥ द्धि॥ क॥ र्म॥ न॥ स॥ नि॥ ग॥
 १११४॥ स॥ नि॥ म॥ उ॥ ग॥ दि॥ न॥ ग॥ रा॥ न॥ का॥ न॥ सा॥ ग॥ न॥ म॥ ल॥ य॥ अ॥ ग॥ ज॥ ना॥ ग॥ ह॥ न॥ क॥ सि॥ द॥ व॥ द॥ य॥ १११५॥ ज्ञा॥ या॥ का॥ रू॥ न॥ रा॥ गु॥ ना॥ या॥ ग॥ नि॥ लि॥ यि॥ वि॥ नि॥ मि॥
 ग॥ १११६॥ क॥ र्म॥ न॥ स॥ द॥ न्दी॥ न्दी॥ क॥ १११७॥ य॥ रा॥ न॥ काल॥ व॥ द्धि॥ ना॥ १११८॥ वी॥ डी॥ यि॥ ना॥ द॥ ग॥ म॥ ची॥ न॥ नि॥ यी॥ वृ॥ क्षि॥ यु॥ क॥ र्म॥ नि॥ शु॥ रा॥ शु॥ रा॥ नि॥ न॥ द॥ ना॥ नि॥ स॥ य॥ य॥ ति॥ मा॥ नि॥ ला॥
 क॥ य॥ का॥ नि॥ य॥ का॥ नि॥ लू॥ ता॥ नि॥ काल॥ १११९॥ व॥ र्म॥ काल॥ क॥ र्म॥ न॥ स॥ त्वा॥ त्वा॥ मी॥ व॥ य॥ यि॥ वी॥ द॥ य॥ ११२०॥ ज्ञा॥ ति॥ व॥ न्दी॥ व॥ न्दी॥ त्वा॥ त्वा॥ य॥ अ॥ र्म॥ क॥ न॥ म॥ य॥ न॥ ११२१॥ वा॥ स॥
 द॥ व॥ उ॥ वा॥ च॥ ११२२॥ अ॥ धि॥ न॥ य॥ नि॥ काल॥ ११२३॥ स॥ व॥ ता॥ धि॥ नि॥ न॥ न॥ ११२४॥ य॥ अ॥ ह॥ र॥ ग॥ ती॥ वी॥ या॥ स॥ क॥ क॥ न॥ स॥ ज॥ न॥ य॥ न॥ ११२५॥ अ॥ र्म॥ क॥ द॥ न॥ श॥ क॥ य॥ द॥ यि॥ व॥ अ॥ च॥ त्वा॥ व॥

चर

४४

[illegible]

वृजः ॥ ३ ॥ दववृत्तं महात्मानं सत्यं अर्मायनाय ॥ ४ ॥ हवरावर्तं डिक्केन लोकान्वाप्यामि कानरुः ॥ ५ ॥ तदस्य त्ममहायाना नम्यहं वि
 त्विषीयथा ॥ ६ ॥ तथानुसाभिमीनाज ममधदिक्क सिधिय ॥ ७ ॥ सिध्माडवाच ॥ वनतनुकथरुह मात्मानं त्वं विमन्यस्य ॥ कर्मन्यस्मिन्महाबाजन्तं सूक्ष्म
 कृतदितादियः ॥ ८ ॥ मनकर्ममयीयादू ॥ सर्वयोनहतीवृत्ता ॥ कथं अवयुनतया ॥ ताविकर्महेलीयथा ॥ ९ ॥ यदता विनतहा वि राविचन्नत
 दन्यथा ॥ १० ॥ निविना विषयाय मगद किन्नयायन ॥ १० ॥ अनेवादाहननाम मितिहासयनातनः ॥ सम्वादं नृत्य (गेतभ्या काललुचकवन्न) ॥ ८ ॥
 दाफ्फा (गेतमीनाम सुविनायमसीकिता ॥ ११ ॥ सथनिर्दुर्ह्वयुगं मयश्चक्रतचतनः ॥ अथर्तस्त्रायवा (मन वद्धासयमदमयत् ॥ १२ ॥ लुह्वयव
 ईतनानाम (गेतभ्यासमूयानयत् ॥ तीक्ष्मविविमीदीदव युगहायन्नगभस ॥ १३ ॥ वृहिलाष्टी यष्टी महाला (ग वध्यातीर्थी यदिमन्यथ ॥ १४ ॥ (गेत

न्यूवाच ॥ नः सिद्धगलूचकयूक्तकाम. याय्य रंजावितवेकथ विद्वेदं ॥ देवतन्यनासरुं नचेतः ॥ तस्मादने लूचकमधेयानः ॥ १४ ॥ याविनगिर्विद्वं ॥
 यु० इत्यहं ॥ १४ ॥ यथायथा ॥ निर्वर्णयन्त्यहं ॥ ननयानिसनान्यथ ॥ १५ ॥ नवाययनिययायसात साधनवसदातव ॥ आत्मानेवह ॥ याव ॥ कुने न
 शेर्विकमति ॥ १६ ॥ दद्युनैरेहिसानूदरुति. कृतमवानूदरुति ॥ य ॥ यथायथायसाचन. महासाहुरुनयूचः ॥ १७ ॥ योर्जिनु रंनु निदय ॥ सयनैखनन
 रंयानि. नरैसासुतमालक ॥ १८ ॥ लूचकडवाच ॥ नवायानीव ॥ यथायः ॥ यथायूदगकाविमः ॥ तस्मादनेवमिथ्यामि. नरैसीमिथुद्यातिनः ॥ १९ ॥ रगे
 तम्योवाच ॥ सुनरायनूयालाक. साधव ॥ साधूकाविन ॥ असाधूयूयन ॥ साधू रंनुत ॥ यनूयाकम ॥ २० ॥ तसाधव ॥ सुजमान. सोविदीद्विनात
 द ॥ अयकाविनूयायय. यतवन्तूयकाविन ॥ २१ ॥ इ ॥ विनया दिहगत्या. मलूमागजम दिहि ॥ नूचकाइ ॥ तमयनः ॥ निर्व ॥ तदुमरुति ॥ २२

इ ॥ रंनुददतिआह. अर्व ॥ रंनुसर्विदति ॥ तस्मान्नकस्य चिद्व ॥ रवः दातवीद्व ॥ त्वरानूमा ॥ २३ ॥ सुमरुत्याविदायु. कृतममरिवदिनी ॥ कथं ॥ त्वर
 यका. यनै ननूय ॥ यमाहति ॥ २४ ॥ लूचकडवाच ॥ असाधूतवायमानायि. रगेतमीरुजगीयति ॥ लूचकनमहाताम. सावायनाकनासति ॥ २५ ॥ वीजया
 नोतथमहा. यवहाभचयसुचि ॥ तस्यकृच्छगतस्यायि. नवायवर्कतमन ॥ २६ ॥ वायमानायिवायय. सुहात्मानयवर्कत ॥ वायमानायिवायय. याया
 न्मायायमिहति ॥ २७ ॥ विद्वद्विहोविगायना. तंभवर्कजंजंनु. नूयदं ॥ निबंथं ॥ २८ ॥ साम्यमानायि. यायकमनिन्नन ॥ यथायमानूवीगमन. निमलित्व
 तमाहति ॥ २९ ॥ उन्माकनसहयय. याव. द्विहविगायना ॥ तंभवर्कजंजंनु. नूयदा ॥ निबंथं ॥ ३० ॥ ततसमूह. रंनुत कृच्छासकृत्तयन्नग ॥ ३१ ॥
 सुसुमिलमन्दा. मानूयाययायित ॥ ३२ ॥ यन्नगडवाच ॥ कथं ॥ नकदायय. विद्यतममकलि ॥ अश्वतर्क. हिमाकृत्य. विव ॥ समवायय ॥ ३३ ॥ तस्य

कर्म यत्तत्तममृत ४ सूत ४ ॥ रात्रि काले कृतमृत्यु मूर्ध्नि ईशितकवन्नग ४ ॥ १२ ॥ तीव्रदवाच ॥ गगायथगतीजगत् ४ कालमृत्युदुर्जगमा ४ ॥ अष्टदिग्भावाः ई
नका विष्णुकाचातिथिः ज्योतिषी ॥ १३ ॥ एतद्वासासमगद् मद्गुणिकायमानय ४ ॥ स्वकर्महेलेवत्यचविधिः श्रीलाकान्मनूजाभिय ४ ॥ १४ ॥ नेतकृतं त्वया
थ नवद्वयभनादिशि ४ ॥ कालेन तं कृतं सर्वं निरुतायनं वार्थिवा ॥ १५ ॥ वेणम्याचनडवाच ॥ ॐ ह्यनद्वचने श्रुत्वा अस्मयशा यमिहिन ४ ॥ क्कतिः ॥ गार्कयनिवा
द्य वद्ववस्वद्वचन ४ ॥ १६ ॥ ॐ गिराससमृद्धयः ज्योतिष्यया स्थान द्विगिभावा य ४ ॥ १७ ॥ ॥ वेणम्याचनडवाच ॥ ॐ ह्यकवतिताभायुः कथ्यचयदनन्दन
सनाजानाजः ॥ ईल वासम्यननरायन ४ ॥ १८ ॥ यमिहिनडवाच ॥ दानं ह्यतयशावायि तगवविद्वद्वचनः ॥ किम्बामरुहूल्लयत् तन्मकुहिनयाभन ॥ १९ ॥ रात्रि
वाच ॥ दानान्नद्वचनं यन्मः दथियासहि किधेन ॥ नाडीयत्तमवेन दृष्टं तलाकसाहिकः ॥ २० ॥ यमिहिनडवाच ॥ विद्यायाः सन्तुष्टदाभनकीद्विग ४ ॥ यदि सकिनवालात्ता

समूहमष्टौ वीकथ ॥ ४ ॥ सवामन्यवयवकं. स्ववह्निमिति यास्तुता ॥ हिन्सायां वदं कृष्ण. कृषिं चेततथयन ॥ ५ ॥ तथ ५ ४ खाजितहाह. वायुयाति. ननी
यस ४ ॥ अर्थस्ययूनययाय. यनित्याग ४ सुद ४ कन ४ ॥ ६ ॥ विष्णयतामहाबाज. तस्य व्यायार्जितस्य च ॥ ग्रहया विमिवट्वाण. दहस्यानानविद्यन ॥ ७ ॥ ग्रहाय
मस्युनादवा. वावनी विष्णुवाविनी ॥ सावित्री यसमैविनी. सस्यानलुवितानिनी ॥ ८ ॥ ग्रहया साधनयमी मरुद्दिनथिनासिति ४ ॥ अर्किचनयिमूनय ४ ग्रहायनादि
वीगता ४ ॥ ९ ॥ अग्नेवादाहनीताम. मितिहासयूनानेतनः ॥ वाहिडा नयनित्याग. घट्टलीयायमूकल ४ ॥ १० ॥ जिभाश्रुमैरुकिमौर्हिता. कनूदगुवसत्यन ॥ त
यस्वीमूकनाताम. दाकाऽतावसियातिथा ४ ॥ ११ ॥ स्वाध्यायश्रतस्ययन ४ सखवागनसूयक ४ ॥ जितदिथा जितवा ४ साक्षाहमिवायन ४ ॥ १२ ॥ उच्छ्रवत्यासयनम
वीहिडा मयार्जितः ॥ सयूनदानयदानं. सनुके निथिष्णयनुक् ॥ १३ ॥ नश्रुवाहुनकममि. दृष्टिसादृशमागत ४ ॥ उन्मल्लयदिग्मसा. वाहनी विविधमि

न० ॥ १४ ॥ अथ यगमयस्य वाह मङ्गलीयं सितवत ॥ अन्तार्थिनमनूयाकः विद्विमतेशि मून ॥ १३ ॥ ततस्मिन् मङ्गलादृष्ट्वा वातासाय त्वय्युजय ॥ इवाच चेनेम
 अ० वाग्मि ४ सकयय निव ॥ १४ ॥ मङ्गलोवाच ॥ अहानिवसरा ग्याहः यग्यसर्वद्विजाकुल ॥ मना नथ वृवक्षमा वलायी समुयस्मिन् ४ ॥ १५ ॥ त्वदागमन
 यनार्यं ह्यर्थमा विद्वजस ॥ मरुत्सवनि रवुक्कः दिवस ४ यतिहा विनेम ॥ १६ ॥ वासुडवाच ॥ पुवसूकाय अन्त्याय नमस्त्यर्थस्य अर्पित ॥ गिलीका र्जितमनन
 वादकस्मिन् दानित ४ ॥ एतद्गुहाकृत्सुमवासो ननगुहाय दानितः ॥ स्वीर्गं यालिया अथम प्रचयो दिवथमग ४ ॥ २० ॥ तस्यैव यवकाले च संवाक्यं सुमहात्मन ४
 आगम्य कुक्कसा नाद्यः यत्कृत्यं सद्यमेव नत ॥ २१ ॥ नचेनं विविद्यानर्तुं ससाकं नस्यमानसः ॥ नका आनत कार्यं यैः अः नायमानानमस्यन ४ ॥ २२ ॥ तं शुद्धरावं विद्वज
 वातवाचसद्विज ॥ इवसिडवाच ॥ लोकत्वसुदंभा दाता ननु नानरु विद्यति ॥ २३ ॥ इह मर्त्ये क्लृप्त नूद नदान् व्येयमिव च ॥ यादृक् प्रीती अयति स्वर्गसु नजिता

हव ॥ २४ ॥ जितकुर्जय ४ काम ४ का आलासामदक्ष आ ॥ येन्यमत्सुना माया मानं कार्यं व्यमवच ॥ २५ ॥ जिताकुवमसि लोका ४ वाका शिववमंगतिः ॥ अ
 लादानं विद्युयक मयदं स्वर्गवासिनि ४ ॥ २६ ॥ वृद्धिवाहिजया व्येयः तवस्यैव दमर्जवः ॥ दवादानं दमयेव त्वयि सर्वयनिष्ठि ॥ २७ ॥ लाकान् समस्तं आर्यकं व
 मीतचैसचनाचना ॥ अभायि आर्यतेवक्कः कुमद्वैते र्वाहणे ४ ॥ २८ ॥ मङ्गलवाच ॥ अन्यास्य नृगहीनास्मि समस्तवतसह ॥ सहिसमागमानित्यः सर्वयाय
 हनस्तु ४ ॥ २९ ॥ वासुडवाच ॥ वृद्धवदतकृत्य नदाद्वसिमा मून ॥ दवद्वता विमानन मङ्गली समुयास्मिन् ४ ॥ ३० ॥ दिव्यनत्र विविशत किद्विमा जालमालिना
 ॥ सर्वकामसमृद्धिन कामगनसुवर्चसा ॥ ३१ ॥ इवाच चेने विप्रथं विमानमिदमावृत्त ॥ स्वकभायि र्जिता दिव्याः सिद्धिवाक्यं कृत्य नूकमा ॥ ३२ ॥ दिविदवा ४ सदवदु
 यं अन्वयं वदस्तु ॥ समस्तकां यतिर्हं ति कीदृकस्तवदंतिः ॥ ३३ ॥ मङ्गलवाच ॥ सुगीसकयदन्मिः ॥ मिमिवाहमनिमिग ४ ॥ अग ४ वृद्धा निविमस्तु

नाहं स्वर्गमिच्छामि. त्वं गच्छ रुच्यथा गतः ॥ ३४ ॥ दवनाजं श्रुत्वा श्रु. दिवा वक्रमयं कथं ॥ विद्या ॥ दमयित्वा संप्र. तव गावश्च नात्मनः ॥ ३५ ॥ गता वि
 सृज्यते त्वानः मूकलक्ष्मणं निरुहः ॥ सर्वान् कामान् विनश्यत् ॥ ३६ ॥ वक्राकं चिकमासीत्. निर्ममं निनरुहः ॥ सर्वद्वन्द्वः सहा
 भावः सर्वद्वन्द्वतननः ॥ ३७ ॥ निरुहो न द्विचक्रः समं च जितमात्मनि ॥ चक्रः ॥ चिकं च दात्मानं. यथा जयमभ्यर्चने ॥ ३८ ॥ सर्वस्य च माहाय. योगीश्वर
 विदाम्भनः ॥ प्राकवाक्कृत्य ववक्. इष्टं प्राची च तूने नयि ॥ ३९ ॥ तस्मात् त्वं मयि नाजिह्व. तदद्या चार्जितं ननः ॥ दानात् ज्ञानतनः ॥ प्राय. ज्ञानात् सिद्धि मवाप्सु सि
 ॥ ४० ॥ यत्पूर्वं ॥ ४१ ॥ यत्पूर्वमिति ॥ यत्पूर्वमात्मानं मूकमः ॥ विमूकः ॥ सर्वयायथा ॥ सुगन्तुं लोके च गच्छति ॥ ४२ ॥ ॐ तिहा सप्तमं च मूकलायाश्चानहतायाश्च ॥ ४३ ॥
 ॥ वेणुम्याचन उवाच ॥ कथय न हिताथय. प्रतापान् दुर्गां कदा ॥ भामसी भर्मन त्वं ॥ यद्यपि चक्रं भिष्टिनः ॥ ४४ ॥ यत्किञ्चिदुवाच ॥ आनन्दवासी न व्रज

१३

तयार्जुन भगवतः ॥ तस्य यत्पूर्वमिति ॥ कथं हि यैतथा भनः ॥ २ ॥ भामम उवाच ॥ वक्रः ॥ कनवः ॥ सर्व. समग्र वन दक्षिणा ॥ वक्रात्तयता तस्य वा
 सितः ॥ प्रातनक्षनः ॥ ३ ॥ ॐ दमवयनादवा. सुनया समगालयन् ॥ प्रातनक्षनमवेह. गोचरता निविचन ॥ ४ ॥ अश्वे वा दाह न कीम. मि तिहा सीय नाननः
 ॐ दस्य ॥ गृध्रसम्बादः ॥ शिवमो जीननस्य च ॥ ५ ॥ वक्रमानमलोयक. जिह्वा सार्थं सि विनयः ॥ ६ ॥ ॐ दस्य न कथा नाग्नि. रूपातशा यजमभुः ॥ ७ ॥ अथ नूत
 यतः ॥ प्राय. कयातः ॥ ८ ॥ भननाथी महीयालः ॥ निलिल्य रुच विह्वलः ॥ ९ ॥ तनः ॥ भने मूयागम्य. भननूया सुभभनः ॥ नाजानं समहात्मानः ॥ प्रावाच द
 वचकदा ॥ १० ॥ ॐ दस्य न उवाच ॥ भमामिनी त्वाद्भनकः ॥ सर्वनाजमहीहिताः ॥ सर्वभम विनूहं हि. कथं भम सि को व सि ॥ ११ ॥ रुवान् कृष्टी दानन. सत्यना नृत वा हि
 दिनः ॥ दमया कूनक ममि. मसाधूसाधूना जयः ॥ १२ ॥ नायका नयनयास्या. इयका नयनाननः ॥ अयका नयनयात्. उयका नयनयाथ ॥ १३ ॥ अहिना हि न वृद्धि

न

[illegible]

यूक्तं नानुमानेन यथा^{वि}मुच्यते विदुः ॥ २१ ॥ यथा हि न जीविनमात्मनः विधे ॥ तथा यत्र यामविजा विर्गच्छेत् ॥ सैव न स जीविनमात्मना यथा, तथा यत्र यामविज न जीविनः ॥ २२ ॥ तस्मान्नाह मिमंसीत मयि चिच्छेदकथातकः ॥ यदहं मन्यस्य यूक्तः वक्तुं शक्नोति न ह द ॥ २३ ॥ शब्द उवाच ॥ आह नानुमानेन सैव विदुः जनैश्च ॥ आह नानुमानेन जीविनः ॥ २४ ॥ अकथनविनाशनं दिनमप्ययं जीविनः ॥ अकथने विदुः यथैव न स जीविनः ॥ २५ ॥ तत्राह नानुमानेन अकथनं विदुः ॥ तत्राह नानुमानेन मयि चिच्छेदकथातकः ॥ २६ ॥ विदुः चकार यथा स्यात्की, यत्नमयं न स जीविनः ॥ मयि चिच्छेदकथातकः ॥ २७ ॥ अविनाशाय अमर्त्यः स अमर्त्य इति नूतनः ॥ तस्मादिवा अमर्त्यः निश्चित्य गुणलाभः ॥ २८ ॥ यतः प्रियं कथनं नाहं कथयामि विनिर्मुच्यः ॥ नाहं उवाच ॥ नाहं उवाच ॥ यत्र अमर्त्यः कश्चिदपि सत्त्वं न ॥ ३० ॥ यति

नीरुयसीगात्मीनाः मत्तयसीवदायन ॥ वनभकस्यसत्त्वस्य दत्ताष्टरुयदक्षिण ॥ ३१ ॥ नडुवियसदुयस्य (मसदुयमलीकनः ॥ अत्तयसीवद्विभक्त्या, आददातिदचा
 यन ॥ ३२ ॥ गस्यदुहदियकस्य, रुयनाक्षिकुतश्चन ॥ रुम (अनुभवादीनाः दातालसूनराधुवि ॥ इन्नरु ४ यून्वालाक, सर्वद्विगतययद ॥ मरुतामयिचक्ष्णाता
 कालेनदीयनरुलः ॥ ३३ ॥ सीतारुयवदानतुःस्य, रुयनवनविद्यन ॥ दलमिहदुर्गनक ४ गीथसिवाश्रतकथा ॥ ३४ ॥ सर्वस्थिरुयदानस्य, कलानार्थकिआ
 उष्णी ॥ ३५ ॥ गगलदय्यिकाः आदद्यात्थिवीमिमाः ॥ ३६ ॥ यजसर्वयहैदु, तथावरुयदाभिक ४ ॥ अयिहजनाश्रमदः नवालीवाहृदयजः ॥ ३७ ॥ म
 मचिमीरुयसीवैगस्य, रुयदीनकवैयानक ४ ॥ यत्समाक्षिपुर्गकि कि कनजन्मनिजन्मनि ॥ ३८ ॥ रुययमरुमाकनिः प्रानिनासाकिनाश्रक ४ ॥ नक्षरुकासयवाहृ
 नक्षरुनायूनरुवः ॥ ३९ ॥ प्रानिनाहृ ४ खतफानाः कामयइ ४ खनासुनः ॥ यत्तवनान्ताम्वद, मरुमेतामूदाहृ ॥ ४० ॥ सद्यनान्यनरुगवा यसादुसहृमन ४ ॥

१०

आलना (धिसमालम्ह रुवनायीविहंगम ४ ॥ ४१ ॥ तद्य (थहृगवाहृन ४ मयनवेवदाम्यहः ॥ ग्यनडवाच ॥ यनवविहिगासीसाक, अग्रिरुह ४ कयागक ४
 ॥ ४२ ॥ तमवहृरुनाहृने ४ कार्यमस्ययनेममि ४ ॥ ग्यनाकथातत्वादकि, ग्युतिनवागनातनी ॥ ४३ ॥ मानासीसानतीहृवा, कदनीहृदंतुमानहृ ॥ नाडीवाच ॥ नारुम
 कृष्णमागनि, कचिदहृविहंगम ४ ॥ ४४ ॥ ग्यनवेवदाम्यहृ, अमसत्त्वदयायन ४ ॥ सर्वसत्त्वयुयदानः भकसत्त्ववयादकैया ॥ ४५ ॥ सर्वसत्त्वयदानाधु
 दयेकसिद्विलिखन ॥ सर्वदानानतत्कय्य ४ सर्वयज्ञश्चरुवन ४ ॥ ४६ ॥ सर्वताश्चिथकाश्र, यकूयात्यानिनाहृया ॥ वादान ४ कर्मरिथेयु, सर्वदुर्गदिननता
 ॥ ४७ ॥ दयासीदणीतयकाना, वृक्षलावीवजकिन ॥ गद्यनक्षिहृवायि, जाग्रत ४ खयतायेवा ॥ ४८ ॥ यन्नरुनरुिताश्चि, गत्य (ग्यनिवचद्वितः ॥ ४९ ॥ गमातिचरुता
 नि, ह्मावनानिचरुवन ॥ ५० ॥ आत्मवेद्यरिचरुकि, गयानियनमीगति ॥ प्रानिनेव (अमानहि, य ४ गक ४ सम्यक्चन ॥ ५१ ॥ सद्यकिननकैयानः मिनिवाहृमनीधि

ता२

न

॥ ४१ ॥ नाई विजिनरुं सुमहः प्रचक्रामि न वदिज ॥ यदा कामसुहृदः वरुं चित्वा कथानकः ॥ ४२ ॥ अथ नडवाच ॥ यद्विना उ कथानन सुहृदं दृष्ट्वा विना दृष्ट्वा
 ॥ ४३ ॥ कथां सुत्यानि स्वमान्यानि प्रचक्रम ॥ ४३ ॥ नाजावाच ॥ अनुग्रहमिममन्यः यत्मांसा नातिहास्य ॥ प्रवक्तव्यं प्रचक्रामि स्वमान्यनुलयादं
 ॥ ४४ ॥ यदेवियं तत्सु जना विनाइ ४ खनतायसः ॥ ममेव विचमवेत तस्मात्कृतिरिति चिन्ता ॥ ४५ ॥ अथ नडवाच ॥ यतिज्ञस विना गिता ॥ ४६
 ॥ वंशानां ईनां ऊचममः सींसां मूरधतन ॥ ४७ ॥ यदि वा भूयका वाच दहा चैनायचूचन ॥ ४८ ॥ किमयकानस्य प्रत्यहं विचमवथ ॥ ४९ ॥ अथ नडवा
 च ॥ नातिविक्रमं दयाच नवमान् ऊचनश्चन ॥ तस्मात्कथाननसमः प्रचक्रुः उलयावतः ॥ ५० ॥ नाजावाच ॥ तदवाहं कविश्यामि यत्मान्सींसा नातिहास्य ॥ ५१
 ॥ नाहं स्यानदः एमस्या लडाहं वदमिहं गम ॥ ५२ ॥ नाजावाच ॥ प्रवमका स्वमान्यानि समूहलस्यार्थिव ॥ ५३ ॥ प्रहृष्टुलयामान् कथाननसहृदु ॥ ५४

१७

यव

उ

॥ ५५ ॥ त्वहं तस्य सुखसांगकाः सर्वहिते मित ॥ नाहं वनियनइ ४ खन साधवानित्यइ ४ खिता ४ ॥ ५६ ॥ विद्यमानं युलया कथानावाति विद्यते ॥ यनः प्रकृत्य मोसा
 नि तन ४ द्यादायार्थिव ४ ॥ ५७ ॥ नविद्यते यथा मान्यः कथाननसर्वचित् ॥ ५८ ॥ अन्नीमर्मांसा वा नूनाहुला स्वयः ॥ ५९ ॥ यनइ ४ त्वाहुलानित्यः
 सर्वदूतहितेनना ४ ॥ नाथयके मरुत्तना ४ ॥ स्वसूखानिमरुत्तयि ॥ ६० ॥ अथ तस्मिं समावृत्तुलामोसाननवृत्त ॥ देवइन्द्रयानइ ४ प्रवृत्तव्यययातक ४
 ॥ ६१ ॥ तन ४ सुस्यतदावृद्धिः क्वात्वाभर्महितांशुताः ॥ एकस्वयमाकाय वाकभनदसावत ४ ॥ ६२ ॥ अथ नडवाच ॥ ६३ ॥ उदाहमसि रुदक कथानादयवाह
 न ४ ॥ डिहसमानातीनाजः नित्यं मे चरुमयागतो ॥ ६४ ॥ नेतल्लुर्ध्वं न्याय्य कुर्नकविश्वकिचायन ॥ मरुत्तकालुनिकनह यत्करीइकनं त्वया ॥ ६५ ॥ यनाथेत्य
 ॥ ६६ ॥ द्यामा द्यायैति नरवत्तव ॥ द्यातसंयत्तुखेय सायातिवृद्धिना ॥ ६७ ॥ यनाथैकानककल्याणा स्वयमकाकनित्य ॥ ६८ ॥ त्वथवकवनीलोज कनूभातन

लभयते ॥ १०॥ **क** कर्मरुं या जे ४ सुदरे वद्वै कवुं सुमिदं जगत ॥ त्वी जगद ४ खमादाथः वद्व कनू मया नृप ४ ॥ ११ ॥ त अ स वल्लिना वाधि. त्वया दा यना
 जिना ॥ यथे वत्ता सा सी तान. वासना धिन विद्यत ॥ १२ ॥ अकृत्वेया विमिश्रम्. हीनान नवमल्य वया अकृत्वा सद जे ४ सुद्वी. त्वी ला का रु मता गत ४ ॥ १३ ॥ यथा
 यका न जमाना ० अग्राध विहिता सुभ ॥ सजला कल ह्वै हि त. सरुला म्भ मरुदुमाना ॥ १४ ॥ आत्म या जे ४ यनवा दा. यानन ४ यनिल द्वा ति ॥ सया नित्य नर्मका
 नः यस्मा न्ना वरुं थ ल्यून ४ ॥ १५ ॥ प्रा ले नयित्वा या ना ज न् नक्षत ४ कय लो जना ॥ खमा सा व्यनित्यं ह्वै विद कानि. वसु धन्य म्का कथ ॥ १६ ॥ य सर्व विदि जी
 वकी. कवला सा दन म्भ ना ॥ नयून जी वति म्भ ना. य ४ यना थ य जी वति ॥ १७ ॥ किमगु चि रं यत्स न ४ यना न्म रू न ल्य ना ॥ नहि स्वद रुणा ता य. जा य के च न्द न्द मा.
 ॥ १८ ॥ यथा य का वया यान. यथा य ४ यून य ४ सदा ॥ सी य दं न द ता प्रा ति. यना दा वि हि य ल्य नः ॥ १९ ॥ यथा य का नि वे क भि य प्र ह्वै सखा य गत स्यु हा ॥ जग द्वि ना य जी

१९

यन्क. सा भव स्त्वा द्वा द्वा वि ॥ ६० ॥ यत्स्व मान्या निग म ल्य ४ समू क्तौ ता नित्या र्थि व ॥ यथा गता ना की र्ति. ला कान नू ग मि द्वा ति ॥ ६१ ॥ वि यु नू य भ न् यो व.
 वा न् यित्वा तिल म्भ हिः ॥ सर्व लो कान नि क्म म्भ. वद्व ला र्क ग मि द्वा ति ॥ ६२ ॥ नाम स ड वा च ॥ य व म्भ कान मि द्वा ग्नि उ ग म तु कि द्वा म्भ ल यः ॥ ना जा उ क्तु मि द्वा कः ॥
 मू मू द द व व सि नः ॥ ६३ ॥ वू दं य ४ म्भ म्भ ना नित्यः ॥ जे व म्भ नित म्भ म्भ ॥ स वि धू य रु या यानः ॥ यथा नि वि दि र्म म्भ न व ४ ॥ ६४ ॥ वि दि ल्य वा जा रु ग नी न म्भ
 वः य म्भ म्भ वे सर्व जन स्य द्वा द्वा ॥ म्भ न दाना ल्य न जी व न द्वा म्भ. वि भ य ला क न य न्म म्भ यथो ॥ ६५ ॥ वू निला स म्भ म्भ म्भ वि व द्वा यान व द्वा अ भि य ४ ॥
 ना वे म्भ म्भ य न ड वा च ॥ व रु स्य नि स र्म व द्वा म्भ क तु ल्य य न क म्भ ॥ म लं ल्य ग र्ती ता म्भ. म्भ य द्वा द्वा म्भ गता ॥ अ वि व मि द्वा ॥ थ रु गु ४ यून स्य यून रु क्तु ४ ॥ य
 जि ना ल्मो न मा ग स्य ४ म्भ म्भ म्भ म्भ म्भ ॥ २ ॥ वि म्भ मि न्भ म्भ ल मि न ४ सी व र्क ४ को सि क म्भ ॥ ने ला रु रु स्य नि य सि म्भ व न ४ का म्भ य द्वा द्वा गु ४ ॥ ३ ॥ इ व सि

[illegible][illegible]

नसमके

यतिनालमवमानगिनासयु. वयोनाममयुर्जनन ४॥ २२॥ मायमकनुधार्गमः निधवतसयुः अताक ॥ इतानिनामिरुसर्वकाः २४ खायहनननसाः ॥ २३॥
गतिमन्त्रिस्थामानाः नास्तिगङ्गासमागति ॥ मरुद्दि ४ नसुरेयकोनिरुमानवान् ॥ २४॥ यतमाननवकाधाय. गङ्गाद्वनिसविता ॥ गकाउकीमृदायका ४ सरुदेवे ४
सवासवे ४ ॥ २५॥ ययानिनिचमात्माना. गंगदवीनिसविता ॥ यथयडाविता ॥ अनुदेवादानाभवास्तमा ॥ २६॥ तथेवदहिनीगंगः सर्वकामरुल्लयदा ॥ जाद्रवाति
नसंदताः मर्दमूर्द्धिविरुक्तिव ४ ॥ २७॥ विरुक्तिवयंशार्कस्य. तमानाभयनिर्मलिः ॥ सकायवानसकयवाः वंभनद्वननन ४ ॥ २८॥ गंगानुनवकीधाना. दद्यावात्वा
गंगैव ॥ सद्याजलावगहन. वावयनीननो ३३ नान् ॥ २९॥ दर्शनिस्यगनाद्याना कथगंगतिकीर्तनात् ॥ यनायव्ययनूवान् गतभयसरुद्र ४ ॥ ३०॥ गंगभ
नखतीनाथ. सरुद्रकृपावगाहिता ॥ ३१॥ सरुद्रकृपावगाहिता. वीर्यश्रुतभववा ॥ ३१॥ सगंगसवरयत्रियः सर्वयायसमाहिता ॥ श्रुताथकीर्तनाभवा. दद्यावात्वावगाहिता ॥

य

॥ ३२॥ गंगतावचननृत्त. मूर्तोर्वेभेविभयत ॥ जात्यलोनिवसुल्याक. मने ४ ययु रिभवच ॥ ३३॥ समथधिनवस्थकि. गंगच्युजलीगिवाः ॥ वि
कालदगिर्तित्रियः सवितामयीसरुमे ४ ॥ ३४॥ दवे ४ सन्देष्टकागङ्गाः नायसवतवृद्धिमान् ॥ वानयहे गृहेहेष्ट. यतिरिवक्तेवावहि ४ ॥ ३५॥ विद्वद्दि ४ स
वितीगङ्गाः यमाका नामनाप्रधत् ॥ मनावाकमजैयहे ४ वायेर्वद्विभिन्नयि ॥ ३६॥ वीद्वगंगतवलयुत ४ यनूवानासंगय ॥ उकासद्विष्ट ४ वालो ४ य
गत ४ प्रद्वयावितः ॥ विकथननसागङ्गाः साविगक्त्यनाजतिः ॥ यावदहिमनूयस्य. गंगतायवृत्तिरुति ॥ ३७॥ तावद्वयसरुद्रानि. स्वर्जलाकमहीयत ॥
वृष्टवचसिकामालि. कृत्वायावनिमानवा ॥ ३८॥ यष्टाङ्गनिधवक. तयिचानियनाङ्गति ॥ गङ्गाजलासिरिडोतः ॥ लघ्वास्याहिसनीविभवा ४ ॥ ३९॥ कम्पनखा
ययनूव ४ सद्यप्रवयनकिहि ॥ गगनात्समहायुः यतकीयान्मरुष्टव ४ ॥ ४०॥ दभानगिनयादवीः तीगङ्गाकानवृजयः ॥ विबुलाकवृगङ्गाया ४ यन्मवा

वृथितं स ४॥ ४२॥ यादूनामगनश्चोता० निरुदवीधुतादिव० ॥ कथिलनमयदसुनं द्वायं यावत्सुलवतवे ॥ ४३॥ अन्ध्राजीवाज्जायं गा. यतितामगि
 ल्मन्त्रजा ॥ सीमसीरयवृषा. दवेगद्विमुल्यता० ॥ ४४॥ अन्ध्राज्जातगानथ ४॥ वृषजानुयदार्थं हि. मन्त्राष्टमदिहानयन॥
 ना ४५॥ कस्ताननामयनं. सिद्धिकाभासहनदी ॥ दियीदथावृहतीविश्वव्या० गिवा मिमां सुनसां सुखसादा० ॥ ४६॥ वितावनीसर्ववृषयतिष्ठा० गङ्गावना
 यतिविष्मगतास्तु ॥ सविद्युतां विष्णुवदानुनामा० ॥ सवृक्षतामामृताकिमागता० ॥ ४७॥ सवृक्षताजाङ्गवीथययना. कवक ४ सदनकलं यजानि ॥ सवृक्ष
 विद्यावृषाकि सवृ० निरुत ४ सु वि ४ ॥ ४८॥ गङ्गा मङ्गतिगंगति. सगङ्गल्यनमागति० ॥ विष्णुनरिचमवृषकमलमवृषनोले सुमल मवृषकानि यदुल्ल
 मयिखलुततावृषलाकात्यसूता ॥ वृषकानुदसूद्धिं निरुतिगंगिल्लामगतासीतिगंग. कस्ताननाहिवदममथनरुनवृष सवृक्षवृता० ॥ ४९॥ सुमनामकदा

॥ ४९॥

२२

आद्यः गङ्गाया ४ कार्तिनामया ॥ समस्ता निरुकावकुः ॥ कावर्षजनेनयि ॥ ५०॥ यथासुवस्थानतानि. मन्त्राष्टकनवीयथा ॥ सीर्याडुनरुगर्कन. तानावत्सुलव
 गुप्त ॥ ५१॥ सीर्याडुवाच ॥ पूति यनममतिगुप्तननकान् सुनसनिनक्षिद ॥ दिगानुनयान् ॥ वृषविष्मविष्मयनथयतान् गगनगलं वृषविषसगदिज ४ ॥ ५२॥
 गिल्लोद्वृषिस्तुवादे. वर्वसीवाभितस्तदा ॥ गंगामयास्य विमिव सिद्धिं वायसूदल्लता० ॥ ५३॥ तस्मात्त्वमयिनाजद. यद्वयायनयायत ४ ॥ गंगामवनिषवन. तत ४
 सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ ५४॥ पूतिहासमिमं यथा० गंगामरुह्यमूकम० ॥ य ४ य ० ॥ पूतिहासि. सगङ्गल्यनमागति० ॥ ५५॥ पूतिहाससमृद्धयगंगामाहल्यवधे
 मावृष ४ ॥ उन्मज्जवाच ॥ वितामरुह्यमयद्व अस्मिनाजस्य भामत ४ ॥ यदाष्टयमवृषिचिह्नमवृषिहिनयावन ४ ॥ १॥ वेगम्यावनडवाच ॥ ५६॥ गंगमहा
 वृष. यदाष्टयमवृषवृष ॥ तयितवृद्धिजा ॥ यव. दीनान्धवनवृष ॥ २॥ वृषमानमरुदान. दिद्वसवृषिमानवे ॥ यतसूयवृषवृष अस्मिनाजस्यमूहनी ॥ ३॥ वि

लेनि ४ सुखनकुल ४ काकेनाईतनुमलान् ॥ रुक्मावाचमवाचेनाः मानुषीपुमहाध्वन ४ ॥ ४ ॥ नकुलडवाच ॥ गकुवकुनवानाचः चक्रुस्त्यनैकवाचना ॥ उक्तावै
 वरुद्विजाग्रस्य कनूक्षरनिवासिन ॥ ५ ॥ तस्यनद्वचनंश्रुत्वा विस्मिताकृद्विजानव ४ ॥ समुपस्थादृढीता ४ सर्वतमयवृत्तेषु रुना ॥ ६ ॥ द्विजाह्व ॥ कश्चमयदुता
 काल कुरुग्यलागतानवान् ॥ किमथमिमांसायह मिमांसा विगर्हसि ॥ ७ ॥ नकुलडवाच ॥ नेमानुतामयवाका नद्ववानवमत्यना ॥ यथेननुयनावृत्तः तस्यैव
 गृह्णतद्विजा ॥ ८ ॥ उक्त्वद्विज ४ कश्चि कनूक्षरवसत्यना ॥ मरुताककालपुत्रियः सताय ४ ससूतसूया ४ ॥ ९ ॥ तस्मिन्निवसतस्य इति तमवतलरुत ॥ कुरुवा
 रवद्यं सर्वलोक ४ इमादित ४ ॥ १० ॥ सतदाश्रित्यमानयुः सकृद्वामलातवा ॥ कालकालस्यसंयथा तासनंयायकिधेन ॥ ११ ॥ कदाचिदथकुरु वयवयसूमुयाजय
 ॥ कृत्वागुरुं विविधवचुहविजलदा ॥ १२ ॥ तत ४ इहामदलानः तमागवचुद्विता ॥ तन्मागुरुसावनाः मतिथि ४ कश्चिदागमत् ॥ १३ ॥ गीवृजद्विवा विविधव

२२

कुरुवृथवसूना

विव ४ यातमानव ४ ॥ यावाचममूलवाकः मन ४ वृद्धादकावकः ॥ १४ ॥ अथास्मन्गृहीतास्मि यत्तच्चिकैकवगावत ॥ संप्रकातिथिवलायाः यस्मात्किंवावताचद ४ ॥
 ॥ १५ ॥ स्वागतकद्विजाग्रस्य कुरु ४ सुखागतीवने ॥ सेनाथविचितांविष्यः उटजमयविष्मता ॥ १६ ॥ तगृहीतद्विगंत्तमवत्या यममार्गप्रमाउला ॥ स्वगुरुद्विवविष्महावि
 प्रमक्तिवाटम् ॥ १७ ॥ अलातावसतागमक निष्प्रायगुरुमभिन ४ ॥ यमामगृह्यादिवसा वज्रन्यतिथिवृजन ॥ १८ ॥ तस्मिन्निवसिद्वर्क वाकुरुवीचस्तनवत् ॥ यतान्ययिसनी
 रगुरुनाद्विष्टककदाचन ॥ २० ॥ दयमाहस्यगयनः क्लिप्तप्रकस्यवासनः ॥ तस्मिन्निवस्यवानीचः इतिगस्यवताजनः ॥ २१ ॥ वद्वद्विद्यात्मनादद्या द्वाचदद्यात्सुतायिनः ॥ अ
 न्यकानुवृजनः कृष्याल्ल्याचनचार्चनंवनः ॥ २२ ॥ नकुलडवाच ॥ एवमुक्त्वा स अस्मात्मा तमस्यचवथाविमि ॥ स्वगार्ग्यददोदृष्टो नचलक्षननच ॥ २३ ॥ ततास्यसावद्वि
 दासा दृष्टास्यसावद्विनी ॥ स्वगद्विहतावयकी तत्तन्निमिदमववीत् ॥ २४ ॥ वासश्चवाच ॥ किंविष्यसि अस्मिन् विद्यमानवृणकुम् ॥ तद्व्याकृमातिथनस्य मताम

विषदायताः ॥ २७ ॥ वाक्कृतं वाक् ॥ अथावाठयनीयताः ॥ मृगदीनाधेः ॥ ग्राह्यता ॥ विद्यालक्षणध्यायः ॥ तन्नेववकुमरुसि ॥ २८ ॥ अमर्कामार्ककायानि ॥ पुष्पाकल
सकृति ॥ दामर्क्यात ॥ स्वर्गस्थ ॥ विहगमात्मनस्तथा ॥ २९ ॥ आनूकीयनध्यायः ॥ नवभातीरुवायन ॥ ३० ॥ अथ ॥ मरुदाय ॥ ध्यानि ॥ नवकीयसगच्छति ॥ ३१ ॥ वाक्कृतं वाक् ॥
यतिभवयथावर्मा ॥ यतिभवयनीयति ॥ ३२ ॥ यतिभवयनीयतः ॥ यनमात्मवधायिना ॥ ३३ ॥ अमर्कस्थकासस्थ ॥ यस्यस्वर्गतिभवत ॥ यतोयसन्नक्षीसर्व ॥ भगव्याव्यास
मय ॥ ३४ ॥ कर्मममनसावाचा ॥ साक्षीयनिमनूयता ॥ ३५ ॥ वरुहो वमरुहाराग ॥ साधवेनयिद्वयन ॥ ३६ ॥ नमसात्वयुक्त ॥ उक्तेवृद्धकदाचन ॥ वनमनद्विदिदिता ॥ ३७
मर्हणयदात्वमरुसि ॥ ३८ ॥ नकुलउवाच ॥ एवमुक्त्वा गृहीत्वानां ॥ शकृत्स्थानिधयददो ॥ तद्विद्यानिधिसासु ॥ नेवहकारवहदा ॥ ३९ ॥ तन ॥ यथाविनीतात्माधि
तर्नवाह ॥ अमर्कवित् ॥ तद्विद्याविद्यावेतात ॥ मरुदायमिधयदीयता ॥ ४० ॥ निहंरुलीजाविनीतस्य ॥ वाक्काचस्यास्यमिध ॥ पुष्पादिवगृहीता ॥ निजाग ॥ यतिगच्छति ॥ ४१

२८

कृद्वर्मायुच्यत्वा ॥ तद्विद्यालक्षणविमलून ॥ ४२ ॥ ददातिध्यानिधिया ॥ सयानियनमाज्जति ॥ ४३ ॥ विनाउवाच ॥ अथियसुसनायुक्तं ॥ ४४ ॥ वालगवसनाम ॥
वालानीद्विधिति ॥ तस्मात्तुद्वययुक्त ॥ ४५ ॥ यथागलाकाजयति ॥ धृतिवयायनातनी ॥ तस्माज्जिगायतालाकाः ॥ नक्षत्रं सर्व ॥ अमया ॥ ४६ ॥ तथामममरु
क ॥ दूताविमिवदायय ॥ सकृतिर्ह्यमयुक्त ॥ नार्हमत्यावित्तयन ॥ ४७ ॥ यथाय ॥ यथायकावित्वा ॥ तद्विद्यानृद्धिजगजन ॥ ४८ ॥ तद्विद्या ॥ यतिद्वके मरुधिय
यहवमिधि ॥ ४९ ॥ यथावाच ॥ यिगायुक्त ॥ यिगादव ॥ यिगावर्मा ॥ यनूतन ॥ ५० ॥ नृम ॥ उक्तेयुधितवि ॥ उक्तास्य ॥ सर्वदिवता ॥ ५१ ॥ सनीर्लस्यदादना ॥ वि
द्यालाकायसायता ॥ यस्यायसादाय्यायके ॥ काय ॥ ययनमस्त ॥ ५२ ॥ यथैवयसिद्विद्यानि ॥ यिगायुगमिनिधृति ॥ इहर्नयितर्नयुक्त ॥ तस्मात्तुद्वययुक्त ॥
५३ ॥ नकुलउवाच ॥ ५४ ॥ यथायुक्त ॥ गृहीत्वानां ॥ शकृत्स्थानिधयददो ॥ ५५ ॥ तन ॥ यिगानूयासाह ॥ स्वसूतं विनय

[illegible][illegible]

मानमानुष, सकृद्विवाहवचनो ॥ गणहन्तव्यवान्, विलान्ति ॥ मृत्युसत्त्वं ॥ ५७ ॥ दिव्ययुष्मद्वंदोसमाकर्तुः ॥ गङ्गाधराचरितं ॥ अथ अस्मद्विषादात्, मृनिस्तस्य
 वतजसा ॥ ५८ ॥ दिव्ययुष्मावमद्विष्ट, हेमवाग्धमद्विष्ट ॥ द्वितीयं कथयामि ॥ हेमस्याद्विष्टिचिन्तयन् ॥ ५९ ॥ तथावनानि गार्थानि, यही अद्यान्मसदा ॥ गता
 यरुमिमं प्रत्वा, अस्मद्विष्टस्य आमत ॥ ६० ॥ आसदासमन्त्राका, नचकाचनतीगत ॥ अतः ॥ समद्विष्टवता, वाक्यमूक ॥ मिदमया ॥ ६१ ॥ गङ्गाधराचरितं ॥ इत्याद्य
 ह्येति द्विजा ॥ वेदमद्यायनडवाच ॥ ६२ ॥ अथर्वकथयित्वा चैव, द्विजानां चैव कलकदा ॥ ६३ ॥ यथोच्यते गतं न जा, क्वविद्यागृहं यथो ॥ एतत्सर्वमाख्यातं ॥ यस्मात्तद्वि
 द्युत्सि ॥ ६४ ॥ अथमममलाचरु, यदायमद्विष्ट ॥ तस्मान्न विस्मयकार्यं ॥ त्वयाचरुयथायिव ॥ ६५ ॥ विनेवचरुमूनिनय ॥ अद्यात्ति विद्विगता ॥ अद्यात्
 ॥ सर्वज्ञानं, सको ॥ सत्यमार्जवः ॥ ६६ ॥ सर्वद्विष्टय ॥ दानि, क्वयं अस्मात् ॥ ६७ ॥ तिलाससमस्तं गङ्गाधराचरितं ॥ यमिद्विष्टवचन ॥

५१

५२

२३

किं सु

कनसत्त्वं रूक्म, अस्ममाप्रित्य निश्चित, एतन्मनसतत्त्वात्, यथावकुमरुसि ॥ १ ॥ हाव्यडवाच ॥ अथैवादाहवन्तीम, मितिहासं वृत्तान्तः ॥ य अमृत्युगुरु
 न, अस्ममाप्रित्य निश्चित ॥ २ ॥ ॐ द्वाकृत् ॥ ३ ॥ शिमान् न जासीदाजसत्त्वं ॥ इक्ष्वाभिनंतिव्यात ॥ सवसंमुदितागुणे ॥ ३ ॥ तैतममिदादवनदा, वकमवदवचनं
 सतस्यान्यादयामास, कन्यामाद्यवतीकदा ॥ ४ ॥ नाम शिष्टं न यामास, सादादहुतदर्शन ॥ आदावसत्त्वं यत्, वक्ष्यामि साक्षात् ॥ ५ ॥ तस्यामृत्याद्ययामास, नाम्ना
 एतस्य दृष्टि ॥ वदान्य ॥ सत्यवाग्दत्तं, का अस्माद्विष्टवचनं ॥ ६ ॥ अथ अद्यान्मनसा, नृगस्यासात्थिताहम ॥ सुदर्शिताय वंशे सेदां नाम्नावाद्यवतीगुता ॥ ७ ॥
 सतयासह अस्मात्मा, क्वकृत्तवसत्यं ॥ मृत्युगुरुकायस्थि, यतिहमकवाहम ॥ ८ ॥ गता अद्यान्मवित्याह, गीतायः अस्मात् ॥ अतिथं ॥ यतिकलकन
 कंदौककवीकदाचन ॥ ९ ॥ अतिथिचरितं ॥ गुरुन्यतिनिवर्तन ॥ सतयाद्विष्टवचनं, यस्यामादायगुणि ॥ १० ॥ सत्यं ज्ञेयं तथा आतः दहमिह प्रतीतय ॥ तस्य

सर्वमिदं यथः अतिथिदानयुक्तं ॥ दूनादतिथिप्राप्तस्य गृहमायानि निर्वृता ॥ ११ ॥ सगृहसु पूजिते वाक ॥ अथान्यगृहनिर्वाहः ॥ नायनाकृतयुक्तानां नना ॥
 मिहताविनी ॥ १२ ॥ नान्येतान्ययययके, प्रज्ञातयमर्थिनः ॥ उक्तेः ॥ तिथौ गृहसु, उक्ते ॥ १३ ॥ विमृश ॥ विमृश ॥ सर्वे नवचननिर्माणाय ॥ तस्मात्का
 यचितयादि, निवृत्तभवत्तयातिथि ॥ १४ ॥ अथात्मनयदानेन, नायकाया ॥ विचानमा ॥ निष्काकमधिकमौलि, तथासीनिदिनगृह ॥ १५ ॥ नातिथिस्त्वमकय ॥ यमात्मयद्य
 हत्वया ॥ एतावानेव नाना ॥ अमोथाकामनी विहि ॥ १६ ॥ मनावाककर्महि निर्वाहः ॥ कार्यरुद्धिर्न विथ ॥ कर्मन्मनसावादा, वाक्सीयतिमनूयता ॥ १७ ॥ यात्तुलाकमाध ॥ २०
 नि, काकिममहर्गोचवि ॥ तमववीदाद्यवती, तल्लिनि विनयाविन ॥ १८ ॥ नमत्वद्वयनाकि कि दकल्लयमहावत ॥ अलातावसताग्यारु ॥ यस्मात्सर्वतयावन ॥ १९ ॥ अस्मिन्व
 दिग्यवः ॥ इर्कयै इष्टतामहि ॥ तनमादसितकभि, यालनाद्ययति ॥ सुत ॥ २० ॥ यातिप्रदानात्सुखद ॥ प्राज्ञादौ नोचदं अमिदं ॥ यज्ञादानाद्यममिदं ॥ कामार्थी ॥ संवद

युगा न ॥ कीर्तीन्नाकाशसाधन ॥ २१ ॥ अस्य प्रसादान्वायक, कात्यादवस्तुना भिक् ॥ तीव्रदवाच ॥ अथमत्तु डिगार्थक, मातिथ्यनसूदन ॥ २२ ॥ दृष्टगानूगताकृष्टा
 नवाद्यवगतत्यन ॥ तत ॥ कदाचिदिष्टार्थं गतगमिनाहत्मनि ॥ २३ ॥ अतिथिवाक्कल्मषत्वा, तामाहवनीसती ॥ वाक्कलमडवाच ॥ त्वदर्थत्वतिथि ॥ वाक् ॥ तत्कल्याणी
 तज्जस्मा ॥ २४ ॥ यमार्तयदिनमर्मा, गृहसु प्रमर्तमित ॥ अतिथिपूजितायदे, अयममनगुरु ॥ २५ ॥ ननकुपुणतनावि, उल्लमाइर्मदी विद ॥ तिक्कडवाच ॥ तत ॥ साच्च
 दयामास, तमयेवैद्विर्विने ॥ २६ ॥ तान्वादात्मप्रदानाच्च, सवववनमायित ॥ तस्यमत्तु निर्वद्व, सुत्वात्तु मत्तद्व ॥ २७ ॥ विठितामनसार्द्धं, नरुष्टीप्रविषयासाना अथमा
 न्यमयादाय, वावकस्यसूतसूदा ॥ २८ ॥ अथमद्वानमागत्य, तान्वादात्मप्रदानाच्च, सवववनमायित ॥ तस्यमत्तु निर्वद्व, सुत्वात्तु मत्तद्व ॥ २९ ॥ विठितामनसार्द्धं, नरुष्टीप्रविषयासाना अथमा
 क्षी ॥ उटजसूतनाविद्य, समुवाचानिथिदिमा ॥ ३० ॥ यष्टु नमथत्यया, यत्तुवाकमार्गचद्व ॥ अथमिन्नकनमत्तु, तत्तुवृदम्यमूदन ॥ ३१ ॥ दूनवृत्तम ॥ ३१

वमिथ्यामिति चिन्तयन् ॥ सूदृशनिष्ठु न कृत्वा कर्मसमनसा गिना ॥ ३२ ॥ लोकेषा ४ लोकोकायस्यैव, यदुल्लासावपीदिदं ॥ सूदृशनडवाच ॥ सूदृशने सु
वियर्मे, यानि सुवनमा मम ॥ ३३ ॥ गुरुहो ह्ययमा मर्म ४ सर्वथा तिथिबुजनः ॥ अतिथिबुजयद्यु, यद्वयावयवागृही ॥ ३४ ॥ सप्रत्यक्षि दिवंप्राक् ४ दृष्ट
नहिदलोत्पन्ने ॥ यत्मा हि समदानां यच्चान्यद्विद्यतवत् ॥ ३५ ॥ अतिथिस्थामयादय, मितिभवतमाहित ॥ यथाचनानुत्पावली, मयायासमूदाहृता ॥ ३६ ॥ दैर्घ्यं
नैर्घ्यं सूत्रं वा सत्यतानेन वसादेवा ४ बालबुद्धिबुद्धि ॥ तीव्रतावाच ॥ तनात्तत्समलानादा, दवानासाभ्यासश्चिति ॥ ३७ ॥ यथात ४ यथावत् ० च, तस्य मूर्द्धिमलानन ४
नाञ्ज् (आतजाद्वि निष्कृम्य, स ४ विष ४ साहयावकी ० ॥ ३८ ॥ अभर्हि द्विजब्रूयत, त्वं जिह्वा सु निहानत ४ ॥ दददानवगन्धर्व, यद्वनक्षोमलानग ॥ ३९ ॥ सर्वम
गकायजनुः ० स्वयंकामस्त्वयर्हित ४ ॥ आत्मन सहयायन, कष्ट ४ कामनिवृत्ति ॥ ४० ॥ आर्जुनर्कजयति, सुखं शानकममृत ॥ जितादिजयताकामः ० मृत्युलोका

[illegible]

मृदु कृष्णा तिथिर्द्वा ४

गच्छन्ति ननननना ४ ॥ **सुगन्धिका** ८ ॥ यद्य. नभर्त्तवकुमरुसि ॥ १ ॥ तीष्ठाडवाच ॥ वाक्कल्यवृत्तं मूल्य. अदिजालातमादिता ॥ विकसन्ति अकृष्ट
 कि. नवेननकगममिति ॥ २ ॥ वानिष्ठाया. नदिन्याया. अनना ४ निनगायदा ॥ यवकावसिताथच. नननानिनयगमा ४ ॥ ३ ॥ वाक्कल्यवृत्तिधृत्य. नययवकुकि
 यमन. ॥ **वक्त्रस्त्रानां** वरुकाभि. ननानिनयगममिति ॥ ४ ॥ यनूया ४ यिष्टु. नाष्टेव. मानिनातं तवादिन ४ ॥ अनिवद्धयलायाश्च. ननानिनयगममिति ४ ॥ ५ ॥ य
 वेयनखरुकाभि ४ यनखानाथै. धूचक ॥ यवप्रियासिस्तनकनै. ननानिनयगममिति ॥ ६ ॥ र्यकुमानीतदागना. वायीनाथै. यनकय ॥ विकृताभानसाताथै. नन
 निलयगममिति ॥ ७ ॥ ययभक्तिवयदावा. न्निष्ठुहृत्तातिथिस्तथा ॥ उद्धनयिहृदवशा. ननाननककगममिति ॥ ८ ॥ नास्ति कारिन्मस्यदि. कन्दया विषयास्ति
 का ॥ दम्भिकाश्च कृत्याश्च. नवेननकगममिति ॥ ९ ॥ वतानां दूषकावाजन्. यतानां दूषकास्तथा ॥ वदानां दूषकाश्चेव. ननानिनयगममिति ॥ १० ॥ वाक्कल्यवृत्तं मूल्य

२७

न्यानायुक्तानाकथा ॥ सधूनाथै. गुनूनाथै. दूषकानिलगममिति ४ ॥ ११ ॥ काष्ठेवृत्तिवृत्तिवृत्ति कलकेनयलेस्तथा ॥ अमान्मसूनवृत्ति. नवेननकागममिति
 सर्वद्वनयै. विष्णुका ४ सर्वद्वनयै. निर्दया ॥ सर्वद्वनयै. जिह्वास्त. ननानिनयगममिति ४ ॥ १२ ॥ दण्डकि. गुरुकद. वानिष्ठुदंतयनना ४ ॥ आग्राधुदथै. कृष्टकि. न
 वेननकगममिति ॥ १३ ॥ कणविकारिकाविद्या. नसविकारिकस्तथा ॥ विषविकारिकाश्चेव. ननाननकागममिति ४ ॥ १४ ॥ आग्रायासमनूवाक. इतलुहै. आश्रमका
 रिकै. गा. ॥ यतिश्रियासीवमन्यकै. नवेननकगममिति ४ ॥ १५ ॥ मद्यमानाननानिल. गातवाद्यननाश्च. ताभेस्तथा ॥ धूतसंगनताश्चेव. ननानिनयगममिति ४ ॥ १६ ॥ यय
 नीनमलान्य. अदिनकिजलतथा ॥ उद्यानयथि. गमष्टय. नवेननयगममिति ४ ॥ १७ ॥ अथानोत्रविद्यानोत्र. यष्टुथानोत्रनन ॥ समस्तजनिष्ठयष्टुका. नवेननय
 गममिति ४ ॥ १८ ॥ अहिगच्छन्ति नाना ४ ननानानीनजस्तथा ॥ यवस्त्रयु. दिवाथैव. नवेननयगममिति ४ ॥ १९ ॥ क्रीडनामूयजावकि. अनना ४ क्रीडिता. यिवा ॥ क्रियश्चे

वननक्षत्रि, तवे निनयगमिनि ४ ॥ २१ ॥ गच्छाम्यथवाक कनि ४ गच्छानां अनूयातथ ॥ विवितावस्थ यज्ञना ० तवे निनयगमिनि ४ ॥ २२ ॥ अथ नो विकलीदानं, हौ
लागाववाल्मभवत् ॥ नानूकं यन्निधमूढ, कवे निलयगमिनि ४ ॥ २३ ॥ नियमान् स्वयमादाय, यवश्च दडितदिच ४ ॥ विद्वावयनिगान्द्रय, कवे निलयगमिनि ४
॥ २४ ॥ वृत्त्येकथितामाज, न्यनना निनयगमा ४ स्वर्ग्यानि कर्मेयेश्च, कर्मणि ४ गृह्णता न्यवि ॥ २५ ॥ सत्यनतयसाक्षात्, दानना ० यवननच ॥ यवममिन्
वर्कक, तनना ४ स्वर्गगमिनि ४ ॥ २६ ॥ यवक्षामजयज्ञान, दवतावनिगत्यना ॥ अद्वयनामहात्मान, कनना स्वर्गगमिनि ४ ॥ २७ ॥ शुतयश्च शुचोदद ० वासु
दवयनायमा ४ ॥ यथका विष्णुगमयश्च, तनना स्वर्गगमिनि ४ ॥ २८ ॥ मातायिना ० शुशूया ० यकृद्वनिसदादृता ॥ वर्जयनि दिवा स्वप्न ० तनना स्वर्गगमिनि ४ ॥ २९ ॥
सर्वहिन्मा निवृत्तचि, नित्यन्यद्वसदास्थम ॥ सर्वस्याग्रयदृताश्च, तनना ४ स्वर्गगमिनि ४ ॥ ३० ॥ शुशूयाति कर्मेया हि स्थ, शुतमादायता नत ॥ यवगिग्रनिभ्रहा, क

यानि वनमंगलि ॥ ३१ ॥ तदा त्वया कथा ॥ अथा दानि दादा कथा ॥ विमाचय निचउनुः कनना स्वर्गमिति ४ ॥ ३२ ॥ सहच वनि वदने कथे वच सहच ॥
दाता नम्य सहच ॥ वन्या ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ३३ ॥ अथा अथ वन कथो वन कथा च न तावत ॥ अन्तर्ना वा ससावेव वन्या ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ३४ ॥ अथ वन्या ४
डित्ति द्या ४ अना ४ कनना ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ३५ ॥ सुवर्गु सानदाता न गवान्मम्य तावत ४ ॥ अन्तर्ना वा ससावेव वन्या ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ३६ ॥ यवन्या ४ अथि दद्या न
यनि विमत्सना ४ ॥ वदन्ता अति नन्दनि कननेना ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ३७ ॥ निवर्गतानी अन्तर्ना ० वसाना चयनकय ॥ स्वयमूल्या ददाता न ४ वन्या ४ स्वर्गमिति ४
॥ ३८ ॥ द्विषता मयि दद्या न वदनि कदाचन ॥ कौतुकि कौतुकि दाने गुप्त ॥ अथ वन्या ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ३९ ॥ वन्या ४ अथ दद्या न वदनि कदाचन ४ ॥ अथ वन्या ४
विद्वत्तना ० कनना स्वर्गमिति ४ ॥ ४० ॥ वायी कथयत दानना ० वया दौ मन्दव वग्मम ॥ आनामाना वै कथनि ४ वन्या ४ स्वर्गमिति ४ ॥ ४१ ॥ असत्य सत्य सत्याच मज्जव

नाईवद्वयि ॥ निवृद्धयिहितकृष्ण, ततना ४ स्वर्गमिमिन ४ ॥ ४१ ॥ यस्मिन्कस्मिन्कलयाता, वदूयुग ४ गतायुव ४ ॥ सानुका ४ जितका ४, कनना स्वर्गमिमिन ४ ॥ ४२ ॥
 यने ४ यविगृहीतं यत्नमय्यठवीगत ४ ॥ मनसायितदित्युक्ति, ततना ४ स्वर्गमिमिन ४ ॥ ४३ ॥ यवदानायवानाधे, स्वयया स्वयमागत ४ ॥ नकामयनिसखका, कनना
 स्वर्गमिमिन ४ ॥ ४४ ॥ आकाशकं पुवकधे, उल्लय ४ यनना ॥ ग्नाकात्माना जितान्माना, कनना ४ स्वर्गमिमिन ४ ॥ ४५ ॥ विग्वग ४ रथनेव, यस्मिन्कानि रानेत ४ ॥
 वन्धूदंताश्रुताता ० स्वर्गयाकि समानव ४ ॥ ४६ ॥ तीर्थक्षिवाजभादाक ४ साधुसवानतातकथ ॥ सर्वद्विद्वसहाधाना ४ स्वर्गयाकिचमानवा ॥ ४७ ॥ कर्मतामनसावाचा नायता
 ययतेवन ४ ॥ सर्वथासुद्धतावाच ४ सयातिगिदिवन्न ४ ॥ ४८ ॥ एतत्कथिती सर्व ० मयातखनतानत ४ ॥ स्वर्गमिमिनवकी ० श्वेव, वायवकमसिचिथि ॥ ४९ ॥ नन ४ यववीव
 तिकूलमाचन ४ ययातिथाननवी सद ४ सह ० ॥ सदाकूलसूनंयजावित ० सुखावर्हमूकि नद्वत ४ कृता ॥ ५० ॥ ० तिलाससमस्तय स्वर्गमिमिनवकी कर्तननामाकृता ० ॥ ५१ ॥

३१

॥ यमिष्टिनडवाच ॥ यितामरुमाहायाहा, सर्वज्ञाय विग्वगद ४ ॥ गनव्यवायेल्यमानस्य, याअमर्तीद्वद्वम ॥ १ ॥ हाय्यडवाच ॥ मरुआममिलनाज, ग
 नसागतयालन ॥ अममनिश्रयतत्वहा एवमाइमनी विल ४ ॥ २ ॥ गिविवृहृतथोनाजननाजान ४ गवसायन ४ ॥ यलियाल्यमरुत्मन ४ सीसिद्धि यनमाइत ४
 ॥ ३ ॥ शुचनचकथातन, ग्नासुवनामागत ४ ॥ धूजितश्रयथान्याय ० स्वमान्यैश्रयितरित ४ ॥ ४ ॥ यमिष्टिनडवाच ॥ कथयूनाकथातन, ग्नासुवनामागत
 ॥ स्वमान्यै ४ धूजित ४ काम ० ययदि ४ ययुयाइति ॥ ५ ॥ हाय्यडवाच ॥ गृहूनाजं कथामता ० सर्वयाययययनी ॥ नयनमूचिकृदस्य, कथितातागविनया ॥ ६ ॥ क
 श्चित्कृदसमावाच ४ यद्वि ० कालनिर्मित ४ ॥ विचवानमरुनस्य, थाभसकनिलूवक ४ ॥ ७ ॥ काकाद्व ४ काकवर्गुस्यै ० बृह ४ काकश्चनस्य ॥ कृष्ण ० गायव
 म ० ॥ ८ ॥ नवतस्यसूहृत्कृष्णि, नचसीवन्निवा ० ४ ॥ सने ४ सर्वे ४ यविलक, तनद्यानकर्मता ॥ ९ ॥ नन ४ यावायमावाच ४ कृष्णवाइव

३

[illegible]

ना ॥ २० ॥ नेवनिर्मलं कलं वापि, शयिन्दनं तविरुंगला ॥ वृन्तिना हिंजलं लोचनं, तस्य मागर्भितं स्यवे ॥ २१ ॥ यद्विष्णुवातवर्धनं, रुतालीनास्रज्जता ॥ मृगसिंहावनारु
 म्भ, कानाद्यासृज्यस्रजः ॥ २२ ॥ मरुतावातवर्धनं, प्राप्तिनास्रवनोकस्र ॥ गीतार्कं गृह्णन् आर्कं गृह्णन्, काशीद्वाराथलूचक ॥ २३ ॥ वात्सलीवर्धनं भासो, जगत्सार्कं वृत्तकृत ॥
 सायस्यत्यतितांद्रुमो, कथागीतातवद्वला ॥ २४ ॥ प्रवमार्कं विद्यायात्मा, सताचउरलकाद्वियत् ॥ स्वर्चद्व ४ खातिरुगावि, इ ४ खं य ४ कूतयन ॥ २५ ॥ वायात्मायायकावित्रा लस
 इ ४ खादिमूचन ॥ सायस्यवनखलुबु भयनीलं वनस्यति ॥ २६ ॥ शयमानं स्वगनीके श्वायावास्रुलावित ॥ अगायकायकाय ससाधुनिवनिर्मित ॥ २७ ॥ अथानुवल्हल
 नेव, विद्यद्विमलतालकः ॥ मरुत्स्रं वृत्तं वाहून्, कूमुदकं निर्वीतादका ॥ २८ ॥ यत्नेमूर्कं नरादृष्टा लूचकं गीतविद्वला ॥ दिष्णवलाकयासास्र, वलाधीवेव, इनामवात् ॥
 ॥ २९ ॥ इनामवात्, मिमनिवास्य, तस्माद्विदिगिरा ॥ कृत्वावृद्धिदुभतस्मिः वसुतां वजनीकदा ॥ ३० ॥ साजलं गिलसाकृत्वा, वाकसाहवनस्यति ॥ गतास्मिन्नननक्याः थवस

निवनस्यो ॥ ३१ ॥ गन्तिलार्थं निव ४ कृत्वा, यदुनिस्त्री यद्वनल ॥ ३२ ॥ इव दवता ४ सर्वा, सायं सनेन गत ॥ ३३ ॥ इव नमरुता विष्ठा, तत ४ सूका यवदिता
 ॥ ३४ ॥ उवाच ॥ अथ वृक्षस्य सात्वायाः कथा तावत्तनय ४ ॥ ३५ ॥ दूर्ध्वमवागता तस्य, तायां रुरुनवागमत् ॥ प्राकाशे नजनी नृक्षा, सवक्षी ययति यत ॥ ३६ ॥ कथा
 गडवाच ॥ वातवर्धमहीनो सौ गीत नवागच्छ निमखिया ॥ किन्वातक्ता न लप्यत, साद्यायित निवर्तते ॥ ३७ ॥ याता नक्ता गुरुया वा, दिग्गङ्गा मध्वनस्वना ॥ यदि नागच्छत व
 काका, त्यजिष्य जीवितकृत ४ ॥ ३८ ॥ अविस्वस्ति रवकस्य ४ प्रियाया वनदवता ॥ तया विवर्दिन ऊत दूच्यम ॥ ३९ ॥ यवयोगवधूहये, नाकीर्तुमयि सर्व
 त ४ तायां हीनं गुरुकस्य, गुरुमवचनं गुरु ॥ ४० ॥ न गुरुं गुरु मित्यादू गृहीता गुरुमय ॥ गुरुगुरु हि माहीनं मन ॥ ४१ ॥ यदि सा न क
 नगी का, शुभं गी प्रियवादिनी ॥ नाद्या गच्छ निमकाका, नकार्यं जीवितनये ॥ ४२ ॥ ननु कस्य कस्य सा, नाम्ना तस्माद्ये नि सुवता ॥ किं नरवति सा सीता, जगत्तव सा चित्तम

३३

यि ॥ ४३ ॥ रुद्धे रवति सीदृक्षा, इव विगमयि इव विता ॥ प्राविन दानवदना, कृद्धे च प्रियवादिनी ॥ ४४ ॥ यतिवता यतिवता, यत् ४ प्रियदिनवता ॥ य
 स्याता दृष्टा ताया, अन्य ४ सयनूभायु वि ॥ ४५ ॥ वृक्षमूल्यविदयिता, यय निवृत्तिन गुरु ॥ प्रासादा यितया हीन, ४ काका वादति निवृत्ति ॥ ४६ ॥ लम्पको सार्थ
 काय्ये, तायां रुरुस ४ सहायिनी ॥ सा हि वार्कं दूभा रुरुं, जानात माक यस्तिनी ॥ ४७ ॥ अनूनका हितायेव, तदा सिद्धा यतिवता ॥ तथानागम रित्तस्य, नित्यं क
 दू गतस्य च ॥ ४८ ॥ विद ॥ गम ॥ वायि, सेवविष्मसकानिमी ॥ नास्ति तायां सभा वन्धू, नास्ति तायां सभा ॥ ४९ ॥ नास्ति तायां सभा लाकं, नमस्या रुरुस्य ते य
 ज ॥ ५० ॥ यस्यामा ना गुरुनास्ति, तायां प्रियवादिनी ॥ ५१ ॥ अनन्ध भन गच्छति, यथानन्धकथ गुरु ॥ सर्व विलायं यितीतस्य, शुक्ला तिकनू लवदू ४ ॥ ५२ ॥ गृही
 ता म्भक निधन, कथाती वाक्य मववात् ॥ कथोते उवाच ॥ अहं मा वसता ग्मह ॥ यस्या भदेवरी यति ॥ अस्मां सभा वायि, गुल्मानं वयं ता यत ॥ ५३ ॥ न सा स्त्री वति

ये

वा

दधुवा यस्यां नृत्तु नउ यति ॥ ३१ ॥ तन्निना नीमः पुष्पाद्यु ४ सर्वदेवता ॥ ३१ ॥ दावाग्निभव निर्देयः सव्यक्तवकालता ॥ तस्मीत्तवपुसाना नी. यस्यात्तन्निनु
यति ॥ ३२ ॥ गृह्यावहितकान् ४ यत्तवयाम्यहं हित ॥ प्राप्तेनयित्वयानित्यः सैनर्दसनमगत ४ ॥ ३३ ॥ वससाकृतिव ४ ॥ गत. तववासीसमाहत ॥ गार्हपत्ये
श्वकुशार्हस्यै श्व. पूजासस्तेसमावन ४ ॥ ३४ ॥ आयुमध्यातिनि ४ सायः सूर्यादिगृहमभिनाः ॥ कालेयकत्वकालेवा. सनानमृत्गृहवक्ष्य ३५ ॥ यसावमनिथीया
कः यथागच्छानयुजनैश्च ॥ सतस्यइष्टुर्नदत्वा. सव्यक्तमादायगच्छति ॥ ३६ ॥ सर्वस्मिनागृहकृत. सव्यक्तानिथिनागत ४ ॥ सहितस्ययथावम. डयवमस्यउद्यत
॥ ३७ ॥ मातामहेत्वंकयादिव. वद्वाननारुमित्युत ॥ स्वर्गनेभववक्ष्य ४ ॥ वाकने ४ कर्मवेच्यते ॥ ३८ ॥ दाविदभागइ ४ खानि. वचनैश्चयनानित्य ॥ आत्मावनाभवद
स्य. लुलान्यनानिकहित ४ ॥ ३९ ॥ नदातासूखइ ४ खानाः नचाहकृत्तिक श्वन ४ ॥ स्वर्गताव्यवपुश्चक. इ ४ खानित्यसूखानित्य ॥ ४० ॥ वनाददातिइ ४ खानि. वनद्वया

[illegible]

निसास्यता ॥ ३१ ॥ गद्गदित्वं सुविग्रहा, यच्चर्तवकुमरुसि ॥ गकविद्यामर्तुसर्व, माह्वं गमकमन ८ वृथा ॥ ३२ ॥ तावमाडवाच ॥ तस्यातद्वचनं धृत्वा, यत्प्रवाचविहंग
 ल ॥ वायुनखलुमीमातः ॥ दिसगानीविआयन ॥ ३३ ॥ प्रवमकुकन ८ यदी, यधुनिस्त्रीयद्विगल ॥ यथापुष्पा निचलन, बलनार्थदुर्तयथो ॥ ३४ ॥ सगत्वीगलकमा
 कः गृहीमिमूयागत ८ ॥ तत ८ शुक्लवर्णुषू, यावर्कं गम्यदीययत् ॥ ३५ ॥ सुदीदीकं चर्मरुत्वा, तमारुसुनसगत ८ ॥ यथाययस्वविग्रह ८ स्वगमोयकृतासच ८
 ॥ ३६ ॥ सतः अकुक (यत्प्रवा) याः अगमगमनायथ ॥ अग्निवत् लागत ८ दानः तत ८ दारु विहंगदा ॥ ३७ ॥ आह्वनं दहिनं गायः ॥ ममाह्वनादिवायन ॥ सतस्य
 वाकनिश्रुत्वा, वाकमारु विहंगम ८ ॥ ३८ ॥ कथानडवाच ॥ तमस्मि विरुथायन, तारययं तवद्वा ॥ इत्यन्ननहिजीर्वकिं मा, वर्यं निर्व्यवनवना ॥ ३९ ॥ संचयानास्मि
 वास्माकः मुनिनामिवकानन ॥ कथामिवत्यर्हतात, रंवाश्वादनवृवसः ॥ ४० ॥ नवास्मि विरुव ८ कश्चि, धनतनामध्वंद्वा ॥ निग्रह्यमाः अरि ८ स्वः यथि ८ द्यावजा

यतेना ॥ ४१ ॥ यद्यथिनिहवला दृक् ऊर्वकर्म ८ तत ८ ॥ भिन्मान्दृक् ८ कर्माणाः कयस्यार्थिथिजीविनः ॥ ४२ ॥ सारं विष्माया विहित ८ कवलतामादनं रुना ८ ॥ सहस्रं तत्रैव न कश्चि
 कृतमन्यदगमयन ॥ ४३ ॥ ममत्वकृतयूयस्य, दानस्यात्मा विद्वन्ते ॥ ४४ ॥ कामी सर्वजनाजीव ८ द्यादनं दीरुलयादय ८ ॥ ४५ ॥ नचाहं अमहीन ८ स्यात्कवलतामसूखानन ८
 यणयूयरुलकाया, मूलवल्कलदानुरि ८ ॥ ४६ ॥ अन्यामहीनूलायमाः विमूखायानिनाथिन ८ ॥ प्रकस्यायतिथिः यन्नः ॥ आवेदाई न गकवान् ॥ ४७ ॥ तस्यानकयनिहं ८ गृह
 किरुसत ८ रुलः ॥ तक असा अयात्मानः ८ गजालीयथिजीविनः ॥ ४८ ॥ यथानदृथावद्वा मि, नास्मि त्यथिनिमागतः ॥ तावमाडवाच ॥ सविनिधेवमात्मानः ८ ततर्कलूचर्कयून ८ ॥ ४९ ॥
 उवाचतय्यिथि ८ मूककः ८ प्रतियालय ॥ दवतानामृवीमध्वं, सखादयूयन ८ यून ८ ॥ ५० ॥ धूर्तं धूर्तमया अमि, महानथि तिद्वजनः ॥ सद्गनादासयावकः ८ द्रुह द्यामवर्धितः ८
 ॥ ५१ ॥ दृजयतिथिथि यधु, अयूय ८ ककुभवस ८ ॥ प्रवमद्वा स अमिमा, यरुक्षनाक नात्मना ॥ ५२ ॥ तमस्मि दि ८ यनिवम्य, यविद्वजस्ववमवत् ॥ तत ८ सलूचका दृक् द्यावयाह्व

इष्टस्वितः ॥ १२ ॥ कथातमः प्रोयति तः वाक्यमनदत्तायतः ॥ लब्धवाडवाचः ॥ किमीदृशं नृपं शनः मया द्रुतं नृपुद्विना ॥ १३ ॥ यावज्जीवमिमेवायः हृदयं नावस्यति ॥ १४ ॥
कनागितनः ॥ १५ ॥ ततस्यात्मा प्रवृत्तिर्यः ॥ १६ ॥ आत्मना हि कर्तव्यं वाचः मात्मने वाचयद्यतः ॥ वाचं चिकचते चक्षुः प्रवृत्तं कर्माणि च ॥ १७ ॥ वाचकर्मनानित्यः वाचयानि ब्रूयात्ततः ॥ १८ ॥
यदृशं नृपुद्विना ॥ १९ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २० ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २१ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २२ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २३ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २४ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २५ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २६ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २७ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २८ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ २९ ॥ यदृशं नृपुद्विना ॥ ३० ॥

कथा ॥ ६४ ॥ स जीवस्य मृतस्येव न क्वचित्स्वप्नमन ॥ तूतं समन्तस्य सत्यं कथाततमहात्मना ॥ ६५ ॥ यत्तु येनोत्तमं मान्यानि, यत्तु दण्ड ४ यत्तु नित ४ ॥ अ
 द्यत्तु तिदहं स्वः सर्वज्ञागविवर्जित ॥ ६६ ॥ जलं स्वल्पमिव गच्छति, जलमपि चित्तामयं स ४ ॥ ज्ञातवातातवसद ४ कथायमलिनस्तथा ॥ ६७ ॥ उदवासे च द्विविधे
 श्च निश्चयमस्मिन्मृतमः ॥ नाय ४ यत्तु नित्यायानि, न जले लातायि चान्तरमा ४ ॥ ६८ ॥ आत्मा यत्तु नाति यायानि, यदि यायानि वर्तते ॥ आत्मेव क्वात्मना वत् ॥ आत्मेव विद्युनात्मन ४ ॥
 ॥ ६९ ॥ वत्तु नात्मा यत्तु न क्वात्मा, यत्तु नात्मेवात्मना जित ॥ आत्मेव यदि नात्मानं महि न ह्यानि वालयत् ॥ ७० ॥ तस्माद्विदित ४ म ४ कान्या, य ४ यत्तु न वाचयिष्यति ॥ तावदवाच ॥ ७१ ॥
 तैश्च अस्मिन्प्रतावन, अस्मिन्कनसमागमात् ॥ ७२ ॥ अस्मिन् क्वात्मा यत्तु न ४ वायया विद्युभिश्चि न ४ ॥ ततायद्विजलाकाक्षे, कालदीर्घजलकथा ॥ ७३ ॥ वत्तु
 वृक्षकादान ४ कथागीर्षे ममाद्य ४ ॥ लूचकनगतामूका, दृष्ट्वा यो यतिर्नयति ॥ ७४ ॥ कथागीर्विलंघ्यायाका, क्वात्मा कर्षे न यत्तु मानवौसा ॥ कथायुवाच ॥ नाहं

विविधं कान्कमा कदाचिदपि सैर्यं स्मृतं ॥ ९४ ॥ सताग्रालतननानी, सुभाद्यं तादृशं यति ॥ युधिष्ठिरं वृत्ता (युष्म, नदीनां निम्नस्थितं ॥ ९५ ॥ कन्दनवृत्तं लोलातं
 नमिताहं त्वत्सह ॥ विना त्वयानजा वैकी विद्या, दिनभक्तमपि यथा ॥ ९६ ॥ दानाया ४ यतिहानाया ४ किन्नाथाजी विर्तरुलः ॥ मिर्तद्वानि हि विना, मिर्तमाता मिर्तसू
 त ॥ ९७ ॥ अमिताभं हितां दानानः तत्कर्मि कान्कमा यत् ॥ अयिका ठिअनाननी, वदूयुजा विखचन ॥ ९८ ॥ अथात्तवनि वन्धुना ० यतिहानात यत्तिनी ॥ गच्छेमा
 ल्लेख्यं अय्ये ४ ॥ विविधेष्टं वल्लेख्ये ॥ ९९ ॥ कासा हि प्रयने ज्येष्ठ, विभवकिं किं विद्यति ॥ वेअयं सट् ५४ ४ खः मन्त्रस्त्री नान्न विद्यते ॥ १०० ॥ अन्त्या सोथा विर्तीयाउ
 मियं भर्तुं नयत ॥ कृष्णनामग ४ ४ ख, मतकद्वतर्नमम ॥ १०१ ॥ तद्विद्यत्ययने चर्म, दानाहं नयिह विद्यति ॥ नातकी काद्यतवीता, नाचकाचमगतनय ॥ १०२ ॥ ना
 यत् ४ ४ सुखमभक्त, क्षिप्रावन्धुने नयि ॥ मातादर्थं कर्तुं कान ॥ कूलयुजातर्वं अय ॥ १०३ ॥ दान्यं ह्येव जनका, वेअयानप्रदायति ॥ दन्दिताका सनीवहा, याति

३०

मा विक्लसुक्ता ॥ १०४ ॥ यतित ४ कयत्सवायि, क्षीणा रत्नयनागति ॥ विजिल ४ काम ४ वृत्तेका, गुलेव विविर्तित ४ ॥ १०५ ॥ उयचर्य ४ क्षिप्रासाक्षा, सता
 तीदववत्यति ॥ नाक्षिरुहसमाभर्म, नाक्षिरुहसमसूत ॥ नाक्षिरुहसमागति, नाक्षिरुहसमाता ॥ १०६ ॥ तावदवाच ॥ पूर्वविलाक्यवद्वं अयनेह ५४ ४ वि
 ताना १०७ ॥ यतिवतासं प्रदीक ० प्रविधेन दृतासनः ॥ ततादियां अवमभन ४ दिव्याहननद्वित ० ॥ १०८ ॥ दिविदिव्यविमानकः ० तत्कर्मि सादनंदर्गद ॥ कयाता विच
 तं कानादृष्टा, कयाता दिव्ययुधिना ॥ १०९ ॥ रुखेणमरुतायूक ४ यनिर्देसं दमववात् ॥ कयात उवाच ॥ अहममानगच्छत्या, कर्तयाक्षिपुतं त्वया ॥ ११० ॥ कानमा
 गुह्य ४ ४ खन, सुखं चानेव वर्जित ४ ॥ विम्व ४ काद्या हं काठीच, यानिनामानि मानूय ॥ १११ ॥ तावत्कालं वसत्त्वर्गः ० ताकनिचानूगच्छति ॥ यालग्राही यथायान् ० वला
 इह नन विलात् ॥ ११२ ॥ अस्मी यतिमूढ, तवैनेव सह मादम ॥ इदं किं कं वासूतुम्वा, सर्वथायनतकथा ॥ ११३ ॥ तत्कर्मिर्नन च त्वया ० तायां अस्मिन् निष्ठिता ॥ ताव

उवाच ॥ एवमुक्त्वा स अस्मात्मा कथां सुरुतायया ॥ ११४ ॥ दिवि दिव्यं विमानं क्वा, मूमदं देववचि नः ॥ लूचकायितमानस्य, वेनाग्रयनमा स्मि न ॥ ११५ ॥ मर्द
 यत्नानमाश्रित्य, जगाम दिग्गमकं ॥ लूचकायितमानस्य, वेनाग्रयनमा स्मि न ॥ ११६ ॥ अहं कालमसूयायै, मार्तमत्यनभवत् ॥ समद्व ॥ खसूखीयत्वा, स
 मलाक्षाण्यकांचन ॥ ११७ ॥ अरुच्यै सर्वदेवता, दत्वा वाक्त्रिकर्मणि ॥ ११८ ॥ एवमुक्त्वा सूर्यकल्प, निर्वह ॥ ११९ ॥ विषण्णतद्वर्तमानः, वदुयात्समाक
 लः ॥ सकलं कवित्तिनिरिग, लाहितादहनं कृ वि ॥ १२० ॥ विचचालवनगस्मी, जगत्प्रवर्तिना कृति ॥ अ (अतस्ते मर्तकृत्, वदुयात्समाक
 दादासु र्गमकाश्चिविचचालन् ॥ तद्वदुयात्समाकः, वाग्मिसमिहार्थः ॥ १२१ ॥ लूचकाश्चि मूर्खवाया, वदुयात्समाकः ॥ ततस्ते नाग्निना दद्युः ॥ ससद्युः ॥ क्षी
 नकल्पात् ॥ १२२ ॥ दिव्यं विमानमा स्मा, जगाम दिग्गमलयः ॥ एवमुक्त्वा कथां गच्छ, कथातीत्यतिवृत्ता ॥ १२३ ॥ लूचकश्च गतः स्वर्गः, अस्मिन् कृत्वा स दृक् ॥ १२४ ॥

३७

व्याख्या विमाना, लूचकमिव नृगच्छति ॥ १२५ ॥ साहसं सदिता, स्वर्गकथातीत्यतिवृत्ता ॥ एवमुक्त्वा कथां गच्छ, कथातीत्यतिवृत्ता ॥ १२६ ॥ प्रभिक्षितमर्द
 नाज, अस्मात्प्रवृत्ता ॥ कथितं कर्मदादा, सर्वथाय प्रवृत्तः ॥ १२७ ॥ गच्छात् स्वर्गमिवाजुह्व, अस्मिन् विमानमा स्मा ॥ सर्वज्ञा हिताय चि, कृत्वा कायमिह दि
 तः ॥ १२८ ॥ यः ॥ १२९ ॥ दृष्टं सूर्यानि ॥ यः ॥ १३० ॥ द्वा र्थानि मूलमः ॥ विमूकः ॥ सर्वथाय चि ॥ स्वर्गलोकां गच्छति ॥ १३१ ॥ कथां अस्मायिनिर्तना कृत्वा, निलिङ्गणा किं प्रयत्न
 सलूचकः ॥ ततः ॥ कथां ॥ प्रयत्नोत्तदादिवः ॥ सयाय रुच्यं वमदात्मसंगति ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ सूर्यासूर्यमूर्ध्वकथां गच्छात् नवमा आन ॥ प्रभिक्षितमर्द
 वृ, नेह कृत्वा कृतं ॥ १३४ ॥ इगत्स्थितिगच्छन, तन्म कृ हि विनामरु ॥ १ ॥ सा उवाच ॥ अग्रिमवृत्तं, अथ यथा कथं विजायते ॥ वरुणस्य च तत्समा, इगत्स्थितिगच्छन
 किं ॥ २ ॥ यनहिर्नृतिवृत्तानि, कर्मनामनसाग्निना ॥ अमृत्संज्ञतात्माना, इगत्स्थितिगच्छन ॥ ३ ॥ अमृत्संज्ञतात्माना, इगत्स्थितिगच्छन ॥ ४ ॥ निह्यस्वा अचलात् ॥

दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ४ ॥ अतमानमतीत्य नि. मानयनि वयवना ॥ अथकेनायसातय. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ५ ॥ माहवत्सुववायि. तथादहिवचय ॥ वनदानयवके
 न. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ६ ॥ अमार्थिजा विर्तेयया. सीनोतेथभैमेथून. ॥ यार्थभैजाजनेव. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ७ ॥ अविद्विकानकयकि नचहिन्यनि हि सिना ॥ सर्वदुर्ग
 हितादाका. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ८ ॥ अदयासाकनउस ॥ यग्नकन ॥ मसपुथ ॥ सखेकितामरुतागम. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ९ ॥ ककुयिवर्मानाश्र. अतजाचकि किभैत ॥
 सकाअतिवनाआना. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १० ॥ आरुवेववथयना. लुक्कामनतडीतय. ॥ अमर्माजयमिक्कि. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ ११ ॥ अवेतयसि तिक्कि कोसा
 नवक्कवाविना ॥ अतिदिवाजितात्मान. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १२ ॥ अमानकविद्वयकि. नश्चकिनकृतपुथ ॥ अयासात्मसमालाका. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १३ ॥ अयाया
 नितकूर्चकि. कर्ममामनसागिना ॥ अमर्माकमनसायय. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १४ ॥ अतिवृत्ति ॥ यनखेय ॥ कर्ममामनसागिना ॥ यनवृद्धानतयकि. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १५ ॥

३७

निवृत्तायउमद्यय. यमुमाश्रयववव ॥ निवृत्तायेवद. मूल्या. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १६ ॥ अथदकि रुसत्यानि. यासायागं. गययक्ति ॥ यमासद्वनद्वताता. दुर्गस्थितित
 नक्ति ॥ १७ ॥ इव्लार्थवर्लेयया. मथिदाताथमवव ॥ स्वरुक्थमभातश्च दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १८ ॥ यवे ॥ यविगृहीतेय. रुमसयठवीगत. ॥ काह्मणाभायहिन्यकि
 दुर्गस्थितितनक्ति ॥ १९ ॥ अनादनिअनीयव. जगत ॥ यतवायय. ॥ रुक्कानायायसन्दव. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ २० ॥ मंगलमंगलसेव. सर्वयाययसासन. ॥ रुक्काकि
 विवामदव. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ २१ ॥ इ ॥ राहोभिगतात्माना. अममिर्मजितनआ ॥ आअयकमदयाक. लाहवृद्धदणकठ. भाहगम्भीययाताल. सखमानविद्वित
 मऊकेतायययव. विद्व ॥ सीसालसागन ॥ २२ ॥ इगतिक्कनस्पकत. यय ॥ कि सदादता ॥ आवयकि वविद्वया. दुर्गस्थितितनक्ति ॥ २३ ॥ यनहसर्वसाख्याती. मयाग
 वततानन ॥ तथातनकि दुर्गनि. कर्महि ॥ ययमानवा ॥ २४ ॥ ००तिहाससमूचय. इगतिननकि. कितामदगमाव्यय ॥ यमिष्ठिनडवाच ॥ किमर्थक्षिपमानाश्र. या

द्रष्टा ४ सुनिमित्तं ४ वृत्ता ४ नाना ४ प्रतिगृह्णति, तन्मवृद्धि वितामह ॥ १ ॥ तावदवाच ॥ नाजान ४ वाचसानाजाः नाञ्जैः प्रथमं न सदा विता ॥ स्वधर्ममावतिष्ठति
 तन्मवृद्धि यत्न ४ ॥ २ ॥ अथैवाह दनं निम, मिनिहास्य नाना ॥ दवादर्हं प्रसम्बादः सुकर्मिना चैराजत ४ ॥ ३ ॥ काश्चिद्विनिर्दिष्टं, तन्मवृत्ताथमेतम ४ ॥ वि
 श्वमिनायमदग्नि ४ साक्षी चैवायन्यती ॥ ४ ॥ सर्व्वामथगवानु, चतुर्द्वयवनिता ॥ शूद्रयष्टुसखं चैव, तस्यात्कविद्वय ॥ ५ ॥ तथैव तयस्य नृ ४ वनाचलमही मिमाः
 समाभिना डिगायका, वृक्षलादी सनातन ४ ॥ ६ ॥ अथारुंद नावृद्धि ४ कदाचित्महानृच ॥ वृक्षयाः चैव चैव, सर्व्वलाकद्व आर्द्धित ४ ॥ ७ ॥ तन्मनिनत्तला कस्मिः नात्मानं तयनि
 वृव ४ ॥ मृतीकमालमादाय, वृक्षवाकाकदायचन ॥ ८ ॥ अथयर्थेठतस्मि, वृक्षमानाहितानृच ॥ वृक्षानाजावृद्धि ४ वाचार्द्धवचसुदा ॥ ९ ॥ दवादर्हिनुवाच ॥ प्रतिगृह्णति
 द्रष्टा नाः सुकृद्विनिन्दता ॥ तस्मान्न्यतिगृह्णत, वृद्धी च मृति सत्तमा ॥ १० ॥ वनानृचैव मावृद्धि यवस्यैव तान्यन्य कंचनं मंष्ट्र ॥ ११ ॥ पतंस्वर्द्धतत्तवाचददा मि ॥ मासात्तदी

४०

तत्तस्यैव वि ॥ ११ ॥ मवृद्धि ॥ वाज न्यतिगृह्णत, मवृद्धि विद्यायम ॥ तज्जानं नयिकस्मात् ॥ कूबुधस्य लारुतः ॥ १२ ॥ दण्डयनासमंचकी, दण्डयनी सभा
 वृज ४ ॥ दण्डयनासमावृष्ट, दण्डयनासमावृष्ट ४ ॥ १३ ॥ दण्डयनासहयानि, वावाहयनि सौनिक ॥ गनउल्लस्यतानाजा, वावाहस्य प्रतिगृह्ण ४ ॥ १४ ॥ यावाह्य प्रतिगृह्णी
 यातु वाक्कला लारुमादिन ४ ॥ तामिष्टादिबुस्यथ, ननकवृ विवचन ॥ १५ ॥ तद्वृक्षकृणलीगधु, सहदातनवार्थिव, अर्थिश्वादीयतामन, दिव्यत्वातवर्नय ॥ १६ ॥ अथ
 नाह ४ समादिष्टा, कृणुगत्वास्यमहि ४ ॥ अथोद्वनानिचकिलः रुमगहृनिद्वतल ॥ १७ ॥ तन्मन्यानि विचित्र कः कृष्टी कृणुताययि ॥ गुनूना निविदिताच, नयकाव
 विनवृत्ती ॥ १८ ॥ अथिनुवाच ॥ नास्महमूढविद्वाना, नास्महमद्वद्वृथ ॥ हेमानी मासिजानीम ४ ॥ प्रतिगृह्णत स्मजगृम ॥ १९ ॥ वृद्धकृतद्वनीयादकः अ
 तत्तकटकादयः ॥ तस्मान्नयकमवेतनं मुखमार्नय मिच्छता ॥ २० ॥ सतनगुतिर्गुल्लगम, सहयमचयस्मि ४ ॥ अथहिद्वनयमिष्टाही, वाविहीलतगतिः

निर्द्ध

॥ २१ ॥ चत्वारिंशद्विंशतिर्यवः दिनश्चयनवर्षिणः ॥ तालमकस्यतत्सर्वं मिमिक्षासूखीतवत् ॥ २२ ॥ वणिग्दवाच ॥ अमार्थिचैश्चायस्य दद्यान्निचयः
 स्यात् ॥ अमार्थिचयवद्विनिष्ठादयस्यैवचात् ॥ २३ ॥ त्र्यजतः सत्तवाद्यैर्विच्यतिनामसूयडवा ॥ नदिसर्पैश्चवाक्कश्चिद्दृग्भगतिनूयवद्व ॥ २४ ॥ यथायथा
 नष्टक्रांतिः प्राक्कालसन्ध्यातिग्रहः ॥ तथान्तास्यसकाशाद्वक्त्रभञ्जनिवर्द्धन ॥ २५ ॥ अकिञ्चनत्वं नाशयेत्तुलयासमभालय ॥ अकिञ्चनसमिक्तीनाकादयिअनाद
 यि ॥ २६ ॥ काष्ठावडवाच ॥ अनर्थवाक्कमस्यैव यदर्थनिचयमहात् ॥ अर्थेभ्यश्च विमूढादिभिराहृत्यैवस्यभविजः ॥ २७ ॥ अर्थस्यद्विभासाय तदायनवका
 यच ॥ तस्मादर्थमनश्चिः ॥ अर्थार्थद्वयनस्तुजत ॥ २८ ॥ यथायथायमार्थमिच्छेत्तदा तस्यनेवदृष्टान्ताः ॥ यदाहृत्यादिवैकस्य दूनादस्यभिनवनः ॥ २९ ॥ यथायथा
 सायनमार्गः दक्षिणः सद्यः कर्हिणः ॥ यथायथायमार्गः यनिष्ठागः ॥ सायनायमार्गः किलक्षणाः ॥ ३० ॥ तनदाजडवाच ॥ जीजैयनीजीयतः कश्चादकाजीय

४१

निजीयतः ॥ चद्रः ॥ अत्रवजीयतः तस्मात्कायनजीयतः ॥ ३१ ॥ सूयायूर्ध्वं यथावत् संचानयति सूचिका ॥ तद्वत्स्यानयूर्ध्वं चैदिह त्वयायुवावसायन ॥ ३२
 यथायथायमार्गः कालं वर्द्धमानं न वर्द्धन ॥ तथैव त्वयाविकृतं वर्द्धमानं न वर्द्धन ॥ ३३ ॥ अनकयानादयुवा त्वयादयुवसतावदा ॥ अमार्थवद्वलायव तस्मात्की
 यनिवर्द्धयत् ॥ ३४ ॥ गौतममडवाच ॥ संपुष्टः कान्तकोति ॥ हलमूलेषु वर्द्धितः ॥ सर्वस्तिद्विचलोल्लसत् ॥ कदाचिद्वग्नरुत ॥ ३५ ॥ सर्वगस्यदत्तं कस्य संपुष्टं यस्य
 मानस्यैव ॥ उद्यानं ह्युद्यादस्य तनूचमार्द्धनवद्व ॥ ३६ ॥ संपुष्टं तावामनपुष्टानां यत्सूखं ॥ कनकं कनकं न लूचानामिच्छतश्चभवताः ॥ ३७ ॥ असका
 ययर्द्धः ॥ स्वकायकर्ममसूखः ॥ सूखार्थं यनूयकस्य त्वयुष्टः सततं तवत् ॥ ३८ ॥ विष्णुमिगडवाच ॥ कामकामयमानस्य दौर्लभिकामः ससिद्धिः ॥ अर्थेनमय
 नः कामो यथाविच्छतिवानवत् ॥ ३९ ॥ नजायुवामः कामाना मयशाग्नमिच्छति ॥ हविषाकृत्स्नवत्संभव द्रव्यवतिवर्द्धन ॥ ४० ॥ कामानतिनूमाह तननः सुखम

स्व

अतः ॥ अनालयतनूकायाः ॥ वृजकिनिवकथातक ४ ॥ ४१ ॥ चतु ४ सागन्तवर्थाका, आनुक्यथिवीमिमाः ॥ दुल्याम्भवाकेशनाचम्भ, सकृताअतिवाथिवि ४ ॥ ४२ ॥ चमदग्निडवाच ॥ प्रतियग्रुस्यसंल्याग, दलुवावर्द्धितमरुमन् ॥ तलुवावाकृत्तस्यरु, अनलानादिनस्यति ॥ ४३ ॥ आर्थन्यायनृवादिव ४ ॥ अचितथाप्रदुष्यति ॥ न सयश्चतिमूढात्मा, ननकयतनाइयः ॥ ४४ ॥ मूढात्माननकयति, कालसूत्रमिवांगिना ॥ प्रतियग्रुसमअति, नवैप्रगृह्यप्रतियग्रुः ॥ ४५ ॥ प्रतियग्रुनविद्याना वक्रमज ४ प्रगम्यति ॥ प्रतियग्रुसमअतिः ॥ निवृत्तानांप्रतियग्रुत् ॥ ४६ ॥ चतुवददगंलाक ४ सप्रवाप्रतियग्रुताः ॥ अत्रिनृत्तुवाच ॥ विसृत्तुयथानित्यस कल ४ सैवमाविष्णत् ॥ ४७ ॥ अत्रिनृत्तुवाच ॥ तथैदरुगत ४ सदा ॥ आइदृश्याइमिति लिचनजीयतिजीयते ॥ ४८ ॥ आशौचानाकिवाभाग स्त्रीरुद्धीत्यजत ४ सूर्य ॥ तनवार्तिशूर्ततन, तनसर्वमनूहितः ॥ ४९ ॥ अनासां दृष्टत ४ दृष्टा, नेनास्यमवलं वितः ॥ चैजवाच ॥ उग्रदिनातयादस्मा दित्यतीममरुग्वना ४ ॥ ५० ॥ वलीयावा

[illegible]

खडवाच ॥ न्यायनवदान ॥ अथ गुरुकायु विद्या तिथि ॥ सत्याये वाच नवदु विष्णु के न्यं कभाय ॥ ११॥ अग्निवृत्त विष्णु. दद्यात्तवदु नित्य ॥ १२॥
सदनीयायु. विष्णु के न्यं कभाय ॥ १३॥ मय्ययु ॥ १४॥ मय्ययु ॥ १५॥ मय्ययु ॥ १६॥ मय्ययु ॥ १७॥ मय्ययु ॥ १८॥ मय्ययु ॥ १९॥ मय्ययु ॥ २०॥
डवाच ॥ मय्ययु ॥ २१॥ मय्ययु ॥ २२॥ मय्ययु ॥ २३॥ मय्ययु ॥ २४॥ मय्ययु ॥ २५॥ मय्ययु ॥ २६॥ मय्ययु ॥ २७॥ मय्ययु ॥ २८॥ मय्ययु ॥ २९॥ मय्ययु ॥ ३०॥
तिथि ॥ गुरुकायु ॥ ३१॥ गुरुकायु ॥ ३२॥ गुरुकायु ॥ ३३॥ गुरुकायु ॥ ३४॥ गुरुकायु ॥ ३५॥ गुरुकायु ॥ ३६॥ गुरुकायु ॥ ३७॥ गुरुकायु ॥ ३८॥ गुरुकायु ॥ ३९॥ गुरुकायु ॥ ४०॥
॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥

[illegible]

प्रथमः। लोह ४ यनमदाचल ४ ॥ विनष्टलोहाविषयनिर्वृत्त्यह ॥ प्रथमकचित्ता ४ यनिहीनमत्सना ॥ वृजकिविष्ठा ४ यनमयचयदः भतल्यदयत्यवदकिथागित ४ ॥ १ ॥
 ना १२ ॥ ०० ॥ तिहाससमृद्धयलाताव्यादादृष्टाव्याय ४ ॥ यमिष्ठिचउवाच ॥ समस्ततयसावाधि किन्नुष्टनमैस्तनः ॥ वृत्तभजनसरीतात यथविद्वदुमहसि ॥ १ ॥
 ॥ तीव्रउवाच ॥ विविधाविषय ४ प्रार्क ४ यमिष्ठिरुमहसि ४ ॥ स्वस्तीविज्ञानमाह ॥ समस्तवीयनायन ४ ॥ २ ॥ सम ४ यविष्ट ४ महुर्ल सम ४ यन्यमनूकमः ॥ स
 म ४ सूत्रमः ॥ सीथयः ॥ सम ४ यायहर्नमतः ॥ ३ ॥ सम ४ सर्वसुवर्तयु सर्वसायनमैस्तनः ॥ अनेवादाहवकीम मितिहासयनतनः ॥ ४ ॥ पुलाभनस्यसैवादेउ
 ॥ ५ ॥ लंघ्यमहात्मन ४ ॥ यनारिहागभायक जाउर लिनामतादिज ४ ॥ ७ ॥ तयस्तयमहाध्यानः वायुतद्व ४ समाहित ४ ॥ तस्यवसन्धनकानि कानूवतस्यतिष्ठत ४ ॥ ८ ॥
 ॥ गीष्ठातूवृत्तीविज्ञाय काष्टकृशायमैस्तनः ॥ कलिगसकनायत्य नार्दसिनसिचकु ॥ ११ ॥ ॥ लोकादवावावृत्ति समस्तद्वितवीष्टनो ॥ ततस्कोसुखविष्टनको तगाष्ट

४३

निविमूर्धु ॥ ६ ॥ अलुच्यवृत्तयुष्टयवृत्तायनकककका ४ ॥ यवर्धनसतरेव नचचालसज्जलि ४ ॥ ७ ॥ कदाचिज्ञातयदास्त समस्तव्यविर्हंगमा ४ ॥ अ
 यजन्मयदानजन्तन ४ सयचयोद्विज ४ ॥ १० ॥ साहस्रिष्टमदाविष्ट ४ यावाचनमसासम ४ ॥ लाककितयसाकस्थि कृत ४ स्ववाकमववात ॥ ११ ॥ वाचनस्यानिव
 सति पुलाभनामहामति ॥ सायवनाहर्नयवृत्तः यथार्त्तविसद्विज ४ ॥ १२ ॥ तद्वृत्तावर्तनतस्य पुलाभनदिद्वय ॥ अचिन्तोवकालत याकावाननसीयुवा ॥ १३ ॥
 ॥ तगायश्चपुलाभनः विज्ञातार्कनसावद्वृत्त ॥ पुलाभलैनायिर्नद्वृत्त यनियुक्ताववादिदः ॥ १४ ॥ पुलाभनउवाच ॥ अनाख्यामायिविदिता नमचात्वंद्विजसकम ४ ॥
 यथलागमनकार्यः तदव्यवगर्तमेवा ॥ १५ ॥ तयतस्तयस्तयः जातमूर्ध्विसककका ॥ ततस्वीविस्तयाविष्टः स्ववाक्कावाचमांयनि ॥ १६ ॥ तद्वृत्तामहतीवाचः सादि
 द्द्विबिलगत ४ ॥ तद्वदाष्टुद्विज ॥ १७ ॥ यिचकिंनवाहिनित ॥ १८ ॥ जाउर लिनूवाच ॥ विज्ञानिनाश्वसर्वसौने सर्वगव्यानित्यस ४ ॥ कथकनैष्टिकाभम विर्हदिन

कद्वदत्तस ॥ १७ ॥ उल्लाभालुवाच ॥ नमो विष्णुभक्तानि, सवितागुनूधानव ॥ पूर्वार्थासदयंविद्य, विदितानेष्टिकावतः ॥ कर्मममनसावाचा, अत्रित्यसवगननः ॥
 तद्व्यासातवन्नित्यः सातद्वैदेसंगयः ॥ २० ॥ आद्व ॥ वितातिसुखानि, दृष्टुंरवतिद्व ॥ विता ॥ सुखितानिसुखावाधि, सधर्मवचनेष्टिकाः ॥ २१ ॥ अद्वाहनेवद्वता
 नाः मल्लदाहालेवायूनः ॥ यावत्कि ॥ सयनाधर्मस्तनजावामिजांजल ॥ २२ ॥ यविष्टिनेकाष्टहलेमैयदंगननेकतः ॥ तथेवमदिनंविष्वाः कर्तुंवितातुनूयतः ॥
 ना २३ ॥ अत्रित्यस मयिदवताः वाक्कमनीगवाकथा ॥ कर्माभिनित्यशुश्रूषाः वाखलुनामयद्विकः ॥ २४ ॥ यद्वदगितनद्वतः यष्टकामितवाधिकः ॥ विज्ञातामिनसा
 यि, मद्यमान्यविवर्जितः ॥ २५ ॥ सर्वबीचः सुदन्नित्यः सर्वबाधहितेनतः ॥ कर्मममनसावाचा, सधर्मवचनेष्टिकाः ॥ २६ ॥ यस्माद्विजगलाकः सर्वतित्यसुखाद्विवः
 वाद्वतः कर्ममवाधि, सयायीगतिमायूचातु ॥ २७ ॥ नाहंयन्यां कर्माणि, कोमितिन्दा मिवादिजु ॥ नमास्मि सर्वद्वतानाः यष्टमजोऽलेवतः ॥ २८ ॥ यथार्थंयष्टमवमिनाः

४३

नदीयक
द्वमज्जन

श्रीवसूकज्जादयः ॥ देवताविहितद्वाना ॥ समास्तु विषयब्रूतः ॥ २९ ॥ यथावृद्धाशुलक्या निष्कृष्टा विषयंयुति ॥ तथेवकामसा (गदी, च, समाविषयि विगतसुहृदा ॥ ३० ॥
 उल्लाभियानियद्वस्य, उल्लाभालासादलातथा ॥ उल्लाभसर्वद्वतयू, समष्टिस्तु निजांजल ॥ ३१ ॥ सर्वद्वतात्मनूतयष्ट, सधर्मसर्वयष्टतः ॥ दवायिमा (अमूकनि) अंदस्य
 यद्विष्टिका ॥ ३२ ॥ यद्वानकनूभयायः सर्वद्वतयूवावकः ॥ कर्मममनसावाचा, यनैवद्वस्ययष्टततदा ॥ ३३ ॥ यकोनियष्टमीद्वि तावतावयिमसमो ॥ नागद्व
 यविहीनस्य, समस्यचयिचायिथ ॥ ३४ ॥ सर्वनिष्टः सनखत्यः सर्वयूधमिनाचया ॥ समादिजांजलितार्थः समवयनैतय ॥ ३५ ॥ समभवयनैकनः समाधोगः यनै
 तयः ॥ वद्वतानीष्टहस्तस्य, वानयष्टा यतीकथा ॥ ३६ ॥ सर्वतथसमनेव, यायूवनि यवाज्जनि ॥ दानमिष्टातसः ॥ लेचः ॥ ताथसिवाश्रुतेतथा ॥ ३७ ॥ अष्टाकमनसः ॥ यष्टः ॥
 सर्वमितदनर्थकः ॥ नागद्वयान्तः ॥ वाष्, लाहमाहमदादिहि ॥ ३८ ॥ सर्वयैर्विनिर्मुक्तः ॥ सः ॥ अकूतिचस्मृतः ॥ समा (अर्थ) सर्वग्नानि, विदितानिमहर्षिहि ॥ ३९ ॥

व

दा

तस्मात्सर्वं भद्रं कर्णा, यस्य नाना मनः सदा ॥ तद्वर्तते विनाशाय, तदस्माद्यन्तर्गतं ॥ ४० ॥ सूक्ष्ममिन्द्रियं, काकलायितमववत् ॥ विष्णु उवाच ॥ प्रवृत्तमिन्द्रियं
यं न, कथं चित्वा ज्ञातुं ॥ ४१ ॥ ततोऽस्य दर्शयामास, समायुक्तान् कुरुकान् ॥ उल्लासित उवाच ॥ प्रवृत्तमिन्द्रियं, काकलायितमववत् ॥ ४२ ॥ आहूय तं द्विजं
४३, त्वमपीदमस्मिन् ॥ यद्विनाशाय ॥ ततोऽर्जुन उवाच, समायुक्तान् कुरुकान् ॥ ४४ ॥ वार्यं वाचं श्रुत्वा, अस्मिन् वचनं किल ॥ सकुरुकाश्च ॥ त्वज्ज्योतिर्मयी
तात, विस्मयं च यद्विनाशाय ॥ ४५ ॥ सममनः समाभ्युत्थ, ततोऽस्य सितवदनः ॥ ४६ ॥ खड्गं चार्जुनः ॥ तयः ॥ दहनं विस्मयात् ॥ ४७ ॥ तयश्चिह्नं चित्तं च, न द्राष्टव्यं
सि यमं गतिं ॥ तस्मान्न कलत्रं चित्तं च ॥ तयः ॥ दहनं चित्तं च ॥ ४८ ॥ सममनः समाभ्युत्थ, अन्तर्गतं यथा ॥ चो न वा सा उवाच, विदुः शूरा मनुजवत् ॥ ४९ ॥ वदथा क्रियां
तव द्वा, न्येपीदं कनमानसः ॥ ५० ॥ द्विषतां चित्तं च ॥ अस्मिन् हि मयि, यत्तु तन्मया ॥ ततोऽस्य मनः ॥ ५१ ॥ समः सर्वं दृष्ट्वा न भूतलीं गीदमस्मिन् ॥ ५२ ॥ रुतं कनकं ददत्तं यद्यद्यवयवा

[illegible]

दः ॥ १ ॥ अथेवादातनकीम, मिगिरासयनातनः ॥ कुरुभलेनयत्नीत्या, रक्ताभायकनयना ॥ २ ॥ अथनावाय ॥ ४ ॥ कश्चिद्वनार्थुलातमाहित ॥ ५ ॥ दवतायूज
 यामास, नचवाकाभनकचित ॥ ६ ॥ ततश्चिकायनादवा, कानूसादवतातवे ॥ ७ ॥ अथमगाय्युसादत, मानुषेज्जोवत ॥ ८ ॥ साअयम्भु^{कु}भनः दवानुचनमनिक
 तदृष्टाचिकयामास, (प्र)थाचैभविभस्यति ॥ ९ ॥ सत्रिकद्वष्टदवानां नवाथेमानुषवत ॥ १० ॥ प्रथमदस्यनियतं, यद्वर्तनायुभवत् ॥ ११ ॥ यगकाठिसरुयानि, विब्रुमाना
 अयसद्व ॥ १२ ॥ यनमेलाकभलव वाकवांनितिगुपुय ॥ १३ ॥ तंविब्रुमल्यन, यसादचउमद्यत ॥ १४ ॥ समुदवाङ्मनातीर्त्वा, यनयानचकादतिः ॥ १५ ॥ तनारुमल्यकालन, कुरु^{काल}ल
 यथाविमि ॥ १६ ॥ आवाअविउमिक्कामि, तल्यसादयसर्वथ ॥ १७ ॥ तनागलेभ्यमालेभ्य अथेभ्यगुचदने ॥ १८ ॥ वलितिभ्ययललेभ्य, यजयामासतीद्विज ॥ १९ ॥ अथस्त्वल्यन
 कालन, उरुससोसकुरु ॥ २० ॥ तस्यायकालनिलता, वार्चणार्क ॥ २१ ॥ नूवाचस ॥ २२ ॥ वल्लध्वचसूनायच, पोभरद्ववतसथ ॥ निक्षिनिविहितासदि ॥ २३ ॥ कृतध्वनाक्षिनिक्षिति ॥ २४ ॥

आ ४६

कालेनैदर्शनस्य ॥ २५ ॥ सम्रायस्मतीतथा ॥ कृतयुस्यनकायानि, स्वयाकसदृणहिस ॥ २६ ॥ एवमूकापुदवानां समाजसूयगम्यस ॥ २७ ॥ नमोयथातमिनसाभया
 भवायतस्तदा ॥ २८ ॥ दतर्कदेववचनालातिरुडामलघूति ॥ २९ ॥ उवाचयतितीक्ष्णो, कुरुभनकिमिक्कसि ॥ ३० ॥ कुरुभनदवाच ॥ यदिप्रसादसनादवान, रक्ता ॥ ३१ ॥ का
 द्विजार्कसम ॥ ३२ ॥ तस्यानूयुरुमिक्कामि कृतीदेवनहेतय ॥ ३३ ॥ तद्वृत्तामानिरुदय, यनवचनमववात् ॥ ३४ ॥ देवानामात्मवचना कुरुभनसूयकिताः ॥ ३५ ॥ मनीरुदवाच ॥
 उकिश्चकिरुदके, कुरुभनसूरीरव ॥ ३६ ॥ यावच्चनंयार्थयन, तावकभेददाम्यरुः ॥ ३७ ॥ विचार्यकुरुभनसु, मानुषीभनमश्रवः ॥ ३८ ॥ तनासावार्थयामास अमविद्विसूनिभ्य
 लाः ॥ ३९ ॥ कुरुभनउवाच ॥ यदिप्रसन्नामदवा रक्तायभनकीद्वि^{ला} ॥ ४० ॥ महाकभननामिंवा, यथिवीनायभववा ॥ रक्तायनाहमिक्कामि, दृढमसुसभामिक ॥ ४१ ॥ २२ ॥ विद्यावृत्ती
 अतीशौर्यः कृत्तीनत्वमलागिता ॥ ४२ ॥ नार्कस्वर्गवभादधे सर्वभस्मदिवायत ॥ ४३ ॥ नार्थलातनचक्षुला नयायाननमत्सुनान् ॥ नकामान्नरुवादायि, अम्विवाह ॥ ४४ ॥ यनित्यउत् ॥ ४५ ॥

सुअमयनित्यं कृत्वा दत्तमिह कृति ॥ सहस्रनासासु सुकृत्वा योषु नागा डिष्टव्यति ॥ २३ ॥ दत्ततामूनथाताग. गच्छवृत्ति कृत्वा सुकृत्वा ॥ अमिवात्तु ज्ञानाह. तार्थवर्तन कामिर्द
 ॥ २४ ॥ अर्थहीना विअमिता स्वर्गगच्छति मानव ॥ अर्थवान्मनैवामिहीनस्य. तनवी प्रणिपद्यते ॥ २५ ॥ किंअननवियनस्य. यदने विवृत्तवृत्त ॥ वमअमननं चक्षु. मृतमव्य
 नृगच्छति ॥ २६ ॥ तस्माद्भवत्वो विथो. नित्यं अमयनाय ॥ २७ ॥ अमिहिद्वि सवात्राति. ममअनय हामत ॥ २८ ॥ मानिरुद्धवाच ॥ यदा अमिहलीनाई सुखानि विवि
 अनिव ॥ गच्छलाचवसाप्राप्त. कायक्रेण विवर्जित ॥ ३० ॥ तीष्णउवाच ॥ असुखस्याचमाना वि. कृत्वा अभा अर्नयति ॥ यार्थवअममिवासी. तनसुखासु दवना ॥ ३१ ॥ मतिमहदुवाच ॥ उद्यासादवना ॥ सर्वकस्यैव द्विजमान ॥ तविद्यति स अमिता. अमिहिद्वि अयास्यति ॥ तत ॥ कस्य अन ॥ योना. वलीलचासुद
 ल्लर ॥ चिकयामास तस्यैव. निर्वेदा वाचसात्मना ॥ ३३ ॥ चिकयीत्वा तमाह्वय. अनचिकाय निहृत ॥ चीनाश्वादाचमूकानि. वक्रवाग्ध्विजस्य ॥ ३४ ॥ दृष्टास्वतानि

४९

चीनानि. यान्त्रिकानि द्विजाकुम ॥ निर्वेदन्यनमीयना. यावाचदं वचसुदा ॥ ३५ ॥ वाक्महदुवाच ॥ अर्थन ॥ सुकर्तव्यति कश्चन्यावस्यतकृत ॥ गच्छामिवनमवाल. वन
 अमनिषविशुः ॥ ३६ ॥ अनादृत्यवथा अम. मर्थार्थक्रियातनन ॥ सजलादिवहृ. कृत्वा मृगहृ. कृत्वा आवति ॥ ३७ ॥ अतावीनतयद. अर्थातापनास्तीरुताविन ॥ यतद्विद
 कायिवृ. अक्रियाकदेवमाहिता ॥ ३८ ॥ य ॥ युनावनवा अम. मर्थसंखुह विन्दति ॥ यनासोनकर्तव्यवृ. कृतस्यार्थसंयदः ॥ ३९ ॥ निनाकृतस्य देवन. सर्ववार्थकर्म
 न ॥ पुन्यसगियलिक्लेश. क ॥ यय ॥ द्वेतातै अने ॥ ४० ॥ सा अवीयतदात्मानः मू. यनगयसाहसः ॥ यथानवय ॥ कृत्वा. यास्यामि कतिदर्थिताः ॥ ४१ ॥ यद्विष्टि किय
 लाकृ. यार्थयनीतनासुखः ॥ सर्वकस्यसासा. तथादिद्वनिक्रमः ॥ ४२ ॥ तयसादिविदवत्तः दवासी प्रणिपद्यति ॥ तयस्यैव वसी सिद्धि. मयय ॥ यनमोगता ॥ ४३
 ॥ तीष्णउवाच ॥ प्रवमू. कृत्वा चिकयामि. गृहीत्वा तानि सिद्धिज ॥ वनी प्रविष्टसु सह कयस्यथसुदू. च ॥ ४४ ॥ कद्वलललललल ॥ यथात्यभुसिनाहवत् ॥ यथाव

क

आवताः ॥३॥ अथ कुरु सुहृन्महाय दम्या वृद्धि यता दम्यते ॥ काक गालि यव देवा इर्जु रानमहायव ॥४॥ तोदमं क्षिप्रमा लोभु तनाक्षरावली यसा ॥ निनीक्षुनीयसा
 तोषु बक्षीतगावदीदिदः ॥५॥ ब्राह्मनाथ समर्थन. नित्यमृधाग कानि ॥६॥ ब्राह्मना रिहिर्गणकः दक्षना विधनं कवित् ॥७॥ यो नृअनित्य चकस्य चर्कं चवानति क्षति ॥ वश्यमस
 मनयाकः समदेवा इव यवः ॥८॥ अन्यथै विनिता कथं नवेनासा वनाये ॥९॥ अन्यथै वरुग क्वकि देवादि तिमतिर्मम ॥१०॥ इक्ष्मर्चने तक्वचकि सनाथ अस्त्राज
 किय ॥ वयमना न्यनित्यकु मणका यिन मक्रम ॥११॥ कृता ॥ कृता ॥ समानसा. रवकी मम निहृला ॥१२॥ वृत्तं हि क्लेश चक्षिष्टा. सृष्टि ब्रह्म मम दृष्टी ॥१३॥ वलवान यिना प्राणि
 अर्नरा अवि वर्जित ॥१४॥ दृष्टक अ ॥ सता न्यव. वाल्मीकि वृद्धा गिबू ॥१५॥ भागिनी वाल वृद्धा नाः किमे श्वर्य दिथो नया ॥ अज्ञाना नृ विद्या तलाक ॥ वृत्त्ये सर्व मवायत ॥१६॥
 तमकु वलवीर्यता. ब्रह्मया यो नृ अतनत्र ॥ अलखील नृ कथं तपकाय निदवता ॥१७॥ याकय मथल रत मनूय ॥ किक्वान नन्देव मलीयानीयः ॥ तस्मान्न प्पामिन विस्मया

३१

म. यदस्मदीर्घं न हित त्वय नवा ॥१८॥ अथैथि यानि कम्पति. कवायि कव लोभन ॥ यदि तान्यवममार्थि कूया किर्वादि तात्तवत् ॥१९॥ अथाना मर्जन इ ॥ स्व मर्जिता
 नाक्षे नक्ष ॥२०॥ नाण्ड ॥ र्वय च इ ॥ रवः भिक्व ग अदि ॥ स्ववर्द्धना ॥२१॥ वश्यार्थे यति नृ द्विना यश्य सर्वार्थे निहृरु ॥ तथानर्थ येति ई वि सुखी सुवर्द्धार्थे निहृरु ॥२२॥
 तस्मात्प्राक्कार्थस्यै कल्यः यथालक्षेन वर्द्धते ॥ नार्थला तादिहा त्मानः क्लेश विद्या म्यर्हयून ॥२३॥ तथामन ॥ समाभाय. कनिय अमम मक्रमः ॥ यथानक्षत्राज नसा. तदिव्य क
 गताजनः ॥२४॥ अहामस्य क्वकनाकः मक्रमै गन सर्वत ॥ याति कृता तदा न्यः जनकस्य निवर्णनात् ॥२५॥ सैकामा न्य ॥ कामयत्यवर्धः वप्रेता क्ववली यजन् ॥ या
 यन सर्वकामानाः यनित्या गम विजिष्यत ॥२६॥ यद्यत्यजति कामानाः तन्मूखनारि यू ईर्यति ॥ कामानूसा नि यूनूय ॥ कामाद नृ विनश्यति ॥२७॥ नात ॥ सुखत नृ किचि कि यलाक
 अविशते ॥ वातहृष्टस्य कामस्या. मक्रमै गस्य यत्सुखः ॥२८॥ तत्तदस्य मर्जिता. मरुवता विता तन ॥ यत्तर्व सर्वदा माः कामी लक्ष्म्य गयत ॥२९॥ कामवन्धन मयेकः

३५१३

नात्यन्त्राकं चिद्वचनः ॥ कामवचनमूकादि तद्वचनं जायते ॥ २० ॥ कामजान्तरिमित्युक्तः सर्वकल्याणं हि जायते ॥ न त्वं सर्वकल्याणं चिद्वचनं न मनसो विद्वसि ॥ २१ ॥ नेवर्त्त
वत्सि सूनः नेवर्त्तवत्सि दुर्नरः ॥ यातालमिव इवृत्ता. मां हि क्रोशयस्य सदा ॥ २२ ॥ जित्युक्तं चिजिगैयुक्तः तव गतिविद्वत् ॥ तस्मात्त्वामद्य उच्यते. इज्यैयं कृमात्मनः ॥
॥ २३ ॥ नेनार्थं वनमैथोयः मिति होय इनात्मनः ॥ दम्यताया निनात्मनः, एवमस्य विद्वत् ॥ २४ ॥ नमिदो नमो मात्मनाः नहि हि हि चिद्वचनं हि चिद्वचनं ॥ २५ ॥ द्वयं म
त्वा विद्वत् वचनं, ननाद्वयं चिद्वचनं ॥ २६ ॥ सको वमार्जवैयं कि. कयः सत्यं चिद्वचनं ॥ सर्वद्वयं दयावाह, मध्ये वचनं न गतं ॥ २७ ॥ यच्च कामं सूर्यं लाक, य
च्च दिव्यं सूर्यं मरुतं ॥ तस्मात्तय सूर्यं चेत ॥ कलानादं कि आत्मना ॥ २८ ॥ तद्वचनं कयं चिद्वचनं निर्वदयं विद्वत् ॥ ये चैव निमाल्य वत्सवा. तवार्कं सूर्यं नाजना
॥ २९ ॥ तद्वचनं कामं चैव कामं. लातमाह मर्दं तथ ॥ यच्च वचनं विद्वत् ॥ यच्च वचनं मिमिद्वचनं ॥ ३० ॥ नात्यन्त्राकं सूर्यं माध्यानि. नात्यन्त्राकं चिद्वचनं ॥ नात्यन्त्राकं

[illegible]

तथा अन

॥ ॐ बुकाव कूमावीव बज्जुनयामम ॥ ४ ॥ सीकितायिलाव श्मका कता श्मविदता ॥ साहिकुक्कयता श्मका वृद्धिमाकाययकदा ॥ ५ ॥ आश्रमहि सुमरु ॥ ६ ॥ रवे
नेनास्ययनमसुखः ॥ आश्रमनिवास ॥ ७ ॥ सुखं ह्ययि निरिगला ॥ ८ ॥ सा मिर्वीकव नंददृष्टा दन्यमाने निमिषे ॥ तदा मिर्वीय नित्यं कृत्वा ॥ सुखमभय ॥ ९ ॥
गृहाने साहि ॥ १० ॥ राय न सुखाय कदाचन ॥ सर्वेयन कर्तव्यः ॥ अविश्व सुखमभयः ॥ ११ ॥ वदत्य ॥ सुमरु ह्यश्रुः ॥ श्मकस्यामतिमान्न ॥ सर्वे सावमादह ॥ यथा
ह्य ॐ वय द्यते ॥ १२ ॥ ॐ बुकावा नन ॥ कश्चि दिओ दिगतमानस ॥ समीयतायि गकयः ॥ नाजानंता च वृद्धवान् ॥ १३ ॥ वदता कलहाव श्मः ॥ दद्यात्सीकल्यै अर्तं कर्तुं ॥
॥ प्रकाकी विच विद्या मि कूमावी श्मकाय अ ॥ १४ ॥ ॐ ह्यनवृद्धिर्तेभ्यः ॥ मनुनिष्ठसमाहित ॥ सर्वो कामान्यनित्यं विद्यामिदमुक्त्वत् ॥ १५ ॥ सीकाउवाच ॥
ॐ ह्यर्वकश्चि चित्वा उ वाथि वेन्द्राय सदि ॥ जगमस्त्यायै मी व्रीता ॥ नाजायि सयुर्वयथो ॥ १६ ॥ अवेदिना जन्मया ॥ सुकादिना ॥ त्वकिल्लाकायुवदमसिमतः ॥

३३

बृद ८५५

तथाहिवा ॥ विचनेन्यथ सुखः ॥ समीयिवा न्वक्तवर्देयतातनम् ॥ १७ ॥ ॐ तिहाससमृद्धयवा ॥ १८ ॥ नाकायाता नामयुंटा ॥ १९ ॥ अविदिनाउवाच ॥ सर्वे वाभवला
ताना ॥ कागलारमी ॥ यनेस्त ॥ २० ॥ वतस्तमन्तु र्यतात कुमुमरु ह्य ॥ २१ ॥ सीकाउवाच ॥ वृक्षालाता ल्यलानाता ॥ नकश्चिदयि विद्यते ॥ वसुधा सुखमाया
नि यमानिदवनवत् ॥ २२ ॥ वृक्षाया निवर्हि म्याथा ॥ वलि श्वर्य सीकं यात् ॥ वृक्षादानमूचिर्मदो ॥ तस्या ॥ किं विद्यते यनः ॥ २३ ॥ अयायुदाहनकी वेंम मिगिरा
सयुनातनः ॥ २४ ॥ ॐ बुकाव सभम्बाद ॥ तन्निवा मय्यभिष्ठिन ॥ २५ ॥ वेष्ट्य कश्चि द्यथायाकः ॥ काश्चर्वी नामतादिजः ॥ नयनवातयामास ॥ अने श्वर्यमदाचिन ॥
॥ २६ ॥ सनिश्वस्य सुद ॥ राका निर्वदादवृदीदिदः ॥ वेष्ट्य कश्चि द्यथायातः ॥ मनिश्वम्य अनस्यरु ॥ २७ ॥ कान्व ॥ अजा विगतनम ॥ तं सत्युक्तसं कल्य ॥ विद्वलन्दी
नमानसः ॥ २८ ॥ ॐ नूथनी ॥ समल्यवत्यवायत ॥ २९ ॥ ॐ नूथनी ॥ यदा ह्यमयितयता ॥ तानूक्लं हिनी द्रुति ॥ यवनय द्रुति कुलन ॥ किमर्थं यनितयता

॥८॥ आत्मनः ४ अने कूलं हि मनसा च दिनं हसि ॥ यत्र मां प्रति लब्ध्वा निवर्तयत नो मनः ॥ ९॥ अहं नीहिय नाशन, अहं तदिरु सा ह्यन ॥ गद् ४ खं स्व कर्तव्या यथा
शतेन ४ यत्र ह्य किं ॥ १०॥ या यमाना निउर्द ४ खे वृथा किमन सा चसि ॥ सर्वद ४ स्वा अ अ म्, मूढ किं न कथा विनः ॥ ११॥ अ म्मे कर्तु मे न काय, न वे ॥ अ व किं म हि
आ ॥ त्वनु अ म्मे कियान्का विवर्ध किं नू दसि ॥ १२॥ मानुष त्वमपि क्व नि, सर्वद नानि का श्रय ॥ मानुष त्वद विवर्ध ॥ न स्मा क्का गियता म्वनः ॥ १३॥ गद् वान्
मेलत्वा, ॥ अ गिय त्वं सुद न्नतः ॥ कथनु निर्वर्त नो म्मा नि, निर्वर्त दौ र्ये मर्तु मि क्व नि ॥ १४॥ प्रार्थय नू किं अनं विव, यनू वा विव द्यात्मका ॥ अनं विव द्यां ॥ अत्र, अत्र जनी क
तव ह्य च ॥ १५॥ स हि विं मर्हिता नीव, इ ४ अ ग्री अनस्य ह ॥ य ४ सनु ह ४ ख कर्म क्क सात्य कर्क दि विभादन ॥ १६॥ अनम्रा यनू वा व द्वा न् यनू र्थ अनभव वा ॥ अ व श्रम र्थ
त्यज नि, तस्मा किं अनत ह्वा ॥ स्य रु किं ये क्क सनु ह्वा अनिना अनदस्य च ॥ १७॥ स का वा द्वा य कायस्य, किं अने ह्वा नभव वा ॥ अन ह्वा त्य ही गना ॥ अ ह्वा य क च न सा ॥ १८॥

[illegible]

द्वापरीयुना ४ ॥ २० ॥ ककामासी विषाकानः तनुक्तायामिमां वज्रतः ॥ कार्येष्टमस्यभासायाः का ७८ द्वापरीयुना ४ ॥ २० ॥ अथजानीविदुः ४ वाक्ता. ३४ खान्यतानिअहिनाः
 तदववदुदायस्य निदितस्यमनीमिद ४ ॥ २१ ॥ अथस्याथेकथनाम. दानस्त्वत्कुमरुसि ॥ अस्मदायवनिद्यागः गर्हयनीवियष्टित ४ ॥ २२ ॥ अथकजात ४ कायस्यवि
 युनर्वक्तादिन ॥ अस्माननीइयासूक ४ सूख ४ ३४ खयवाभक ४ ॥ २३ ॥ चिन्मसूकासिद्विद्वि यतिवेष्टस्वसांयतः ॥ वाक्तायवायववक्ताः तथासिद्विद्विद्वि ॥ २४ ॥ ती
 लञ्चायानर्हसाभा. दययानिसर्वचित ४ ॥ अहासिद्धाथताभाः अयंसनिहयायय ४ ॥ २५ ॥ यामीमहा ४ स्युहामस्या. अनायतवतायथ ॥ अयातीवाद्यैवक्ता कथंको ४
 काक्ताद्वनामरु ॥ २६ ॥ उनुष्यदंगतादहः तनिअद्विगकुम ॥ गथयितात्तन ४ वाक्ता स्युहामिद्विद्वि ॥ २७ ॥ मस्यायतनीयानिः यतिव्यामयनामित ॥ खन्दिद्यात
 ग्गमाभासितवामिर्वचमूयिक ४ ॥ २८ ॥ नचसथानिमलुका. तवान्य ४ वाययानिज ४ ॥ द्वाक्तायवमिन्नरीगा. तनाअभागितान्ता ॥ २९ ॥ अथीमस्यमभास्य. महाअन्यासिकाय

जज

व ॥ गदननेवलाभन. सूदुर्गतामरुसि ॥ ३० ॥ किन्तूनथासिहत्तानाः सर्वयामरुभाद्विज ४ ॥ यदिष्टुत्तायिमवक्ताः ताविरीष्टद्विअसिवा ॥ ३१ ॥ ननायनस्वअमा
 य. नात्मानंलकुमरुसि ॥ अस्मात्तवनगावकि यदिनायनविद्यति ॥ ३२ ॥ ननामकिचिन्माकव. साकाद्यविद्विद्यति ॥ जावितमिनवत्तासिचि अमायिह्यनसीदति ॥ ३३ ॥
 अथववसमकथा अमविक्ताहिसाभव ॥ स्वाअयमगिरीस्वाल्ः वक्तावयस्वद्विद्वि ४ ॥ ३४ ॥ अथमनस्युचायै. चै. द्वामावेवानूयालच ४ ॥ अलस्यमवतीहिसा. मसकोअ
 मनार्जवः ॥ ३५ ॥ नाहिकमानमीयायै विषयंष्टयनिहज ॥ विषयाणकचित्तानाः अनवद्वमर्नत्ता ॥ ३६ ॥ निवर्तविषयक्ताः किअननमनीमिद ॥ अथत्यकुनग
 कासि. विषयाद्विषयात्मिक ॥ ३७ ॥ द्यजतवृत्त ४ सीग. मन्माकिमिनकावन ४ ॥ तद्विखल्ययसीगस्य काम ४ कचित्त्रजायत ॥ ३८ ॥ दन्तिद्विनाद्यान्म अयमहाविजाय
 जायत ॥ तत्तस्मानसिवायुधः खद्वीगतायैयद्विष्ट ॥ ३९ ॥ गह्यौवायमिकात्ता. तकाष्टिद्विविद्यत ॥ यानिवायानिहगव. तद्वतायानिकानिचित् ॥ ४० ॥ गयामद्वकवृत्त

सिद्ध्यावनाथं चिह्नम् ॥ अस्मीनाम् अवि विवक्षुः कहेवनः अविष्मथमनिर्वक्ष ॥ ३ ॥ यद्वदवा ॥ मृत्युनाद्याहतेलाके जल प्रायनया उिता ॥ द्यामिति
 ग्रन्थिमानव, विष्णुर्वरायस ॥ ४ ॥ यद्वियायायदा नास्ति, मर्कयस्य प्रतिविद्या ॥ सार्धकथं प्रतिदिदौ अ जलेने वासवतमिर्ले ॥ नय्यानाय्यायमाताया
 मायूलल्यतनमस्तं ॥ अल्लादकमल्य व, ४ ति विन्दत कस्त ॥ ५ ॥ कृतानुत्पलदीयत्वे, मायुवकातदहिताः ॥ अदित्यवधवगन, दीयततल्यतिद
 त ॥ १० ॥ प्रतिद्वसमर्चकाय ॥ दीयमानानलकृत ॥ आमकृम्वाम्भुका, निजालु ॥ सवितायत ॥ ११ ॥ अश्वस्तल यगा (य) लीयतायमि वाहि न ॥ १२ ॥ दिनासा
 जाविनयस्य, तदुल्लानाद्वधन ॥ १२ ॥ जातमवाक कस्त, जवतदहिताजना ॥ अनूणका दथनेव, तावाकावनजंगमा ॥ १३ ॥ कादि विष्मसेम (थ) म्, गदी
 वधुगनीनहत् ॥ कर्तुमेव रुतेलाका, दृष्टासंयक्ति रीजगत् ॥ १४ ॥ इनस्तु मयितावित्वा, दिनाः विद्ययक्तिः ॥ अयमवहितकाल ॥ दूर्वमासीदनागत ॥ १५ ॥

अन

आसन्नतनतामति, मृत्युर्जाकादिनदिन ॥ आद्यार्तनीयमानस्य, वह्न्यवयदयद ॥ १६ ॥ उल्लाथाकायवाहयः मरुद्रयमयक्तिः ॥ मनसद्यामिष्मकाताः किमद्यनिव
 तियति ॥ १७ ॥ नतीयश्मिलीकाः सि न्याजानामनिव्यति ॥ १८ ॥ गिरीयत्ययवक्ष, खड्गोयु कथमास्यत ॥ १९ ॥ नद्यामयानाचिचम ॥ अयवादी प्रतियत ॥ यावदवतवकल्य
 स्तावद्वय ॥ समाचन ॥ २० ॥ वालववचनधर्म मनिर्लीखलुजा विमाः ॥ रुलासामिवयकाताः अद्य ॥ यतनाइयः ॥ २१ ॥ यायंयविह्वनकात, आत्मानंयविवाल थ ॥ वया
 सुजीलुकोक्षव तिष्ठनवाचसादति ॥ २२ ॥ वजकीनानिवर्तके, अतीसिसनितानिव ॥ आयनादायम ल्याताः नागहानियन ॥ यून ॥ २३ ॥ अहानोनगानिमासाश्च द्वा
 काकालवा ॥ कला ॥ २४ ॥ सैयलुयनिय ॥ गिन ॥ काला वक्षिवाइविकायथ ॥ २५ ॥ यथामर्चदृष्टकूलः जीर्णोत्थावसीदति ॥ तथवसीदनीनना ॥ कालस्यवत्तमागत ॥ २६ ॥
 कालस्यवत्तमायाकि विवग् ॥ सर्वदहित ॥ नसेवमवगकुकि विषयागकचतसा ॥ २७ ॥ यस्यानायावतीतायाः नकिचिन्नुत्तमाचनत् ॥ तमववक्ष्यन्दिदस्यमिति

विद्याद्विवर्तन ४ ॥ २५ ॥ तस्य भिन्नानामविज्ञा स्त्रियवत्सुहृदाभ ॥ मभवदकमवयुमिव मित्यन्तर्नयसति ॥ २५ ॥ मुख्यभागजनान्नेक ग्रन्थमात्र ४ यनिवर्तन ॥
 अज्ञानामनवकात, कथनिकासिनिवर्तन ४ ॥ २६ ॥ अज्ञेयसोमयादृष्टा ह्यकथं सकथमृत ४ ॥ मुख्यनारुदयमानना ॥ अलाय ४ अचतन्म ॥ २७ ॥ वाजानीयं न कदाकथ
 मुख्यकालात विद्यति ॥ अथेव अर्मागालस्या ४ दनित्यखलु जीवितः ॥ ३० ॥ अविर्तमनमनकहि, जनार्क नूयथोवनः ॥ सैवदं वविताभक ० जानकावृतिमायुयात् ॥ ३१ ॥ अथ
 वामृत्यनासाख्यः प्रावास्यादजनामन ४ ॥ तस्यैव यज्ञनवकु मिदम ० अतविद्यति ॥ ३२ ॥ तस्मात् ४ कवमाचानि, कथ्यदिधेववृद्धिमान् ॥ स्वकार्यं कर्त्तुं, वृद्धिं वायनादि
 कः ॥ ३३ ॥ नहिप्रतिवर्तनमृत्यु ४ कर्तव्यास्तनवाकर्त ॥ अदं कर्तमिदं कार्य, मिदमन्यत्कृताकृतः ॥ ३४ ॥ अवमासासुखासक ० कृतानकनूतवर्णः ॥ मारुतहिसमाविष्ट ४ व
 दानाथमुद्यत ४ ॥ ३५ ॥ कृत्वाकार्यमकार्यम्वा, वृद्धिमृत्यु ४ अयच्छति ॥ नैवययुसंज्ञक ० याज्ञकमनसैनन ४ ॥ ३६ ॥ आद्यययुमिवाकथ्य, मृत्युनादायनकृति ॥ मस्तकस्त्रायि

[illegible]

॥ ४८ ॥ नानैव यथा मित्रस्य मयः ननश्चास्तीह धामसः ॥ ४९ ॥ प्रकः प्रवृत्तं जनुः प्रकः प्रवृत्तं लीयते ॥ ५० ॥ प्रकानुर्द्वैकसूक्तं मकः प्रवृत्तं इक्षुतः ॥ मर्तस्यैवानमः
 लक्ष्म काष्ठलाक्ष्म समीक्षितः ॥ ५१ ॥ विमूखावाञ्छवायाति अमर्कमनूगच्छति ॥ वलितामृत्युसिंहस्य, सीसानवननराविनः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

दानयश्च यथाजनु ४ स्वकर्मरुलमश्रुत ॥३९॥ स्वकर्मरुलनियतः विष्णुविधिभिर्निर्मितः ॥ इतयामयिमं काल ४ समतादय कर्षति ॥१०॥ ह्यतात मातका
 कति. कन्दल्यवसूद ४ खिता ४ ॥ मधु कर्षुवसुधम. मधुनाय सिती जलंगत् ॥ यष्टिनेधवसुधव. वलिन्ययथद्वल ॥ १०१ ॥ भवदनिधव. मध्या ४ सर्वयुल्यता ॥ १०२ ॥ ज
 लामल्य दिहतानाः स्वादितामोकाहिसका. वलिनाद्वलानां धे. कृष्णानां धे. नरुतामयि ॥ १०३ ॥ नकस्येवि श्रिजातु काने म जुनामल्य हिमानव ४ ॥ अयिसागल ययनी विडि
 त्यमावसूधनाः ॥ १०४ ॥ मधुनेवविडियनि क ४ यमाव्य तिमायुयात् ॥ जातमायु जलयति ॥ निमयादानीवर्कन ॥ १०५ ॥ निमयादानीवर्कन. काका शिंशक आकला शिंशतकं
 मूद्रकस्या. अहनायनुतावत ४ ॥ १०६ ॥ निमयादिनयकाल ४ गायुत ४ सर्वदिहिताः ॥ हनत्यायुद्विज ४ ॥ १०७ ॥ नदीवग ४ ॥ १०८ ॥ निमयादानीवर्कन. वयागहन निह
 ति ॥ सर्वदहयनित्यय यष्टितीतसमावन ४ ॥ १०९ ॥ अनित्यवतिमान् य विद्युदालावर्चचल ॥ यनमक्तिनमस्त ४ ॥ ११० ॥ किमत ४ यनमत्यक. कथ

५०

यामियून ४ यून ४ ॥ अनित्यसर्वमिवः यकिप्रिदिरुयश्रति ॥ १११ ॥ गतीदृणा मरुकात्वा सर्वतावयनित्यसे ४ ॥ सर्वलिम्बान्यनित्यश्च त्वियाम्यात्मप्रागविन ॥ ११२ ॥
 आत्मज्ञानमभीयानां यन्नात्मानमात्मनि ॥ आत्मयज्ञानविद्यामि नमाकावयनयजा ॥ ११३ ॥ यष्टुयज्ञे कथ हि न्ये मरुकात्वा यष्टुमरुसि ॥ अक ४ वदि ४ कतयज्ञ
 ४ कतयज्ञे विरु मीवत ॥ ११४ ॥ सारु कृदिस ४ सयात्मा. कामकायविकर्षय ॥ ११५ ॥ जिगदिय ४ सभादत्वा मल्युअयाम्यवर्चवत् ॥ ११६ ॥ अकवदिश्च यकिप्रि त्मना
 यासीगकानकः ॥ तत्सर्वसंयनित्यश्च क्षानात्वा समन ४ सदा ॥ ११७ ॥ मन ४ सर्वदियामव. कलेकाय्यसमाहित ४ ॥ तावत्कात्यामिनियता यावत्कलेकायमासत ४
 ॥ ११८ ॥ विमूक ४ विषयागक ४ सीगः सन्निवृद्धमनादि ॥ यदाया निमनातावः तदनिर्वानिमिर्कति ॥ ११९ ॥ कामकायस्यैतदुतमसादयनयनसा ॥ सर्वमूढात्मनयश्च
 कि माद्व दानमयावतः ॥ १२० ॥ अष्टमदसहस्रधे नाजस्यसतकथा ॥ क्षानतयज्ञस्य कलया. नडुल्यनुकदावन ॥ १२१ ॥ हावदवाच ॥ यष्टुयज्ञतद्वच ४ ॥ १२२ ॥ भावय

[illegible][illegible]

ल्यः निदानस्यार्द्धं निधी ॥ वाल्येष्वाकजलाभागे नर्हकस्येदयिनिस्तुलः ॥ ४१ ॥ मित्रगजनालात्ताय जायक मनसाय च ॥ न अस्मीर्थः कौने माथ, हन्मती
 वतेन जना ॥ ४२ ॥ सुल्यजतिवशो ब्रूयान् हतान् यश्च सिमल्युना ॥ न च मी ॥ नोक्तिग्राथा लार्हं हि रुदयकव ॥ ४३ ॥ सतस्या विसमतस्य गतायने ववि घन ॥
 आसामार्थं मिदं वीसाः अक्षीभवायू नूक मः ॥ ४४ ॥ ताय रुतसमदरु जीव ४ सकुमिवस्ति ४ ॥ अनित्य विससम्बाध, कथस्वचि विवृण्वक ४ ॥ ४५ ॥ अहितरुतिन सी
 ह्वी अक्षवक्षवसी ह्वी ॥ अनुत्थवोथ विह्वयन ४ स्वमर्थ नाव वक्षस ॥ ४६ ॥ यशदाय न कूटम्वय गविनी संचया म्वय ॥ वालकम अर्व सचः किं ह्व काकन इकृतः ॥ ४७ ॥
 सुखद ४ खानिश्च गतिनाः सजभायन जन्मो ४ ॥ आदिश्वर्य समये ह्वति, यन ४ यन दतिव ॥ ४८ ॥ ह्वस्व विमिनिर्दिनः ॥ सिर्क विमय सार्थि वा ॥ नागद्वानने ४ वक्षः मयूच
 ज्ञातिमान्मो ॥ ४९ ॥ महाकि दिन खलु नि, यत ह्वयत ववत ॥ आयवष्टि घमानस्य मयूना किन्नयश्च सि ॥ ५० ॥ वक्षु कल निवृद्धौ ॥ जाय नव वसूकव ४ ॥ विम्वक्षु सिर
 वान्

५३

यक्षान्, लूयूक विरुच्य ॥ ५१ ॥ अविश्वार्कै ममनालम्ब, मया ह्वयं मदनिकः ॥ तमका नान्क्षानः कथमक^म विव्यासि ॥ ५२ ॥ सत्या अभवत्त वक्षेलः दयावर्कि ४ द मा नि
 री ॥ अन्यकाय वक्षयः ववदीय ४ वतायता ॥ ५३ ॥ यदा सर्व ववित्यक्ष गनयमवणिम्यत ॥ कथवृक्षि मवाश्रसि मग ४ वाणे विवदत ४ ॥ ५४ ॥ मयूजवा ति नागश्च द
 ४ खानि विवि आनिच ॥ अनुष्ण कानि गदरु, स्वसू ४ किमि रुति ह्वसि ॥ ५५ ॥ तिष्ठक स्यै श्वलायानेव, मयूच ववति गयदा ॥ निवृर्कि लरुक्षक स्यै स्मा ऊलात्माने वाकृतः ॥
 ॥ ५६ ॥ जला सिद्धे तय कानः ववतु या मिहा वराः ॥ मयूच ग्गु ग्गुती ताक, मायार्क किन्नयश्च सि ॥ ५७ ॥ यत स्त्राका विव्यास्यतः न कश्चिदनुयास्यति ॥ वका कीना वयदा
 तयः समादाय पुता पुतः ॥ ५८ ॥ पुता पुतै समादाय, यमीश्च न्यग कृति ॥ अन्यग ग्गु वीये कि, सूरु ली वक्षि वान्मवा ४ ॥ ५९ ॥ नेनी सूरु ली मयया ति नव न्मव ग्गु
 नाथ वियत्त न चित्तवै न्मवै न सुतान दवा ॥ न सिह्वा विवस्यै गता निववर्ज्यीत्वा, वाना स्व कर्म रुलयश्च अना वजाकि ॥ ६० ॥ माता विरु सूरु द्याति, यशदा ना सता निच ४

अनेक (६५) वृत्तानि, कस्यर्त्तानि कस्यवा ॥ ७१ ॥ नचेवीरवत कस्यः नकार्यं नवते नयि ॥ सूकने कानि कास्यकि, रुवीं (७२) वगमि स्याति ॥ ७२ ॥ वमस्त्रिती कवि स्यामि
 याश्चरुमकथानि दः ॥ ७३ ॥ वीरविक्रमसूडा, नाकनाला ४ प्रवर्धति ॥ २० ॥ प्रसन्नयि प्रसन्नस्य ४ वृत्तयिन वृत्तस्य ॥ ७४ ॥ सुमिद्विधेयस्य, वृद्धिमानयि वृद्धयते ॥ ७५ ॥ मा
 रुजालसमावृष्टा, कुलमत्स्यानिवासी ॥ मा रुजालसमाविष्टा न्यस्य ऊनु, सुदृष्टिमान् ॥ ७६ ॥ निर्वन्मनी नरुजमा प्रकृति ह्यनवाविर्त्ता ॥ द्विधेयमिहानिनायाकि तेनीदि
 दति इह ॥ ७७ ॥ अदिन्यासस्य सकोष, क्षमाजवतथा मया ॥ नावमानुष्ययनेन, सीसानुवेमरुमेन ॥ ७८ ॥ वीजवीर्यानां क्षमया जनिगी, वृद्धिसुकमातिशुताशुतानि
 ॥ ७९ ॥ दूतानि सस्ययतिवतिलाक, यकाव्ययकानिले ॥ ८० ॥ तिकाल ४ ॥ ८१ ॥ प्रयास्यन्ति तां किमास्यतं समृद्धिरीमरुद्वयं ॥ अतिशुभाधिदानं नः ॥ गयामरुत्समावन ॥ ८२ ॥
 नचकुरदानवापुवा ४ नस्यद ४ विधाजन ४ ॥ अनुवज्जकिरीकठ, वतभकगमिनः ॥ ८३ ॥ यदवकर्मकेवलः स्वयं कर्तुं शक्नुते ॥ तदवगस्यसाधकः तवत्पूजगकृत ४

७६

नागजाननस्यैविरुद्धत, स्वकर्ममायनस्यनः ॥ यथाकर्तुं शक्नुते ॥ ८४ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ८५ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ८६ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ८७ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ८८ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ८९ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९० ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९१ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९२ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९३ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९४ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९५ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९६ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९७ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९८ ॥ यथावमवयव ४ ॥ ९९ ॥ यथावमवयव ४ ॥ १०० ॥ यथावमवयव ४ ॥

७

[illegible]

मनः ॥ ७३ ॥ अस्मीन्नसमाभयं न भवयस्व मनः सदा ॥ तान्त्रिक्या विष्णोः शक्त्या विष्णोः शक्त्या विष्णोः शक्त्या ॥ ७४ ॥ शीघ्रं उवाच ॥ ॐ दंष्ट्राय नमः ॥ दंष्ट्राय नमः ॥ दंष्ट्राय नमः ॥
तत् ॥ यन्नित्यं यथोक्तं, यित्तं भाद्रकं दत्तं ॥ ७५ ॥ ॐ नित्यं ससमूहं यथोक्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥
नित्यादनात् ॥ वदन्त्यां न जान, श्रेष्ठं यं किं विमिश्रितं ॥ १ ॥ शीघ्रं उवाच ॥ सर्वं भाद्रकं दत्तं ॥ सर्वं भाद्रकं दत्तं ॥ सर्वं भाद्रकं दत्तं ॥
सर्वं निदानं ॥ सर्वं निदानं ॥ सर्वं निदानं ॥ सर्वं निदानं ॥ सर्वं निदानं ॥ सर्वं निदानं ॥ सर्वं निदानं ॥
यः ॥ २ ॥ तदा गन्धदयानि, नमः नमः नमः ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥
यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥ यत्तं भाद्रकं दत्तं ॥

॥ १ ॥ गुणद्वयनाशेव, नातिक्वचित्तेदमिदः ॥ रुडिर्निष्पद्यन्मयूका, ह्यकात्मानान्तरता ॥ स्वर्गलोकांगता ॥ सना, नातिक्रामकिदमिदः ॥ अग्रगण्यवृत्तागाताः का
 र्त्तव्यकीयनाविदः ॥ २ ॥ श्रीगुत्वायामदग्नेऽग्नान् वदन्ताकाश्यायचतुः ॥ माभिवददमीदृशः मादत्तामावैमवाक्यं सि ॥ १० ॥ अस्मीलाकयनधेव, त्वत्तस्माज्जितेयुनः ॥
 सकलीनः ॥ सवन्मयः ॥ सविद्वान्मयव्यवहृत् ॥ ११ ॥ सदानासत्तु विज्ञाना आददातिवसूयना ॥ मृत्वावे किं कनादभुः ॥ याग्यवद्वि, सूदान्तरः ॥ १२ ॥ आनाश्ववान्
 मः ॥ याग्य, नायसर्वकीदमिदः ॥ १३ ॥ अविद्यायदविज्ञाय, वदन्तस्मादभुः ॥ १३ ॥ दत्ताय मिथु (मथनाः) सविक्रामानवाधौतिवृत्तात् ॥ अग्रगण्यवृत्ताकात्तनाम, मिति
 हासयनागतः ॥ १४ ॥ वदन्तस्मादभुः ॥ एकस्यचमलुत्तनः ॥ एकउवाच ॥ तगवन्कनदानन, स्वर्गतिः ॥ सुखमभन ॥ १५ ॥ यददत्तं रुतं द्राक्ष, कर्मत्वं वदु
 मर्हसि ॥ वदन्तस्मादभुः ॥ तदमिदनादकाह, यनं किं चित्सूत्रधनः ॥ १६ ॥ एवमाहवृत्ताय, तगवान्मयिनामल ॥ यच्चवृत्तनियमात् यच्चैयं कदम्भयनात् ॥ १७ ॥

यद

वृत्तादजायविज्ञानि नश्यद्वर्तुवसूयना ॥ १८ ॥ तिसृदिनां दमि, यवन्मयमज्जदन्ता ॥ १८ ॥ आददातिस्मृनः ॥ १९ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ २० ॥ तनकामूचनक्रवः ॥
 सनकृत्, वनश्चावनवान्ता ॥ २१ ॥ दमिदानस्यचिद्वानि रुतं स्वर्गसुखं महत् ॥ यथाचन्दमसावद्वि, नरुन्तरुमितिजायत ॥ २० ॥ तनकामूचनक्रवः ॥
 स्यववर्द्धन ॥ यच्चिचित्सूत्रधनः ॥ २१ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ २२ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ २३ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ २४ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ २५ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥
 नादत्ता, मतीतवतिमानवः ॥ २६ ॥ दत्तायिसूत्रधनः ॥ २७ ॥ दमिदत्ताद्विजायत ॥ सीमार्जयनितसर्वः ॥ २८ ॥ अल्ल्याकनमिदं द्राक्ष, द्वेर्महाः ॥
 यनमभयः ॥ २९ ॥ यथाचन्दमसावद्वि, नरुन्तरुमितिजायत ॥ ३० ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ ३१ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥ ३२ ॥ तनकामूचनक्रवः ॥
 यवत्तसीयन् अहिताग्नेदृष्टवत ॥ यतिवाद्यमहीन्यन्मः ॥ ३३ ॥ यच्चैयं कदम्भयनात् यच्चैयं कदम्भयनात् ॥ ३४ ॥ यच्चैयं कदम्भयनात् यच्चैयं कदम्भयनात् ॥

सर्वकिल्बिष ४ ॥ २० ॥ नास्ति दमिसर्मदानः नास्ति दानसमानिभिः ॥ नास्ति सत्यात्यथावर्मा तान्तात्यातवीवनः ॥ २० ॥ हा वाड वाच ॥ २० ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 लेष्टुवाडुवाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ २१ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ २१ ॥ हा वाड वाच ॥ २१ ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 नायुमिष्टिबडवाच ॥ २२ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ २२ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ २२ ॥ हा वाड वाच ॥ २२ ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 मादतिदमिद ४ ॥ आच्छिन्नावानुमकाच तान्यवननकवसु ॥ २३ ॥ विष्णुवाटवीथिवाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ २३ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ २३ ॥ हा वाड वाच ॥ २३ ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 द्विष्टाकर्मिनीमिः वननवसुधायमिष्ट ॥ २४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ २४ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ २४ ॥ हा वाड वाच ॥ २४ ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 हस्तुगुल ॥ २५ ॥ महातामयिवाच ॥ २५ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ २५ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ २५ ॥ हा वाड वाच ॥ २५ ॥ सर्वदमिदानस्य ह

५५

सतिचक्रमवाप्ति, जगोजगोयन ४ यन ४ ॥ २६ ॥ सज्जलनयगनग्रामा, सज्जनिहनसागवा ॥ तानहनेवयमि, धेर्तुकेचवसुधायना ॥ २६ ॥ आदिनीदिली
 यस्य, नयेसलद्यस्यच ॥ यथागिनमवनीयस्य, मान्धुर्तवेनतस्यच ॥ २७ ॥ अन्यवीचसरुधायना ॥ यानुसीत्यातमस्यह ॥ तस्य स्वाभ्यायनीवाका, वनकम्यातविमि
 तथायितीमहावाज, नाजानामदगार्हिता ४ न ४ वचर्द्धतिविथ्या, दकामयेकनकिच ॥ २८ ॥ पूर्वदेकादिजातिस्था यत्ताडद्वयमिष्टि ४ ॥ महातामिसती ॥ २८ ॥ दा
 ताच्छिन्नावानुमकाच ॥ २९ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ २९ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ २९ ॥ हा वाड वाच ॥ २९ ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 कथयन ॥ यदिच्छसिमहावाज, साग्यतीगतिमात्मन ४ ॥ ३० ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ ३० ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ ३० ॥ हा वाड वाच ॥ ३० ॥ सर्वदमिदानस्य ह
 हाससमृद्धयमिदानावाच्यान विष्णुधाय ॥ ३१ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ वादादगिनसाचवे ॥ ३१ ॥ तस्मान्नमविनाउन्नु स्ववीथिवाडिनामहा ॥ हा वाच ४ ॥ वसुधायसुखसमादेव ॥ ३१ ॥ हा वाड वाच ॥ ३१ ॥ सर्वदमिदानस्य ह

वाच ॥ न (ग) दानात् नन्दानः किञ्चिदस्तीति भवति ॥ गन्धिन्या वाङ्मिता नन्दला कलुषान्नान्नयति कूलः ॥ १ ॥ अमृतां च गवींश्चान् मित्वा वाचव्यजायति ॥ तस्माद्ददाति धा
 (अनू. ममृगीस्य यच्छति ॥ ३ ॥ समानवत्स्य कविलाः (अनू. दत्तायुः सविताः ॥ ४ ॥ रुमः ७ ॥ किन्तु यस्मिन् नन ४ ख (अमिहीयत ॥ ५ ॥ यावद्द्वयं दूता (गो) स्तावत्स्य यथिदीत
 वत् ॥ यथिदीत नदत्ता हि तादृशा गन्धददाति च ॥ ७ ॥ ॥ प्रकाशं दण्डं दद्यात् दण्डदद्याच्च (गो) सतीः ॥ यतीं सुरुद्रयुद्धं दद्यात् सर्वशुल्यं हलाहितं ॥ ८ ॥ यमिदिनं उवाच
 ॥ दत्ता किं लक्ष्मणं व ४ काश्च गन्धविवर्जितं ॥ कीदृशं यददातया, तद्वान्कीदृशं यच ॥ १ ॥ तो यमिदिनं ॥ तन्महीनं यस्य यन्नाः शुभालीं सुययस्विनीः ॥ न्यायार्जिनीं सु
 वत्सींश्च, यदद्याद्वा पित्या यमः ॥ ६ ॥ यद्वा ४ सभा गन्धनीं गन्धवत्स्य दत्ता मत्तयजा ॥ दूनं स्काः १ न्यायलवाच, नदया (गो) ४ कथं च १ न ४ ॥ ७ ॥ गान्धे देवदत्तं हलाच, (अ) यिदि
 याहिताश्च ॥ अतिथिं पित्या यदनाय, (अनू. दद्याद्वा सविकः ॥ १० ॥ अकूलीनाय मूर्खयि, लूवाच यिदिनं यच ॥ रुयकयं ययताय, नदया (गो) कथं च १ न ४ ॥ ११ ॥ वा

खावन

सादाय गृहो वलु ४ मयान्नं कूलं कथं ॥ वलाः १ मयान्नं यय, तगच्छति (गो) यदा ४ ॥ १२ ॥ (गो) यदा तान्नं ययति शिल्पादलदसं ययान् ॥ विमानेना केव (अ) न डि
 द्विविनाडुं द्विविनाडुता ॥ १३ ॥ गीवानू वत्स ४ सु (अ) न्य ४ गान्धे गन्धवित ४ ॥ नमयन्ति विमानं दिव्यात्तनं वदति ॥ १४ ॥ वदन्ती वल्लकीता चै नृयानां चै सि
 जिने ॥ गान्धे दनिनीं दानाः सुकाशो यमिदिनं ॥ १५ ॥ अये वा दानकी च, मिति हं सयुनातनः ॥ अथ वृद्धालं विकविक ॥ न विकतस्य वातया ॥ १६ ॥ मयि चो न
 दालकी दीक्षा, मतिगम्यतन ४ सुत ४ ॥ त्वमामयचनं स्वति, ना विकतमसायत ४ ॥ १७ ॥ समाकृति यमगन्धिं समुति ४ दालकीं सुतः ॥ उयस्य गति सकृद्वा ह्वा ॥
 यनिनगस्य च ॥ १८ ॥ वृद्धा दत्ता ४ सुमनस ४ ॥ सैकलशाय जलानिक ॥ विस्मित भगदादाय, मदीतीनां दालवज ४ ॥ १९ ॥ सगत्वा दायत नृयवः नदीवगन्धमा
 दूतः नददत्तं मयान्नं, यिनर्नयं यतायत ४ ॥ २० ॥ दालि या गन्धमा विक्षा मनि दालं लकी सुत ४ ॥ यमीयं गन्धिनीं युगः गन्धमा चो मूर्च्छित ४ ॥ २१ ॥ तत ४ सविग

三

40

[illegible]

[illegible]

नान्नदानाद्यर्नदानः किंचिदक्षिदन्नश्चनः ॥ अन्ननभार्यनिवृत्तः चनार्नमिदंजगत् ॥ ३ ॥ अन्नंवेद्यानिनीयात्, ॐ ह्यवाचयजायति ॥ तस्मादन्नयदानित्यं प्रानदः ॥ यः
मीलाकः ॥ ४ ॥ अन्नवान्युगवानयि, आयुष्मीशागर्वाश्चेव, सूखाचयत्तजायत ॥ निर्वीददानीयश्चान्नः मतिथित्यः ॥ समाहितः ॥ ५ ॥ सचातिवृत्तसालाक, भवमारुचवास
नः ॥ अन्ननसदः ॥ दानः नन्ननत्तु विद्यति ॥ ६ ॥ तस्मादन्नं विष्णुयत्तदात्तु मिदंनिसाभवः ॥ कृत्वाचसूतकृत्यावः ॥ यः यश्चदन्नदात्तवत् ॥ ७ ॥ विमूकः ॥ सर्वथाय
त्तौह्यः ॥ स्वर्गलोकीसगच्छति ॥ आसीसीति रुचिगतः ॥ सूतः ॥ मित्रकर्मकाः ॥ ८ ॥ कदासावैकूल्ययः ॥ योवावार्नयदास्यति ॥ आदद्यात्तयविशिष्टमन्नमश्चयवर्तिनः ॥
ग्नानायादृष्टवृत्तिया, सयुष्मगतिमायुयात् ॥ ९ ॥ नयत्तुः ॥ दानयचनः ॥ स्वाय्यदः ॥ भवत्तः ॥ यावितावृत्तः ॥ नान्नं दद्यादवाविचानयत् ॥ १० ॥ इदं ॥ साभयकावा
मूर्खः ॥ यद्विगतवत्तः ॥ यः ॥ याकावेष्टदवाकः ॥ शान्तिथिः ॥ स्वर्गसंक्रामः ॥ ११ ॥ ॐ ह्यश्चनसर्ववृत्तानां रुदिदवायवर्तिनः ॥ तस्मादतिथयकार्थात्तवः ॥ सायमिहागतः ॥ १२

कार्यकर्तृनगक्राति ॥ १३ ॥ इमयाद्यामतांगत ४ वरविभयद ४ स्वानि ॥ जायकेन्द्रमयाव ४ जायकेविद्यनीतानि हयस्थतानि वृषका ॥ १४ ॥ वदन्वाच ॥
 कथितामखेरातान् इमयाद्यामतांगत ४ ॥ महात्ममयिचान्यस्य ॥ शुभमिहामितवत ४ ॥ १५ ॥ वदन्वाच ॥ अनात्यनतर्लोक ॥ ननुमानतविद्यति ॥
 अन्नमूलीजगत्सर्वः मन्त्रमेवयतिष्ठिता ४ ॥ १६ ॥ विनमोदवधेत्याग्य यद्वनाक्षसकिन्नरा ॥ मनूयाग्ययिसात्राग्य सर्वकृतमयाकृता ४ ॥ १७ ॥ तस्मात्सर्ववयने
 न ददस्वानीश्वर्योवच ॥ अन्नसु किमायाति गम्यतीचतआगतिः ॥ १८ ॥ कन्यादानवद्व्यात्मनः तीर्थसवासतायत्रा ॥ अन्नदानस्य सव्वति कलानाद्यनिभात
 गाः ॥ १९ ॥ अन्नयात्मवर्त्मनजा अनादीर्यस्यसुतिर्द्विति ॥ अन्तात्मीनवर्तजीवस्येवाधनमयति ॥ २० ॥ योऽपनीकार्मभ्येभ्यः उक्ते ४ आगुणिकामख ४ ॥ अ
 ग्निकामागिनायधैः अत्रान्यविदिभमखा ४ ॥ २१ ॥ सर्वयानात्यवर्त्मकः नाजन्महा ४ सविस्मया ४ ॥ सुवर्तनदीदीवा ससमूहावसूचना ॥ २२ ॥ ननुदहानवसूचनायुक्तं

१२

धानंददागिनित्यग ४ ॥ अविनासिमयावत्यकाकाकाकमयित्वा ॥ २३ ॥ दवमन्नद्रुभारिणा यदस्तसिखरीद्विज ४ ॥ लीकाडवाच ४ ॥ वदन्वाच ॥ एत
 द्वाभितन्नवदाहव ॥ २४ ॥ नआवमयिनजलेकोनय द्वाभितन्नवदाहव ॥ वक्रकृत्वादिर्वाय मन्नदस्य वनस्यति ॥ २५ ॥ किमुक्तविव ४ ॥ सोम्य अमीनप्रल
 जीवितः ॥ अग्नमठ निरीकृत्वा ददस्वानीसदक्षिणः ॥ २६ ॥ वाक् ॥ एवमहाजाजन्द्वाभितस्याविष्णमग ४ ॥ सर्वदानानिदहानि यद्वयका ४ सदक्षिण ४ ॥ २७ ॥ द
 वतायुजिता ४ सव्विधानंददागिनित्यस ४ ॥ यन्नात ४ सर्वतीर्थस्य सव्वतासचयुत ४ ॥ २८ ॥ द्वाभितस्य वयकृद्वा ह्वर्तप्रहासमवित ४ ॥ वक्रलोकावसमायि व
 क्रमसहसादत ॥ २९ ॥ आददागिदयायकः ॥ अहयानंदिनदिन ॥ य ४ य ० दन्नदाननु अहप्रहासमवित ४ ॥ ३० ॥ विननकस्य दुश्चकि नवसानादिसूचन ॥
 वृत्तिहाससमूहयवद्वदसम्पाद ४ ॥ विष्णोः ॥ आच ४ ॥ यमिहिनडवाच ॥ तिला ४ वविप्रममुलः ॥ यवदकिमरुर्भय ४ ॥ यदानयल्लोकाः ॥ तन्मवृद्धिगितायमरु

गुथा

॥१॥ राभाड वाच ॥ सर्वथाभवदानाः तिलदानं यन्मृतः ॥ सर्वथायहर्नतस्ति, यद्विषं स्वर्गमेव च ॥२॥ अवेधादाह नकी म निमिरुसयनातनः ॥ वाक्कलस्य तस्य
 म्वादः समस्य समदात्मनः ॥३॥ मध्यमस्य मदात्मनः ॥ वाक्कलनीयमिष्टि नः ॥ गंगायामूनयाम्मिष्टि, यामूनयामिष्टि नः ॥४॥ यत्पुष्पमलति विद्यातः ॥ यत्पुष्पमलति विद्यातः ॥
 सुमिकुसुमः ॥ विद्यामस्य सुमिकुसुमः ॥ वाक्कलनीयमिष्टि नः ॥५॥ अथवाहयमः ॥ क्वचित्पुष्पमलति विद्यातः ॥ नकादा मूर्धन्यामानाः ॥ कावर्ज्याकनामिकाः ॥६॥ गङ्गा
 त्वं वाक्कलनीयमः ॥ तद्युगत्वात्मानये ॥ अगस्त्यं गायत्र्या विद्यातः ॥ नामतश्च विद्यामिष्टि नः ॥७॥ नवान्यमानयाम्मिष्टि नः ॥ स्वर्गायकस्य वाग्मिष्टि नः ॥ उल्लङ्घ्य ॥ सतनेव उल्लङ्घ्य ॥८॥
 नाययुगत्वात्मानये ॥९॥ सगत्वा यतिवृत्तः ॥ तद्युगत्वात्मानये ॥ तन्माहादानयामास, यतिवृत्तयामनय ॥१०॥ तद्वृत्तद्विजमानायेतः ॥ इति वृत्तयामनय ॥११॥ वावा
 चनीयताभव, सान्यस्थानीयतामिति ॥१२॥ वयुवाचाथरी विद्या, निर्विद्युद्विगमनय ॥ यामका लोचनय ॥ सुमास्यरुमिष्टि नः ॥१३॥ वमडवाच ॥ अकाली विदिनी

नाहः ॥ वायव्यामिकथयेतः ॥ वसुधामस्तु जतिवे, तनुजानामिकवलः ॥१४॥ अथवाहयमः ॥ क्वचित्पुष्पमलति विद्यातः ॥ नकादा मूर्धन्यामानाः ॥ कावर्ज्याकनामिकाः ॥१५॥ गङ्गा
 त्वं वाक्कलनीयमः ॥ तद्युगत्वात्मानये ॥ अगस्त्यं गायत्र्या विद्यातः ॥ नामतश्च विद्यामिष्टि नः ॥१६॥ नवान्यमानयाम्मिष्टि नः ॥ स्वर्गायकस्य वाग्मिष्टि नः ॥ उल्लङ्घ्य ॥ सतनेव उल्लङ्घ्य ॥१७॥
 नाययुगत्वात्मानये ॥१८॥ सगत्वा यतिवृत्तः ॥ तद्युगत्वात्मानये ॥ तन्माहादानयामास, यतिवृत्तयामनय ॥१९॥ तद्वृत्तद्विजमानायेतः ॥ इति वृत्तयामनय ॥२०॥ वावा
 चनीयताभव, सान्यस्थानीयतामिति ॥२१॥ वयुवाचाथरी विद्या, निर्विद्युद्विगमनय ॥ यामका लोचनय ॥ सुमास्यरुमिष्टि नः ॥२२॥ वमडवाच ॥ अकाली विदिनी

[illegible][illegible]

ततः ॥ वासुदेवस्य सखादः नृगस्य च सहात्मनः ॥ ३ ॥ निवसन् युनावाजन् दानावर्द्धादिमानवः ॥ अदृष्टात् सहाय्यं कृत्वा वीर्यमावृतः ॥ ४ ॥ अथ
 यश्च सुततः प्रकृता समवस्थितः ॥ तस्य चाहं न लयन् चक्रे कथं स रुच्यसः ॥ ५ ॥ अथ ये शर्मयंते ये तन्व अथर्वता यमः ॥ तन्मे कुरुत इह तं ॥ ततः
 कुरु न्यवदधत् ॥ ६ ॥ स वासुदेवत समुद्धृतः पृथग्गतश्चेति मियत्वा जन् ॥ मृगस्य सात्मानं मृगाने च कुरु ॥ युनातर्न च रुच्यस रुच्यजितः ॥ ७ ॥ तथैव वा तनु
 तमाह माभवः ॥ ८ ॥ सुखं च का कर्मणि न यावत् ॥ कथं रुवाद्गतिमाह गीता ॥ नवा विवाचक किमतदीदृशः ॥ ९ ॥ स रुच्यसं नित्यं तन अयतः ॥ यवैव काठि
 णतमर्वादाह नः ॥ त्वया युवादाह मितो रुच्यम ॥ कृतमहातरुलीगतकव ॥ १० ॥ मृग उवाच ॥ द्विजस्य मे ॥ यन्निवृत्ता समतामसं गमयन् ॥ अहं नास्मात्सादका
 विवृष्टा न्यस्य माभवः ॥ ११ ॥ सायं श्रुत्य विमर्गस्यैव तीर्णं यन्निवृत्तिद्विजः ॥ मम यमिति सावाच यथर्मेयस्य सावत् ॥ १२ ॥ तावत्सो समनूयाको विवदको ममाकिक
 य

१३

रुवादाता रुवाक् कौली मावेव यूनवृचः ॥ १२ ॥ ततः ॥ तस्य रुच्यं गवान्मूर्त्यं वलीकृतः ॥ यावत्तद्गुही गानः सुतु मासववीदिदः ॥ १३ ॥ अथास्माद्वरुदी
 ना तनूनी जालं संप्रता ॥ न सा स कामयावदु मित्युक्त्वा स यथो द्विजः ॥ १४ ॥ ततस्तु मयर्न विवृ मयावती गवीयति ॥ गवीं स रुच्यं अनूनी तदर्थं यन्निवृत्ताः ॥ १५ ॥
 ॥ वाक्क उवाच ॥ तना जन्म निवृत्ता मि गकाहं स्वर्गमार्गं ॥ सेव मे दीयतामस्मि मित्युक्त्वा सा यिजमिवात् ॥ १६ ॥ एतस्मिन् वकाले तु वादिती काल अस्मिन् ॥ यम
 लाकमर्हयाका अस्मिन् जन्म यागतः ॥ १७ ॥ ततस्तु जिजयीत्वा माः वावाच त्वगवाच्यम ॥ तान् ८ र्दं स्या यतनाज कवयूथस्य कर्मिन् ॥ १८ ॥ यावन्मिवात्ता लाक
 यावन्मिवादि विता नका ॥ यावन्मिवादि अनाथ तावद्विहं रुवाद्दो ॥ १९ ॥ अकिं किंचिद्वर्तनीयायः मृगनाकद यित्वा ॥ तद्दुष्टं वायं वृद्धं यश्चाह यथ यत्तु ॥ २० ॥
 पुत्रा पुत्रा निजान् नान्तिना ग्नादिकर्मिन् ॥ अथ यमयैव मे कुरु शक्यं यूनवे ॥ २१ ॥ तस्य कश्चिद्वयाथाकि देवा वामानूयायिवा ॥ उवाच गमदतयत

कर्मगिष्ठतद्वर्गनृत्तः ॥ २१ ॥ मृगडवाच ॥ वाक्कायमूयशस्त्राणि यस्याश्चरमिनिप्रश ॥ अस्मिन्नाजर्षीवृन्देनव, यनितास्मिन्हीतल ॥ २२ ॥ अर्षीवृन्देनवृत्तः ॥
मस्याष्टे ४ यजल्यत ४ ॥ वासूदेवसमृद्धिर्हृत्, यायास्तुतितातव ॥ २३ ॥ वृत्तः ॥ अमूर्तमात्मानं ॥ मयश्च यतिर्नीतत ४ ॥ तेर्यस्तुतिमन्त्रयाकः ननुमामज रुक्मिणि ॥ २४ ॥
त्वयाहीताविनष्टद्य दवदवजगल्यत ॥ दवदवदुषिकण, वद्वनारजनाईनः ॥ २५ ॥ तानाचनसरुद्राक्ष, सर्वलाकयनाचन ॥ अनूजानीरुमांक्षु गच्छा मिषिदग्ग
लयः ॥ २६ ॥ शीघ्राडवाच ॥ गनस्तुलाकनाथैः चन सानूज्ञात ४ यमन्याताः ॥ दिव्यविमानमावृक्ष, दिव्यनूयादिवंगत ॥ २७ ॥ अथनस्मिन्निविमानन, दिव्ययानेनानुथ ॥
दवदवाजगदव, वासूदेवाजगल्यत ॥ २८ ॥ ग्रावासूदेवडवाच ॥ वृक्षस्तुतिरुत्तयः वृक्षनकदाचन ॥ वृक्षस्तुतिरुत्तयः, मृगवाक्कायः ॥ २९ ॥ सनैगवां
नथादद्या, दकासयदुपचय ॥ सयानिनर्कद्यान, भवमाहर्षीरुत्तय ॥ ३० ॥ वनभवाविर्दनेता, ननुदत्तगवाणतः ॥ वृक्षस्तुतिरुत्तयः, वृक्षस्तुतिरुत्तयः ॥ ३१ ॥

माधुगच्छति. सनत्सद्यां वाचन ४ ॥ मरुतयिदरुत्यग्नि ४ मरुतयनवसायति ॥ ३३ ॥ वक्रस्ववद्विद्वद्यस्य. समायाधानि विद्यते ॥ वक्रस्ववलिअद्भुतः
दरुत्यासकर्मकूलः ॥ ३४ ॥ विक्रमनउच्युक्तः दणयुवन्दिणायनान् ॥ बहीवर्षसुरुवालि. बहीवर्षभता निच ॥ ३५ ॥ वक्रस्वलाविद्यनूयो. विद्यायीजायते
कमि ॥ अश्मानमयूयायत. लार्हवाडलअत्तन ४ ॥ ३६ ॥ नकण्ठिदयाथाहि वक्रस्वथनजायते ॥ वक्रस्वादूर्जनतने. नान्यलाकृति विचन ॥ ३७ ॥ अमनु
कमरे बहः मतद्वानाहने विषः ॥ लालालालादयि विद्या. वक्रस्वकक्षुमूयते ॥ ३८ ॥ विषमकाकिण्णरुकी. वक्रस्वसकर्मकूलः ॥ वनवनतवृमग्निद
रुन्मूलानिनद्धति ॥ ३९ ॥ कर्लसमूर्लदरुति. वक्रस्वानियाठक ॥ तस्माद्वाग्निवदाहि विषवच्चसुदूर्जनः ॥ ४० ॥ वक्रस्वन्नयुरुक्यः नबन्नात्तलिने पिना
॥ तीष्ठाडवाच ॥ पूर्णित्वायुधुनीकाक्ष. तगवान्ननतावर्तन ४ ॥ ४१ ॥ यावनसर्वद्वानाः यथोद्धानावतान्यनीः ॥ सद्भिः समागमानाज नारुलासतिक्वचित् ॥ ४२ ॥

मायना. नना अरुयविद्वलाः ॥ १० ॥ आनलक्षति ॥ कश्च. सदायंगतिमायुवात् ॥ अयुक्त्या किं माकानोः सुखं च इव जायते ॥ १० ॥ तस्य स्वप्नो विवर्गवि. कलानाह कि
 श्रुत्वा ॥ तस्मादनात रुन्दीना. स्वप्नमात्मानम् ॥ ११ ॥ तस्याश्च वक्षसदनाः किम्वा विविदग्नालसः ॥ नकश्चिन्विद्युत्स्वावी. मासाद्धदकदाचन ॥ १२ ॥ निवद
 यथामीनास्स. सदा मूलं प्रदास्यति ॥ १३ ॥ उवाच ॥ १४ ॥ गति ॥ मध्यवर्तनं निवादाजानस्य च मा ॥ १५ ॥ गत्वा सर्वं यथावत् ॥ नद्यवयववदयत् ॥ नद्यवयववदयत् ॥ नद्यवयववदयत् ॥
 त्वा. चवर्तनं हित आगतः ॥ १६ ॥ प्रयत्नो नवनाज वि ॥ १७ ॥ महा माय प्रभाहि ॥ १८ ॥ तं प्रुडा सित्वा विविधं. दव कल्याणने श्वन ॥ १९ ॥ आवाच रुगवान् ब्रुहि. किं कथामित
 वाह्या ॥ चवनड वाच ॥ २० ॥ मम मरुताय का. केवली ॥ २१ ॥ स्वजा विन ॥ २२ ॥ सममूल्यं च यच्छेत्वा. यथावदाजसक म ॥ २३ ॥ नद्यवड वाच ॥ सहस्राक्षं सतं मूलं. नि
 वादय ॥ २४ ॥ प्रदीयताः ॥ निष्कृयार्थं रुगवता. यदा रुह्युनन्दन ॥ २५ ॥ चवनड वाच ॥ ममिगतसहस्रं. यत्पूज्यं नृणां कर्म ॥ २६ ॥ अमात्ये ॥ सहस्रं मूलं. कर्म मूलं मम. नि

त ४ ॥ २१ ॥ नद्युषडवाच ॥ कटी ४ यदायतामूल्यः निषादद्यादिआकृत ४ ॥ यद्यतदयिनामूल्यं तताम्रययसोदेउं ॥ दायताः ॥ २० ॥ चवनडवाच ॥ नाहमहलोका
 डि ४ यदायतामूल्यः निषादद्यादिआकृत ४ ॥ यद्यतदयिनामूल्यं तताम्रययसोदेउं ॥ दायताः ॥ २० ॥ चवनडवाच ॥ नाहमहलोका
 वतमूल्यमहमन्य विनामन्यमन्यमन्य ॥ २० ॥ चवनडवाच ॥ अर्द्धनार्द्धसमसूत्रा. निषादद्या ४ यदायताः
 डवाच ॥ मरुर्धसूत्र ४ मूत्रा नद्युषडवाच ४ खित ४ ॥ चिकचामासू ४ काक ४ यलामात्रयुकाहित ४ ॥ २२ ॥ गन्तातयप्रमि ४ कश्चि ० मविजातामहातया ४ ॥ थावाचनद्यु
 र्धमाह. शाअचिआम्यहमनि ॥ २३ ॥ डलिहाकिह विप्रध. गवा ४ क्री ४ सितामच ॥ नद्युषडवाच ॥ ववीउरुगवान्मूल्य. मअवस्यमहात्मन ४ ॥ २४ ॥ यनिग्रायस्वमासमादि
 अयचकलचम ॥ हन्यादियेवकुलीचम ॥ आहियेवकुलीचम ॥ २५ ॥ विप्रन ४ मतिआहान ० वाकवीर्ययनायन ॥ गविद्यतडवाच ॥ अनर्थाचामहानाजः ० जगत्पुत्रा

द्विजात्मक ॥ ३३ ॥ गवश्च देवास्तस्मात् (गमूत्य मस्य वदायताः ॥ तदुत्वावचनेनाडा. सहामात्ययुगादित ॥ ३३ ॥ रुधिरमरुता विष्ठा ॥ वावाच देवता मुनि ॥ उक्तिः
 हिंस्रविप्रश्च. गवाक्काशिरागव ॥ ३४ ॥ वनमूत्यमर्हसन्ध. गवश्चमर्हतीवन ॥ यवनडवाच ॥ उक्तिः कान्ययनाजय. सम्यक्कीतासितनृय ॥ ३५ ॥ (गमिषुर्ल्यनयम्भ
 मि. यदियं यनमंनुवि ॥ गव ॥ यदक्षिणा काया वन्दनायाश्चनित्यस ॥ ३६ ॥ मंगलातना नित्यः सुखादृता ॥ स्वयंनुवा ॥ अग्न्या गवामिदिव्यायै. तमः दवतायतनानिच
 ॥ ३७ ॥ वृथकेसकतायासाः किंचनमधिककन ॥ (गमूयं (गमयन्तीनः दमिसर्चिः (धेवच ॥ ३८ ॥ गवो यक्षे यविशति. यनकी सकलजगत् ॥ गवाममायमानिर्त्त ॥ ३९
 व गमयन्तवच ॥ ४० ॥ गवामभद्रदयचायि. गवाम (अवगम्यदः ॥ वनत्राजयलित्यः विर्यः (अनियत ॥ पुचि ॥ ४१ ॥ विमूक ॥ सर्वथायथा. विमूलायै सगच्छति ॥ ग
 गवामतयप्रतिनाः य ॥ कृयाच्चिजमगवाः ॥ ४२ ॥ सर्वदे ॥ खविनिर्मकैः सुखमानस्य मूकमः ॥ गमसमृद्धिचनगव. वाक्कदद्याकय ॥ सदा ॥ ४३ ॥ अकृतास्वसमाह्वनः

कृता

स्वर्गलोके सगच्छति ॥ तनाग्रथादृता ॥ सम्यक् यितलं चेतयिना ॥ ४४ ॥ दवतायुजिताश्चन. यातिदद्यांगवाक्किः ॥ अदिगविदि यरुस्य. म (अचार्क वयाथिवि ॥ ४५
 दोनं जादिदवानाः दानाख्यममर्हयदा ॥ तस्याज्ञाव ॥ यदाजया ॥ यजनीयाश्चनित्यस ॥ ४६ ॥ स्वर्गस्थीगमाम्यता ॥ सायानानिविनिर्मिता ॥ लायाडवाच ॥ वनदुत्तानि
 यादक्ष. गवामरुत्तमूकमः ॥ ४७ ॥ यनिप्रत्ये मरुत्तानः गतक्षमसिभववात् ॥ निषादाडव ॥ सम्राधादगर्नैर्यर्ग ॥ वीर्यैर्नमननन ॥ ४८ ॥ यावतानि किलानि
 साधुनामिति स्रष्टु ॥ सत्ताधादगर्नैरेव. सहस्रमृति ॥ कर्तृत्वा ॥ ४९ ॥ यसीदन्गवीष्मस्मात् (गोत्रमायतिगच्छताः ॥ यवनडवाच ॥ यवव ॥ यनिर्द्रो मि. गममकी मूकि
 किलिष्याः ॥ ५० ॥ निषादागच्छत ॥ स्वर्गः मर्त्यः ॥ यार्द्धजलादृते ॥ यन्मयायुर्करी किंचि नमौ नोवाक्कयिकमर्ति ॥ ५१ ॥ इ ॥ खाकजिबुवश्चन. सर्वजनुसुखाद्विता ॥ लाया
 डवाच ॥ गतक्षय्ययसादाक मरुर्भवितात्मन ॥ ५२ ॥ निषादाश्चनवाकन. सहस्रमृतिदिवंगता ॥ तान्दृष्टवजत ॥ स्वर्गः समन्यान्मन्या जाविन ॥ ५३ ॥ सामाख्य

४४ सव्या विस्मयन्यनमंगत ४ ॥ सव्या ४ प्रथमार्थि ४ सव्या ४ वृद्धताथर्जलायमा ४ ॥ ३३ ॥ ४५ मयासनथा (ग) वि. नतमं निरुलाहं वत् ॥ साधुनादपनीयत् ॥ ती
 र्थेताहिसाभव ४ ॥ ३४ ॥ यूनानिसकलानं लाकाः सद्यसायसमागम ४ ॥ अथर्हि विंशुवनामिमानु गविजातश्च वृद्धिमानु ॥ ३५ ॥ वनास्थीपुच (अ) द्वाह्याः वृद्धयामासती
 नृय ४ ॥ तत ४ सवनयामास. अमर्षवृद्धि नृदन्त्राः ॥ ३६ ॥ त (अ) निश्वासागोतय. तीव्रयप्रसर्गसु ॥ अहोअथासिनाउद्य यकि अमर्षविभावत ४ ॥ ३७ ॥ अमर्षाईल्लता ४ वीसाः
 वि (अ) अलविंशमहाद्विताः ॥ अथानार्थमदोनाकाः भारुश्चमिमाअव ४ ॥ ३८ ॥ भारुद्धवश्चनका नार्थ निन्दन्ताव ४ ॥ नार्थहिवदुमन्यकनना विमयलालुया ४ ॥ ३९ ॥ म
 नाविहसुवश्चकि. तदवननकायम ४ ॥ तस्मान्नाकद्वयश्चन्या. नकर्तुमामदस्वया ॥ ४० ॥ यदिद्वसिमहाकाज. साखतीगमिमात्मन ४ ॥ साखडवाच ॥ ४१ ॥ लुक्काभोमहात्मानो. गजगमवु ४
 स्वासंमं प्रेवति ॥ ४२ ॥ नद्युआयिवल्लेख. वृद्ध ४ याविसीयूनः ॥ एतत्कथितेनाज अगुम् ४ सत्यमागम ॥ ४३ ॥ महात्माधोगवीचेव. किन्तुय ४ अगुमिद्वसि ॥ ४४ ॥ निहासयना

60

समूचयचवनावाख्यान ४ यथे विन्ना अमय ४ ॥ ४५ ॥ अमिष्टिडवाच ॥ मानसानाहताथनि. वृद्धिगकि मरुर्भय ४ ॥ तानिमकनूसाईल. यथावद्वकुमर्ह
 सि ॥ १ ॥ लोकाडवाच ॥ गृह्यतीर्थनीगदभा. मानसानिममानद्य ॥ अथसस्यगम ४ आत्मा यथा तियनमंगति ॥ २ ॥ सत्यतीर्थदमातीर्थः तीर्थमिद्विचनिय
 रुः ॥ सर्वज्ञगदयातीर्थः तीर्थमार्जवभवच ॥ ३ ॥ दानतीर्थः मनतार्थः — — — — — मूचते ॥ वृद्धवर्चन्यर्नतीर्थः तीर्थश्च यिचवादिता ॥ ४ ॥ ज्ञानतीर्थः अतिती
 र्थः तयतीर्थमूदाहृतः ॥ तीर्थनामयिताथश्च. विष्णुधर्मतय ४ यना ॥ ५ ॥ नजलायुतददय. ज्ञानमित्यसिआयन ॥ यज्ञाताथादमयान ४ सविहमनामल ४ ॥
 ॥ ६ ॥ आलूच ४ यिष्टुन ४ कूभा. दाहृमिका चिचयात्मक ४ ॥ सर्वतीर्थश्च यिज्ञात ४ याथामलिनप्रवच ॥ ७ ॥ नगजीवमल्ल्यागः यथानवतिमिनिर्मल ४ ॥ मान
 सउमल्लयके. सवदत्यकनिर्मल ४ ॥ ८ ॥ जाचकचमिचकेच. जलध्वजलोकस ४ ॥ तदवाहकिनेखगमविष्णुधर्मनामल ४ ॥ ९ ॥ विषयश्च निगसा (ग). मानसाम

63

नडयन ॥ अथ च विना (गमस्य) निर्मलत्वमूयाह ॥ १० ॥ चिकमनगर्तदूः ॥ तथैताने नैष्टुका ॥ गत (गम) विजल (गोत्र) शुभात्तालु मिवागु चि ॥ ११ ॥
 दानमिच्छातय ॥ सोच ॥ तथैवाधुर्तनथ ॥ सर्वव्यतातिथयति, यस्यानावाननिर्मल ॥ १२ ॥ गत (गम) विजल ॥ (गम) च ॥ निगृहीतदियग्रभा, यनेव
 स्वसतनन ॥ १३ ॥ नवतस्य कूटगुः नमिष्ययवगया ॥ ज्ञानदुदज्ञानजले नागद्वयमलायह ॥ १४ ॥ य ॥ स्नातिमानसता (थ) स्यातिवनमयद ॥ १५ ॥
 ककथिर्नज, मानसंतीथलेद्वय ॥ १६ ॥ सोमानामयिताथना ॥ दूष्यत्वेन गृहकालदा ॥ यथागजिनस्याद्वय ॥ १७ ॥ कश्चित्मे (व्यतमा) स्मृता ॥ १८ ॥ यसावा
 ददुतामूहम ॥ गविलस्यचनजसा ॥ यविग्रहात्मनातीव, तथर्तीव्यतास्मृता ॥ १९ ॥ तस्माद्भाभयूती (थ) मानसयुचनित्य ॥ २० ॥ इतयद्वयिच ॥ २१ ॥
 ति, स्यातिवनमयिगति ॥ २२ ॥ ॐ तिदाससमूहथमानसताथयाया ॥ यद्विर्वा ॥ २३ ॥ यमिष्ठिनडवाच ॥ कस्माद्दानं सूतलुस्य, यनमादुर्महर्षय ॥

६१

कस्मात्प्रविर्गयक (थ) कः ॥ तन्मवृद्धि वितामह ॥ १ ॥ सी अडवाच ॥ अग्रतकथयिष्यामि, ॐ तिदासयवनातन ॥ २ ॥ जामदग्न्यनामस्य, सन्नादमृषिहि ॥
 सह ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ सकृत्वायथिवी ॥ कृत्वा निद्वयिर्गयना ॥ कययायवयाविष्ठा, मनीष्ययक्तुर्गव ॥ ५ ॥ नामडवाच ॥ ॥ ६ ॥ का (अ) दायथवालाता कर्मदेवा ॥
 गुरीनन ॥ कथतस्माद्विमूर्त्ये ॥ तन्मवृद्धितयावन ॥ ७ ॥ ॐ त्यक्त्वा अमर्तत्वहा कचमूर्महर्षय ॥ सूतलुदानं सर्वथा ॥ यावन्मन्यावनस्मृत ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥
 विप्रमकुल ॥ मयत्वं जातवदय ॥ ददुलात्ताकात्यनावीर्यात्सूत ॥ १० ॥ मिति शुं शुं मे ॥ ११ ॥ सहजकारि कयस्य नूदयु कसमूहव ॥ यविग्रहात्सूने ॥ स
 वे ॥ हयिनिमकृतादिरि ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ अग्निर्वैदेवता ॥ सर्व ॥ सूतलुधैददात्मक ॥ तस्मात्सूतलुन्ददत ॥ यायकसर्वदेवता ॥ १४ ॥ दगवृद्धिनींश्रयि, स्वर्वसुना
 यन्नन ॥ सूतलुय ॥ यदद्याद्वे आवाचदं वरुस्य ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ सवन्विमानवाधाति, य ॥ ययक्तिकाधेन ॥ १७ ॥ ॐ स्वर्वैरुगवानपि, वितामसूतावती ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ य ॥ सूत

कुनभानिः वाक्मसायं कृति ॥ सचिलं विलज्जाका. न्दवद्वि विभादन ॥ ११ ॥ सर्वभाभवदानानां भवजन्मानुगच्छतः ॥ दातवद्विनि (गोनीमाः सकज
 न्मानुगच्छतः ॥ १२ ॥ विद्यमानं सुवर्णं. आलासन्नययकृति ॥ सतदाज्ञानमाभ्यस्य. वद्विगतनर्कवर्ज ॥ १३ ॥ दत्तायिसुमहत्यायः जातव्यवद्वानिय ॥ सद्य
 कृतमसदायन. त्ववर्धं हिमूयत ॥ १४ ॥ तस्मात्तायविपुलायः सुवर्णं ददितुं रागत्रि ॥ सुवर्णं दानात्यजमः नान्यदार्ते हि विद्यत ॥ १५ ॥ वृत्तकामनिरिक्ते
 सु. नाभाय मन्त्रितावन ॥ प्रादात्सुवर्णं विप्रयैः ॥ कृत ४ यायादिमुकवान् ॥ १६ ॥ तस्मात्त्वमपि नाज्ज. विप्रयाददिकायै नः ॥ विमुक्त ४ सर्वथायथा ४ तत ४
 स्वर्गमेवायति ॥ १७ ॥ वृत्तिहासयुक्तः सुवर्णं दाननामसकविश्वामय ४ ॥ यथि विनदवाच ॥ वय ४ स ४ यूयमात्माक. नृसैसा ४ प्राति हिंसाका ॥ मास्य
 ह्यसुदृष्टं क. नोदानक्षानमावृत् ॥ १८ ॥ तथेवविष्काका. रुद्रीराज्ञाननकस ४ ॥ नद्विज्ञानविकारीश्च तथेवविनियमिभ्यः ॥ १९ ॥ नान्यथाद्वयकस्याविधि

८२

वि

दक्षिणेतदिद ४ ॥ गज ४ कानिकार्येव. ननस्याहिंरुर्नतथा ॥ २० ॥ तस्यधरुद्र (दादाया. मुनिरि ४ यनिकाकिता ॥ वरुनयिगुणायि. यथावद्वकुमहेसि ॥ २१ ॥ रा
 यडवाच ॥ अहानखलुसायास्तु नवाविमयलालूया ॥ सर्वदायाकनमाभ्य. मूलायश्चकिथयुग ॥ २२ ॥ आश्वद्यस्यहिसर्वस्य. १६ डिक्ता (चनसैगम ४ ॥ क ४ नाजीय
 तीनश्च. सर्वथेवायनैसम ४ ॥ २३ ॥ यदनेनुकृतस्वाइ ४ कर्ककदनभवयत् ॥ तथासंयाकथाकादः वियांसदसक्त ॥ २४ ॥ नसनासनसैथा लूमदक विभादिता ॥
 मानायासविसेनव. विनासयाकिवालि ॥ २५ ॥ तमायसायुधरु. ननिग्नस्यनचोउस ४ ॥ देवक्रान्तमभनयाः साक्षादेवहृदय ॥ २६ ॥ मान्सायनाविदृष्टकन
 गालिहृदयवृत्ता ४ ॥ अमान्सादायभगयु. वलवकसूखावित ४ ॥ २७ ॥ सुदृक्कृताचयाविष्ठा नासिका विमयात्मका ॥ रुद्रयकिननामाया. नृगन्मा नादसावृत् ॥
 ॥ २८ ॥ अत्यैर्देकिमान्यानि. सत्वानीडा विनेयिमाः ॥ रुद्रकनयिनेस्यै विनिवृत्ताववीकृत ॥ २९ ॥ मान्सातद्विनामय. यस्यामान्यमिरुक्ता ४ ॥ ३० ॥

तत्मान्दस्य मासत्वं यवर्निदेसना विद ॥ १३ ॥ नहि सान्द्रकृत्तवाक्का, दुर्बलाद्या विजायते ॥ रुखाजुं तवत्मानं नस्मात्कृत्य निवर्जयत् ॥ १४ ॥ प्रतद्वदिति यथादि
 मान्दस्य यन्निवर्जने ॥ यदं गीदयने नीव, कलकना विवर्जितं ॥ १५ ॥ अस्माय श्रम्य नृनेय समीय श्रमिद्य ॥ सूर्यवादिवा इ ॥ १६ ॥ स्याति यनमी
 गति ॥ १७ ॥ उद्वजयनिधाय, यालिना इ ॥ १८ ॥ इदिसवान् सवसेत, यवतया यवघने ॥ १९ ॥ ननकय विवर्जित, ननायालिव (अनना) ॥ उद्वजनी
 आद्वगानाः यथायात्त नृगस्य ॥ २० ॥ आवकि यथुलामानि, तावत्कृतान् माननः ॥ वथायथु यमाधानि, यतज्जम निज्जम नि ॥ २१ ॥ अन्मका विगयिता, ६३
 निरुका कयविक्रयी ॥ सैल्लकायावदकृति, खादक श्रम्य द्यातका ॥ २२ ॥ अननकायकादकि, उवशा गमखादका ॥ द्यातकाव अर्व अस्याः सित्यय विवि (अ
 वव ॥ २३ ॥ समूल्य लिप्यमान्दस्य व अव (अव) वदहिनाः ॥ यसमीक्ष निवर्जित, सर्वमान्दस्य रद्वगाना ॥ २४ ॥ अमीक्ष मनुसीवादा, वद्वववद्वगाना ॥ नमीय निधि

नीवाकः तद्वत्तु ननामिषय ॥ २५ ॥ स्वमान्दयनमानेन, आवर्ह चिनु मिद्वसि ॥ नाचद ॥ वाद अस्मात्मा, ननकसु यवयते ॥ २६ ॥ यादिस्य कानि
 दूतानि हिनस्यात्तसु खिक्का ॥ रुद्रद्वेयाय ॥ २७ ॥ वाद क्कावनर्तयगच्छति ॥ २८ ॥ सतयति तथाजयः यज्जत नददा गित् ॥ मयमान्दस्य निवकाय ॥ २९ ॥ वावाच
 चर्दवदस्यति ॥ ३० ॥ आवज्जीवतु धामान्, यनिमन्य निवर्जयत् ॥ वसिष्ठा रगवानाह, स्वर्गलावी सगच्छति ॥ ३१ ॥ आरद्वचित्मान्दस्य नि, यश्चदयि निवर्त
 न ॥ यमदग्निर्जगदवः स्वयिष्टगतिमायुयात् ॥ ३२ ॥ नृयमेष्टयमावाग्यः श्रीस्वर्गतिभवत् ॥ वावात्त हिन्स ॥ ३३ ॥ ययव ॥ ३४ ॥ वादेवमसनामूनि ॥ ३५ ॥ सूर्य
 दानं (गदानं) दमिदानं तथेवत् ॥ उक्तम ॥ वादानस्यात् दित्वा च यवागन ॥ ३६ ॥ वय अममिमस्याता, मार्क (लु) यनयार्थिव ॥ मूनिना यिद्वत्थाकः नदिदा
 नौवृमि ॥ ३७ ॥ कर्मममनसावाचा, आदिनः किञ्चन ॥ वय्द्वत्त ॥ ३८ ॥ सद्गानाः मन् ॥ ३९ ॥ स्वायत्तु वाववात् ॥ ४० ॥ साकमूलरुले म (अ) नृत्तानां वराजने

नानि यनि त्र्यंशं वरुव ४ याव्यवाजन ४ ॥ स्वमाश्वयनमान्यानि यनि याल्यद्विर्गता ४ ॥ ३५ ॥ तदवमृत्तमं अस्मि मर्हि सालक्ष्मणं शुभं ॥ यवनको मलात्मानो वक्रला
 दीवजकिने ॥ ३६ ॥ एतत्तु कथिता ४ किञ्चिदस्ति सायामयाशुते ॥ युष्म ॥ समस्तानदिसकने वक्रुवर्गतेनये ॥ ३७ ॥ अस्मिन्निमित्तं यन्त्रं सर्वसुखावहं ॥ य ४ य ८ थ
 एतदाद्या वि. संगच्छत्यनमी गति ॥ ३८ ॥ एतन्निहाससमूहयमान्मशयुक्ता ४ अहर्विष्णोश्च य ४ ॥ यमिष्टिजडवाच ॥ अहवावक्र. लक्ष्मण. कर्मलोवक्र. हातवत् ॥ एतत्तु
 यत्कृतकान् यथावद्वृत्तं मर्हि सि ॥ १ ॥ राश्याडुवाच ॥ अयमर्थ ४ यन् यत् ० कृत्वा देवायनामया ॥ यदाशोरुगवानाह तन्मवृद्धिनिगदत ४ एतत् ॥ २ ॥ वाक्कनश्च यमाङ्कय. यय
 वमानकिञ्चन ॥ वृत्तान्तास्ति निच ४ यथा तन्विद्याद्वक्त्रयातक ॥ ३ ॥ अयमस्मिन्निमित्तं मूढा मिथ्यायावेदिका निच ॥ दद्यात्समाकिञ्चिन्माक ० तं विद्याद्वक्त्रयातक ॥ ४ ॥ अ
 त्मजीयुमसंयन्ताः मरुतीन्दहेऽपवन् ॥ तद्यवकृतिच ४ कथा ० तं विद्याद्वक्त्रयातक ॥ ५ ॥ न्यायनायाडिर्नचिह्नं ० वाक्कनश्च कनपुय ४ स्वाश्वयत्तुयकस्य, तं विद्याद्वक्त्रया

५३

इति

तक ॥ ६ ॥ एतन्मनसाह यार्हस्य जलार्थं यनि आवत ४ ॥ विद्युत्तान्त्रं यवनतयसु. तमाद्रुर्वक्त्रयातक ४ ॥ ७ ॥ यन्मर्दिनस्य वाच्यस्य यामितस्य जडस्य च ॥ कनदास
 स्य सर्वस्व ० तं विद्याद्वक्त्रयातक ॥ ८ ॥ य ४ य ८ थ ति सस्य क सार्धं वामुति सि ४ कन ० ॥ द्वययत्यनू रिहाना तं विद्याद्वक्त्रयातक ॥ ९ ॥ द्वयसंनयकदहाना ० द्विजानीश
 कुमिच्छता ॥ विद्युत्तान्त्रं यवनतयसु तमाद्रुर्वक्त्रयातक ॥ १० ॥ वनचवाह. साहाना. द्यालि. साश्वयनामिन ४ कनपु मिच्छति यानाक ४ तमाद्रुर्वक्त्रयातक ॥ ११ ॥ साक्ष्यद्व
 य ४ य ८ थ ज्ञाननयन्यथावदत् ॥ लाहाद्वमाद्रुयाद्या वि. तं विद्याद्वक्त्रयातक ॥ १२ ॥ यशुमाच्यश्चलाकाना ० नयनं यवनतय ४ ॥ उद्वेकं गजनक ४ कन कमाद्रुर्वक्त्र
 यातक ॥ १३ ॥ एतन्मनसाह यार्हस्य जलार्थं यनि आवत ४ ॥ यमिष्टिजडवाच ॥ अहवावक्र. लक्ष्मण. कर्मलोवक्र. हातवत् ॥ एतत्तु
 तमाद्रुर्वक्त्रयातक ॥ १४ ॥ एतन्मनसाह यार्हस्य जलार्थं यनि आवत ४ ॥ अहर्विष्णोश्च य ४ ॥ यमिष्टिजडवाच ॥ अहवावक्र. लक्ष्मण. कर्मलोवक्र. हातवत् ॥ एतत्तु
 तमाद्रुर्वक्त्रयातक ॥ १५ ॥ एतन्मनसाह यार्हस्य जलार्थं यनि आवत ४ ॥ अहर्विष्णोश्च य ४ ॥ यमिष्टिजडवाच ॥ अहवावक्र. लक्ष्मण. कर्मलोवक्र. हातवत् ॥ एतत्तु

अथ ४ ॥ अथि विनड वाच ॥ वाक्क (वाच) ४ वृत्ति शुद्ध अननाना माहिता ॥ नवयद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 प्रत्य, खल्ये वाचदिवाव ४ ॥ आग्निकुसुहा ४ सवा ४ क्रीवनी दहे निवयजा ॥ २ ॥ उत्तमवद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 साविद्वलीकृता ॥ ३ ॥ वाक्क (वाच) ४ वृत्ति शुद्ध अननाना माहिता ॥ नवयद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 यत्रोवाक्तेतरीकुहा आग्निकुसुहा ४ सवा ४ क्रीवनी दहे निवयजा ॥ २ ॥ उत्तमवद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 सचतानन ४ ॥ नोसहोयोवृत्तिशुद्ध ॥ मानुखल्यनकयो ॥ १ ॥ तिथिगुणनियमायना, वृत्तिजम्बुकदाननो ॥ तमासत्वा समकय, गृगालंकीकृतवानन ४ ॥ ६ ॥ गृगालंकीकृतवानन
 म (अ) वाच, वृत्तिजानिमनूस्मनन् ॥ वाननड वाच ॥ किंत्वयायायकीकर्म, कर्तव्यं दृष्टं नूदानन ॥ १ ॥ २ ॥ यनस्मग्नानमनक ० वृत्तिरुद्रसिद्धिदिता ॥ गृगालंकीकृतवानन

६३

वाक्क (वाच) ४ वृत्ति शुद्ध अननाना माहिता ॥ नवयद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 वाक्क ४ कर्ममयनतद्वद ॥ १ ॥ वाननड वाच ॥ वालदा निवृत्ताना लालान्यवद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 कथयित्वा, कर्मदायीयनस्यन ॥ गृगालंकीकृतवानन ४ ॥ ६ ॥ गृगालंकीकृतवानन
 सीगय ४ ॥ १ ॥ गृगालंकीकृतवानन ४ ॥ ६ ॥ गृगालंकीकृतवानन
 अथ ४ ॥ अथि विनड वाच ॥ वाक्क (वाच) ४ वृत्ति शुद्ध अननाना माहिता ॥ नवयद्वेतिथेनयत्त, कतव कि वितामरु ॥ १ ॥ रायड वाच ॥ आनदद्यान्युति
 यनस्यन ४ ॥ गृगालंकीकृतवानन ४ ॥ ६ ॥ गृगालंकीकृतवानन

१

यः ॥ ३ ॥ कृत्स्नसतावयवैः ॥ यस्यावाभजलाग्रय ॥ गवः ४ विवकि यानीयः ॥ मनूया ४ यगवस्तथा ॥ ४ ॥ यत्विवकि जलं तव स्नायकविश्रमनिवा ॥ गज
 गकर्तृकत्सर्वैः ॥ यत्नानकरुलीकृतं ॥ ५ ॥ वयंकालगतगुणगुणलिलं यस्यातिष्ठति ॥ अग्निहोमरुतस्य यवदकिमरुतस्य ॥ ६ ॥ यस्यावाग्नेमिभकालं
 गजगसलिलं रुधेन ॥ वाजयथाति यागानां ॥ द्वात्रिंशत्तन ४ रुतः ॥ ७ ॥ निदाद्यकालयानीयः ॥ गजगयस्यावायनं ॥ नाजस्ययाश्वमभ्याः ॥ सहलं समूया
 भूत ॥ ८ ॥ गजगसर्वसत्ता ० उवडीर्दिया निसृ ॥ तस्मात्सर्वस्मिना नाज कजगनीहकानयन ॥ ९ ॥ कृत्स्नकानयनं वसः ॥ यूनय ४ सनसं गय ४ ॥ साग
 स्मानरुत ४ कय ४ सूवदुतजलकृत् ॥ १० ॥ ननककृत्पिपिह ० कालयदविचानयन ॥ यस्यावाजलं कथं विवकि सर्गजलं ४ ॥ ११ ॥ सनभाविजं नजा नाज
 दवदैवदि विभाहै दत ॥ वात्तावद्वनसदा नः ॥ दमिसर्पि सुना गुतः ॥ १२ ॥ तावत्तियासानायति यावतायनयायन ॥ जीवकी वान्नबहिता दिनानि सूवद्वनयि ॥

५१

॥ १३ ॥ हृदयिकायनहिता, दिनजीवमकं नजीवति ॥ कृथान्यस्यद्यठान्यस्य, नकृन्त्यस्यतानन ॥ १४ ॥ सिधेत्यन्यददत्यन्यं सधुतेरुलगागिन ४ ॥ तस्माददतिधा
 निहाः ॥ यानीर्दयातिनामिह ॥ १५ ॥ सददातिनवयाना नावकवोयसं गय ४ ॥ वनलं सर्वमाद्यान ॥ नायदानस्यचरुल ॥ १६ ॥ अत ४ यनं यवद्वामि वद्वाना
 मवभायनः ॥ वद्वयुत्पलतावत्त, ख नकृन्तातय ४ ॥ १७ ॥ यतता वद्वजात्यसु, तस्याभायरुली १२ ॥ यमुभाययनवद्वान् क्वाययुत्पलतावग ॥ १८ ॥ सर्व
 सत्तायभायनः ॥ सयातिवमंगति ॥ क्वाययुत्पलतावग ॥ १९ ॥ लायि वचित्वादगा ॥ मींश्च ननभाननर्व वजन् ॥ दवंगन्यर्वा ४ दिनभानग ४
 सुकता ४ ॥ २० ॥ यमुवद्विमनूया ॥ संयजनि सदा रुतः ॥ यूनय ४ सनसं गय ४ ॥ सहलं ययितनकृत् ॥ २१ ॥ क्वाययागुमनूया ॥ यमुवद्विमनूया ॥ यूनय ४ सनसं गय ४
 वाथरुलायगभा, य ४ वादयानस्य गयि न द्विजा य ॥ २२ ॥ समुददगा वनदवयन लनदयिहानवर्नसूना ४ ॥ तस्मात्सूवद्ववावद्वानाया ४ ॥ यथादिवीकृता ॥ २३ ॥ यून

दानव

वत्पुनिवाल्यां यः युगाक्षयमर्तिः ४ अन्ता ॥ किञ्चमविमूखेयुगे ४ कवलीयाथदिगिति ४ ॥ २४ ॥ इमा ४ युगावर्गजयः यनाथिकानवकथ ॥ ययययदुलकाया मूलका
लदावृत्ति ४ ॥ २५ ॥ यनयामयकवृत्तिः गालयनियित्द्रुमा ४ ॥ इतालमयिसंयकः ० कायाययदुलादिति ४ ॥ युजयन्यवतनवाः मुनिवद्वयवर्जिता ॥ नयित्द्रुमयजिव
नीः इमाद्वितवर्गमयि ॥ २६ ॥ गानयनित्तान्गयवत् सर्वस्यामिथदादिता ४ ॥ तगयः गकद्वद्वययीः वृद्धयकाश्चधादिज ४ ॥ २७ ॥ प्रनयनमिनूयायाः मा
दकिप्रिदले ४ सह ४ ॥ वृत्तिदाससमूहयनगवद्वययलीः ॥ यमिहिनदवाच ॥ प्रकयतिवतः ययः ० किम्यायक ४ युनवद्व ॥ वृद्धिदामयचर्गाः गयः श्री ५७
ययनिधवर्त ॥ १ ॥ लायडवाच ॥ प्रकयालीवर्तनाज न्यतानार्थयगयन ॥ यथमाय्ययययजाया दामेवविमविता ॥ २ ॥ सकाना ० विमविताया श्रीमद्वन
वनकामत ४ ॥ डाजकजावर्तवायः ० दानकी श्रीनिधवतान् ॥ ३ ॥ अनाययविमविता यनदानायययन ॥ तय ४ दानविमविताया ० दायकयययययययय

॥ ५ ॥ नानुजल्वनाभयत्वं सर्वेषां निश्चयनात् ॥ अतिशयसर्गकष्टं सर्वेषां बुद्धयुक्तं ॥ ७ ॥ एकयत्नीवर्तं प्रकृतं तस्मात्ताकं वृत्तमकृतं ॥ अतो गच्छततया
यि सकानार्थं तको मतः ॥ ८ ॥ या विदवा नृपवद्वामि कार्हिताय मनीषिणि ॥ नानां कामिनीष्वेव शो वने गतिवतसा ॥ ९ ॥ माघति वमदा नृपु, सनादृष्टमनेयनि ॥
यस्मादृष्टिमदानां, तस्मात्तायनिवर्जय ॥ १० ॥ नक्षत्रप्रसदी नक्षत्रातिहाय लक्ष्यं ॥ सादिक्षानक्षत्रास्यं, सनाभेभादि यत्नः ॥ ११ ॥ चिकुरि किंगता
यि क्षिप्ति, मनाभादुचनं नृप ॥ तस्मान्नक्षत्रं चिकुरि किंगता मयि ॥ १२ ॥ प्रकृतविष्णुमासा हि क्षिप्ति त्वच्चान्नक्षत्रकनवनाः ॥ स्वतावापु चिदुर्गन्धः नमस्तु
नतावृक्षः ॥ १३ ॥ आबोला नृपदयसं स्त्रावे भादि यकी नर्गं चिकुरि ॥ चन्दनायु नृकयने, सग्वचकनकादिनि ॥ १४ ॥ द्रव्यलोच्य विता नागः विनागं कुर्युर्नयथ ॥ आली
कनाति यूनवः ॥ स्वकाका कामभादिता ॥ १५ ॥ द्रव्यतन्त्रमर्थय, यद्यच्छिप्ति गितान् जनान् ॥ गणटीकयुयटकनः वृक्षसूयकमर्हः ॥ १६ ॥ यीष्टु क्षा पुष्टिद्वाना का

सानक ४ शुचि ४ कथः ॥ यदिकु प्रकृति स्थाया त्वं च मनस्वादि ति ४ ॥ १७ ॥ दिगम्य नाम लेर्दिस नत ४ स्ना कानू कानय ४ ॥ निष्काम निजि ५ ४ काथा थ
 नन न्यतथा यित ४ ॥ १८ ॥ कभातय किनाम नन ४ जिष्णु गला कथा ॥ वसं शुचि गवामा ना कस्य ५ दयि था यितः ॥ १९ ॥ यदि त्रिदाव त कस्य नत व झात री च
 य ४ ॥ मृग ५ नित विट् प्रवि वस म्यय कला म ४ ॥ २० ॥ कस्य ५ नम दना न्म का वसमान् स सु दान नः ॥ वस नि था यितं दृक्का ५ यम लाला व नान ना ४ ॥ २१ ॥ य
 काम य नि ती चै व ननु ल्या ना स्था यत न ४ ॥ कौ द मू द व रु ने व य व ता शु क ५ नितः ॥ २२ ॥ दुर्ग म्भ मल दि ५ न व ५ नान्दी क री ज गत् ॥ न्वं मा न्म ५ नित व ५
 स्ना य म ऊा स्ति य उ ३ ल ४ ॥ २३ ॥ अरु न मान्म मा हाः काम य नी न ना क्षि यः ॥ आ क र्णु ना सा दी मला स्था क ण न र व नू का ॥ २४ ॥ चिक ४ मान ४ क्षि री नित य मान
 शुचि न यत ॥ कठिन था तिला दू नः ग द्द मा क र्णु था यित ४ ॥ २५ ॥ द्वा त्वा ग म्भ न दू कौ दू का नन ४ री स न द यि ॥ दू दू ५ जात काल उ अ कु त वा य ता द न ॥ २६ ॥ किं

नाम ४ कामिन ४ कामः यश्च कि कु कल वनः ॥ यान्य व मल वाही ति दू ति क्षि दा सि था यितः ॥ २७ ॥ गान्य व त्व ल का म्या नि अरु व न्म वि र्ग व ना ॥ नय ४ यत ५ व वि दू
 ४ कल नी कृति ता मि व ॥ २८ ॥ य स ना च स मा वृ ह ४ स कामी न म ग किल ४ ॥ य द्वा का ल वि व ना या द द्वा ना था ४ कल व लः ॥ २९ ॥ क मी जाल स ना का र्णु था नून क ४ मू द
 ति मा ४ य म्भ य म्भ य द ५ य का था ल्क र्णु यित ४ ॥ ३० ॥ नश्च द हि जन ४ म का वे ला म्भ क न जा स्य ति ॥ यदि ना मा स्य का य स्य य द नै न द हि री व न् ॥ ३१ ॥ द लु मा दा य ला
 का यः शु न ४ का की श्च वा न य न् ॥ स्ना ना दी जा द य दू म्भ नि स्य द्वा नि अ ना द यि ॥ ३२ ॥ काम म ५ क र्णु च त्वा ल्क र्णु ता द्वा शु चि वि दू ४ ॥ न व दान व म्भ मा लिः री दू द ना शु
 य मला ४ ॥ ३३ ॥ गान व कुी न नि न्म का ग म्भ दा लि अ व म्भ त ॥ अ म्भ व ली स ता या वि अ नो ग द्वा त ता मा यि ॥ ३४ ॥ स काना र्क न का मा र्थ वे द वा क्थ य कि न ४ ॥ ग जा वा य व ली
 वा य ४ क र्णु न व द्वा म व व ॥ ३५ ॥ मै थून न त य ५ व त स्मा र्क य नि व र्ज य ॥ य म्भ ल्क र्णु री मि नि ॥ दू त म ५ न य म्भ ति ॥ ना ग म्भ ल्क र्णु म्भ य न कि क्षि र्म म्भ य म्भ ति

॥ ३३ ॥ ॐ निहाससमस्तशुभं ॥ १ ॥ यमिहिनडवाच ॥ कनकमविजाकन, धनत्वमयजाचन ॥ कनकामयनडनु, तन्मवृद्धिदितामह ॥ १ ॥ सीमाउद
 व ॥ अरुणकथयिष्यामि, सर्वभगदण्डन ॥ यत्कृतानमयानमोह, मदीयास्यसिद्धवत ॥ २ ॥ यतवेद्योजाचनधन, यतवेदविमयन ॥ यतर्वननकेधानः
 दृष्टनैदेवनेनयि ॥ ३ ॥ सतर्पयवनाद्यस्ययुक्तार्थानुकोक्तना ॥ मातौनवा ४ संयमचैत, आयना ४ यतयानिभू ॥ ४ ॥ शुचभाहयुगावत्स, वाक्कव ४ संप्रितवत ४ ॥
 नाम्नायकानेयनरयान, तथाथवनयाग्निन ॥ ५ ॥ स्वाध्याययुक्ताहमव, आगनृथयागविन ॥ नतायुक्ताविमानन, युककालदयनस ४ ॥ ५ ॥ युकसमदमायाचै, दा
 व्यायुक्तस्यतत्त्ववित ॥ वक्रयुगासदायुक् ४ हित ४ तयसिमाद्रव ॥ ६ ॥ युकामेयुकार्यम्, यदयुक् ४ स्वकर्मभि ॥ यल्लार्कहितयुक ४ सत्यैः शेषवनिहय ॥ युकाम
 भूनवाक्षव, युकसातिथिदूजन ४ ॥ ७ ॥ आधागनसंयुक्ता, युकार्द्धविवर्जन ॥ ८ ॥ यागहाससदायुक्ता, यस्मानविजिगायता ॥ सर्ववत्समावाता, मादकीहीजिग

दिय ४ ॥ ९ ॥ वक्रयुगानिविजन, वनतस्यगतानिवे ४ ॥ तस्यवृद्धिस्तजाता, ताथतिगमनंयति ॥ १० ॥ यद्यतीथजिल्ल, आवयीयकालवलः ॥ सतीथविविध
 स्नात्वा, तास्त्रनश्चादरीयति ॥ ११ ॥ कनजलानमस्त्राभा, दृष्टनैयतिथयन ॥ वक्रनसमयशाका, तीवथतान्मूलीयत्न ॥ १२ ॥ नल्भकलकीनाद, ण निजिल्लवृद्धव
 र्जित ॥ तादृक्काविकृताकाना, थावाल्भयान्करीकनान् ॥ १३ ॥ ॐ वत्सकुरुदथा, निष्ठर्त्तमात्यलावन ॥ अवलम्बतता, वेद्यः ॥ यासमस्तु अद्वनत ४ ॥ १४ ॥ यद्युद्ध
 मभ्यनाराभा, कयुर्वैविकृताहृणः ॥ किम्वाशुर्नैवकर्म, यतयाका ४ हृवे ४ कृतः ॥ १५ ॥ कथम्वाप्रकर्तसर्व, यद्धिताचेतद्रयताः ॥ यतडवाच ॥ द्रवियागार्द्धितानि
 त्वाः यनइ ४ त्वसमाधिता ॥ कृतताग्यवर्तसर्व, यनद्वर्त्तविधेय ४ ॥ नजानीमादिष्णतासंत, विदिनैः णवनिइ ४ खिता ॥ १६ ॥ कृपगहामवेमूटा ४ विष्णवाक
 मजावयः ॥ नमातानयितास्माकः, यतर्वकर्मति ४ स्वके ४ ॥ १७ ॥ गतासुसहसागत, इ ४ थावगसताकला ॥ दर्शननचनवृद्ध, क्रादितायाचितावयः ॥ १८ ॥ मू

दूतं किं वदामि. दूतं सर्वसाधिनः ॥ मम यद्यपि विरतिनाम. एव ४ श्रुतीमुखः स्मृतः ॥ २० ॥ गायत्री गणेशक (येन) यक्षे भाले खकस्य ॥ वाक् (ते) वाच ॥ प्र
 तानां कर्मजातीनां नाम्नाहं कुरु वदथः ॥ २१ ॥ नामां हि कान्तवृद्धि. अगर्वं स्याद्वानवानः ॥ अत उवाच ॥ मया श्राव्यं सदा तु कुरु. दत्तं यद्यपि विरतिं दिज ॥ २२ ॥
 एतत्त्वानममूदिष्य नाम यद्यपि विरतिं मम ॥ सूचिका वदुवानेन. विद्याद्वन्ताद्यकां द्विजः ॥ २३ ॥ एतत्त्वानममूदिष्य. एव ४ श्रुतीमुखः स्मृतः ॥ गायत्री गणेशविद्यायः
 याचितं वाक् (ते) नवे ॥ २४ ॥ एतत्त्वानममूदिष्य. गायत्री गणेशविजसुकुमः ॥ एकाकी मृदुमस्त्राणि. गालमानुष्ययन्नतः ॥ २५ ॥ वाक् (ते) नानां रयने वयं. भादकश्च न वाच
 न ॥ यूनार्यभो न माह्वय. याचिता विनिश्चयैस्सहः ॥ २६ ॥ भनकमपि विद्याकन. खलवानामेतः स्मृतः ॥ अगर्वं कर्मसि (येन) निरि ॥ द्यौर्नामानि च दिज ॥ २७ ॥
 ॥ महुनमैलेखकायाणि भादकः ४ वर्धमानतः ॥ गायत्रीकैः ४ गः ४ वयुर्गायकः ४ श्रुतः ४ सूचिवक्तुः ॥ २८ ॥ उचिक्तेः ४ मः ४ कखलयाव. यस्यावयवविषयः ४ ॥ सप्तमे वि

[illegible]

जायतनन ४ ॥ ३१ ॥ तीस्र उवाच ॥ प्रवृत्तिवतिवे विप्र, आकाशद्वन्द्वे ४ स्वन ४ ॥ अवनयुक्ता वदित्वा, दवेर्मूका द्विजायनि ॥ ३२ ॥ यक्षे दिव्यविमाना
 दिनि प्रगतामागता निव ॥ स्वर्गगता नि विमानके ४ यन्त्रे र्यस्ययनमू निः ॥ ३३ ॥ नय विंशसंताया, त्युत्थसीवा कनचन ॥ यस्मात्ता विद्वि जायमाना ॥ तीर्थ
 स्थावि विमिश्रित ॥ ३४ ॥ यच्छेदं गन्धियवीयः यक्षे प्रनय ॥ ३५ ॥ नय ४ ॥ गृह्यादा विचारका, नय प्रगता नि जायत ॥ ३६ ॥ वृत्तिहाससमूह यक्षे यनाय
 त्वात ४ ॥ वेगम्यायन उवाच ॥ गलतल्यगती तीस्र वद्वि कन विनामरु ॥ यनि वद्वि सैति अस्मात्ता, कायु ययय विहिन ॥ ३७ ॥ नय वाजायनकन, अस्मात्ता
 जिनद्वि ४ ॥ अनवीं प्रमदायाह, ४ गन्धुह ४ कनै गलामरु ४ ॥ ३८ ॥ तीस्र उवाच ॥ अननायु न सैयके ४ वदु था नक भाजन ४ ॥ उवाच ती सुतवा नि, वृत्त
 वानि जायत ॥ ३९ ॥ यच्छेदं वद्वि नय ४ ॥ वद्वि सैति अस्मात्ता, यययु थी म्वाव ॥ ४० ॥ कनका ४ वद्वि नय, वद्वि सैति अस्मात्ता

२३

वाक्कम गृहदद्या कथायुक्ता वद्वि ॥ ४१ ॥ श्रीगन्धर्वु सोवर्कु कावथद्वे स्वग किन ४ ॥ गुठनविठि की कवा, स्थायय कयराजन ॥ ४२ ॥ यमनस्त्रा यनि
 वदु नक वद्वि नय यत् ॥ गन्धर्वु सोवर्कु कावथद्वे स्वग किन ४ ॥ गुठनविठि की कवा, स्थायय कयराजन ॥ ४३ ॥ यमनस्त्रा यनि
 वद्वि नय ४ ॥ ४४ ॥ दगथाजन विक्कीरु, मधुलनय वद्वि ॥ ४५ ॥ गन्धर्वु सोवर्कु कावथद्वे स्वग किन ४ ॥ गुठनविठि की कवा, स्थायय कयराजन ॥ ४६ ॥ यमनस्त्रा यनि
 ॥ अनवीं प्रमदायाह, ४ गन्धुह ४ कनै गलामरु ४ ॥ ४७ ॥ तीस्र उवाच ॥ अननायु न सैयके ४ वदु था नक भाजन ४ ॥ उवाच ती सुतवा नि, वृत्त
 वानि जायत ॥ ४८ ॥ यच्छेदं वद्वि नय ४ ॥ वद्वि सैति अस्मात्ता, यययु थी म्वाव ॥ ४९ ॥ कनका ४ वद्वि नय, वद्वि सैति अस्मात्ता
 वद्वि नय ४ ॥ ५० ॥ वद्वि सैति अस्मात्ता, यययु थी म्वाव ॥ ५१ ॥ कनका ४ वद्वि नय, वद्वि सैति अस्मात्ता

[illegible]

यत ॥ अथ नाना (अने श्रव्यः) वाक्कल्लं नतन ४ ॥ १२ ॥ उक्तं मन्त्राणां ब्रह्म रिज नतन ४ ॥ अस्ति दंष्ट्रा सानित्यः यथा यि यनि का कथित ॥ विमक ४ सर्व वा यय ४
स्वम्लि कां सग कृति ॥ १३ ॥ ॐ तिहा ससमूच धन द्रव्य कल्य ४ ॥ ॐ ॥ १ ॥ ॐ ॥ वेणु म्या न उवाच ॥ ननत ल्य गरी रा यः वृद्ध कू नू चिता मरु ॥ मूर्द्धा वि ल म्य अ
मोत्ता यय द्धु दं य भि छिन ४ ॥ १ ॥ य भि छिन उवाच ॥ न ग वी (अथु मि क्क मि स ल वा क्य यं स्ये कूलः ॥ यथा ग्व दल या वा कः तन्म मा स्वा उ म दं सि ॥ २ ॥ रा म
उवाच ॥ श्रो म्य अमं य व द्ध मि स ह्यार्ज व गु ल वि न ॥ काम नू य स्य वा य स्य अत्रा स म्वा द मू ल मः ॥ ३ ॥ माथ भ वि य ध न म्य अत अ न्य स मा कूल ॥ ताना जन य दा की लु य
ह्य स व वि द्ध वि न ॥ ४ ॥ य ग सान ग नी न म्या य मू ना ता न मि सा धि ता ॥ अर्द्ध व द्ध य ता का ला वि द्धु न नि (अ वि ता ॥ ५ ॥ ॐ द्ध य छि य जा का लु (अ वा रि नू य (अ रि नू ता ॥ व द्ध
दि ज स मा का लु वि द्ध हा सु वि द्ध या ॥ ६ ॥ य व मा ल च न म्या व स्वा गित द्ध य नि मि ता ॥ वा का ना द्ध य ना ला नि द्धु य य नि खा दि नि ॥ ७ ॥ द व ता य त ने दि यो ४ क द ली य य

न ४ ॥ महागुहादनीवकु. श्रीद्वजानवाय ४ ॥ २० ॥ सामिलानामभर्मात्मा. स (गम) धो (गम) हितनत ४ ॥ अक्षिता (ये) रु (ने) र्य (गम) नैयविलक्षति ॥ २१ ॥ गच्छतु
 आलुवित्रहा. वदुलाहृदसूया ॥ वनकीयायूनन ४ ॥ अनुसमूहकि ॥ २० ॥ अक्षिद्वैरानीयाय. निष्ठितिश्चिदावृत्त ॥ समाद्यविदिगारु. स्वर्गवाकासि (अनू
 क ४ ॥ २१ ॥ आद्यस्यवचनं श्रुत्वा. निष्ठुर्नभामरुर्ध्वः ॥ तद्वृत्तीतिर्नैवालः ॥ चन्द्रविम्बसमप्रताः ॥ २२ ॥ वत्स्यस्यनिसा (अनू ४ ॥ अक्षितागिद्विदामरु ॥ दक्षकीयवृत्ता
 केन वदुलायूनवत्सला ॥ २३ ॥ नूदकीकनूपधव. निनासायूनदग्निः ॥ दृष्ट्वाशुवदुलीयाय ४ कन्दमानीसूद ४ विताः ॥ २४ ॥ उवाचवचनं ध्यानः ॥ वदुलकिंयचयन
 ॥ देवाहृद्वासमूहनी. त्वं समाद्यदृष्ट्या ॥ २५ ॥ निनूदन्वाहसत्वात्. गथागजाविर्नैव ॥ विदिर्नैवृत्तलाक स्वर्गवाकासि (अनूक ॥ २६ ॥ मत्स्यस्यविदिगाद्येव
 दथकिंमनू (गम) वासि ॥ यद्युच्ययूनयाय ४ किमर्थं नूदिर्नैव ॥ २७ ॥ कोटुर्कमग्यंजार्त. मनःपतययग्यत ४ ॥ आद्यस्यवचनं श्रुत्वा. वदुलावाकमवृत्ती ॥ २८ ॥

॥ वदुलावाच ॥ दत्तुमर्हसिभनाथ. कामनूयानभायुन ॥ त्वं समाद्यालाकस्य यमिगाननविद्यन ॥ २९ ॥ जा विताथः न (गम) वासि. वाक्यंमनःपमसा
 जानस्यदि (अ) वा मत्स्यद्वैजन्ममृतस्यव ॥ ३० ॥ तस्मादयनिहायर्थ. न (गम) वासि मन्मथिय ॥ दवेनयिसदासर्व. मत्स्यमवसेद्वृत् ॥ ३१ ॥ तस्माद्वदुलमवेका
 आद्यस्यवायिमिवेकथः ॥ किनुश्चरुवसाद्याय. दृष्ट्वावननूदितमया ॥ ३२ ॥ अक्षिमर्हदिसैगाय. कृत्तुर्नैव (अ) द्वा मर्हसि ॥ अय्यवयसिर्वर्तकि यद्युताहं मन्मथिय
 ॥ ३३ ॥ वृत् ४ यथमजानस्य. यद्युममवालक ४ ॥ द्वा नयिवनिमयूय. रुद्रनाद्यायिजिद्युति ॥ ३४ ॥ सच (गम) वदुलवत्स ४ द्वा अक्षिमामुदीक्षन ॥ वत्स्यतमनू (गम)
 वासि. कथंजीवतिमसूत ४ ॥ ३५ ॥ तस्यद्वासिकुनदातुः ॥ यद्यश्चरुवसैगता ॥ वाययिवागैर्नैवै मवलि कचमूर्धनी ॥ ३६ ॥ सत्वीनामय्यीवाच. सन्दिह्यवदिगादिर्नै
 नायून ४ यत्नागमिष्यामि. यः थर्हं रुद्रादिष्यासि ॥ ३७ ॥ यद्यनाहंमिष्यामि. यूनयायूनवालक ॥ वदुलावाचवृत्ता. मत्स्ययूनववृत्ती ॥ ३८ ॥ आद्यउवाच

किं कथं वक्तव्यः मन्त्रं किं वक्तव्यं ॥ गच्छति सर्वद्विगति, मानिनी च विचरति ॥ ४० ॥ त्वं न ४ कथय विद्या, यद्यप्युक्तं रात्रि ॥ न सकान्ततथादातः न सा
 तानयितासुत ॥ ४१ ॥ मन्त्रवक्ता यनिगुः ननकालेनयाति नः ॥ कथं त्वं (ग) कर्तुं गत्वा (ग) योजनसमाकूलः ॥ ४२ ॥ वयं ने नदिनं नम्यः वालवत्स विद्वभिः ॥ नृप
 तन्दवलाकस्य, स्वर्गुल्येतन्मय ॥ ४३ ॥ निर्व्यस्यदिनं नम्यः सर्वदेवतयुक्तिः ॥ यत्त्रिगुणविद्यानां मङ्गलानां धर्मगुणः ॥ ४४ ॥ यन्कीर्तय सर्वतो धर्माः नम्या
 नीनम्यमूकमः ॥ (ग) यो मन्त्रानसुद्वेत, यशालक्ष्मी विद्वन्मय ॥ ४५ ॥ यद्यवस्था श्रद्धाकाल, कालेन साहकोद्वा ॥ कर्तुं माननम्य वि, श्रद्धा लक्ष्मी युक्तकोद्वा ॥ ४६ ॥ यन्मन्त्र
 ये ४ यालिनीयुने वद्विद्वद्गतमये ॥ यगातन्मन्त्रसंलाय, वलितास्तुठनादिने ॥ ४७ ॥ वृत्तं कृतं ४ कृतेर्वर्त्ये ४ कन्दमा (ले) ४ समकन ४ ॥ सभाज्ज्ञासन्मन्त्रवक्ता
 द्विनिवर्त्यकते ४ ॥ ४८ ॥ तद्धीकननकनम्यः मानेन चित्तनयुतः ॥ दृष्ट्वा सखीजनं दृष्ट्वा कथयत्यागमिष्यसि ॥ ४९ ॥ यन्मन्त्रानि भवन्ति, विवक्तव्यमिदं तव ॥ ननिनासाति

४५

दत्तानि, वाङ्मयं कनम्य ॥ ५० ॥ वद्वलावच ॥ यथमं जान ४ यथाभ, म (ग) नृपती भवच ॥ दृष्ट्वा सखीमर्त्यवालः (ग) यो मन्त्रविलक्षकान् ॥ ५१ ॥ (ग) यो मन्त्र
 मूयामन्त्रजननी धर्म वि (ग) यत ४ ॥ सय (ये) नागमिष्यसि, यदि मन्त्रं सिद्धं च माः ॥ ५२ ॥ यन्मन्त्रं वद्वद्व्याया ४ मातायितु व (य) नच ॥ ननयाथनलियासि, नायुत
 मिष्ययूनयदि ॥ ५३ ॥ यत्त्रिगुणलूचकानां धर्म, भुक्तानां गलदायिना ॥ ननयाथनलियासि, नगमिष्ययूनयदि ॥ ५४ ॥ (ग) यो वक्तुं कथयत्यर्थ ४ मयसि किं नाउयकी वा
 ननयाथनलियासि, नागमिष्ययूनयदि ॥ ५५ ॥ यन्मन्त्रं लूचकानां धर्म विवर्त्ये वद्वद्व्याया ४ मातायितु व (य) नच ॥ ननयाथनलियासि, नागमिष्ययूनयदि ॥ ५६ ॥ कथय कथय मातायाः
 विद्वय ४ कृन्मन्त्रन ४ ॥ ननयाथनलियासि, नागमिष्ययूनयदि ॥ ५७ ॥ द्वितीयं ४ यन्मन्त्रं वद्व्याया, श्रद्धा नकी यद्यप्यति ॥ ननयाथनलियासि, नागमिष्ययूनयदि ॥
 ॥ ५८ ॥ गृह्यस्य गतं मियः निनासी यनिगच्छति ॥ ननयाथनलियासि, नागमिष्ययूनयदि ॥ ५९ ॥ सद्यस्त्वन्मन्त्रादद्या द्वितीयं दातुमिच्छति ॥ ननयाथनलियासि, ना

गमिष्यन्त यदि ॥७९॥ द्यूतकं द्यूतयत्यायः यन् द्रव्याद्यहानम् ॥ गतवायनलिया मि. नागमिष्यान्त यदि ॥८०॥ इहिवृत्तेवच ४ साक्षे जूतरी
तायनयदि ॥ निक्षयन्तयन्तु विष्मयनेवमानव ॥ गतवायनलिया मि. नागमिष्यान्त यदि ॥८१॥ वनेचुयसे येथाने नगमिष्यान्त यदि ४ ॥ वृद्धासं
यत्तयैवाद्य ४ यन्तवचनमवधीत ॥८२॥ द्याद्युडवाच ॥ संजातवत्तयास्माकः सयथेवदेलनव ॥ कदाचित्तन्यसगत्वा मूर्खासोचं चित्तमया ॥८३॥
ज्यादिबुवनेकचिक्कयथेनास्तिवाठके ॥ द्याद्युडवाच ॥ द्याद्युडवाच ॥८४॥ लोकास्तिनास्ति काकेचित् मूर्खासोचं चित्तमनिन ४ ॥ नामयि
सकिनवृद्धः तकाबुठान्तेदंयथा ॥८५॥ गतवायनलिया मि. नागमिष्यान्त यदि ४ ॥ कृष्ट्यागामदगनात् ॥८६॥ जूतथमच्यित
क्षानि दण्डिन्ति यणला ॥ समनिम्नान्नानाव चिक्ककर्मविवातथा ॥८७॥ द्याद्युडवाच ॥ लोकायः मन्यतनायकानि १ ॥ काच्योर्नजन्तलोका नला

[illegible]

वदलासत्यवादिनी ॥ अतुल्यतामृ (गच्छत, वृत्तातायुर्वीयति ॥ ८८ ॥ अश्रुवृष्टिमुखादीना, वयमानासु ८८ खिता ॥ कननीवस्वसकीसा, यतिता (गणक गणगन ॥
 ॥ ८९ ॥ कविनीवदिताता (गत, गृहीतामलिलालुवे ॥ अणकात्मयनिगता, विद्यविनयकिमुद्रमुद्र ॥ ९० ॥ साधु (गणकलंगला, वदलाद्वयेन विविक्ता ॥ शुक्ल
 दुवत्सक्रान्तः यनिष्ठावतिर्संस्तुती ॥ ९१ ॥ उवस्यतिर्तवत्सः वाद्यययिकिल्लं ॥ तं द्यायमातलवत्स ८ सं किनयनिद्वक्ति ॥ ९२ ॥ उवसुवाच ॥ ननयश्चमि
 मिश्रोमृत् ० इमतिवासिदृश्यते ॥ उद्विग्नयोचैविवायिनेदृष्टि, शीतशीतवदृश्यते ॥ ९३ ॥ वदलावाच ॥ विवयुयुक्तनमस्कः कानक्षयदियद्वक्ति ॥ आगताद्वैवश्च
 कनरुकिः च (थय्या ॥ ९४ ॥ अयश्चिमिर्दयुयु, इल्लरंसाहदगते ॥ एकाहमद्यमयीत्वा, वयुश्चकयैस्सयैचि ॥ ९५ ॥ मयाद्ययुगकयः सय (तेनागता
 हः ॥ कामययययययय दानयमात्मजीवित ॥ ९६ ॥ वदलावाच ८ शुक्ल, वत्सावचनमवदीत् ॥ वत्सुवाच ॥ अहंनयगमिष्यामि, यगर्हंगुमर्हसि ॥ ९७ ॥

९७

स्मार्त्तुमनक्षमः वृत्तासहनसं गच्छ ॥ एकाकीनायिमर्कयः ० अम्बावस्यैववादिना ॥ ९८ ॥ यदिमान्महितमाया, वनेयाश्चावनिष्यति ॥ द्याग निमहिरुकां
 अरुमयावविष्यति ॥ ९९ ॥ तस्मादवस्ययास्यामि, वृत्तासहनसं गच्छ ॥ अथवामानतिष्ठस्व, सयथा ८ सवुनमम ८ ॥ १०० ॥ जनन्या विप्रयुक्तस्य जीविनीर्किद्वया
 जनः ॥ अनाथस्यवननित्यः कामना (अरविष्यति ॥ १०१ ॥ नास्मिमाहसंभावय, वालानीकनयाचिनः ॥ नास्मिमाहसमाना (था, नास्मिमाहसमागति
 ॥ १०२ ॥ नास्मिमाहसमश्नहा, नास्मिमाहसमैदृखः ॥ नास्मिमाहसमादया, वृद्धलाकयनययैच ॥ १०३ ॥ सनैयिहृणहिलादि, माताजीवकीजनकव ८ ॥ ए
 वनयनमायम ८ वजायतिविनिर्मित ॥ १०४ ॥ सत्यययनूतिष्ठति, नयानि यनमीगति ॥ मासाद (गणदजह्नीया अत्वाकैलेषु समाकृता ॥ १०५ ॥ वदनेष्टि
 विषेदृष्टे, वयुयकविमूर्तिता ॥ सुनन्तामृगवदत्वा (गायायनिकवत्सला ८ ॥ १०६ ॥ मृगविष्ठासयात्वात्मासायमूहवक्तिच ॥ द्यालोचयिषिचान्युगतामृ

केशु नवत्सला ४ ॥ १०० ॥ कक्षासं निक्षुब्ध निदातुः ॥ कक्षावर्जितेन वि ॥ नवव्यभामिद्याख्याता. मानाव्ययस्य देवतः ॥ १०० ॥ वङ्गलावात ॥ समेव विदितामृत्यु
 नर्तयूगमिष्यति ॥ नवायन्यस्य जातानाः ॥ मृत्यु ४ स्यादन्यमृत्युना ॥ १०१ ॥ अयश्चिमिर्दयूय. माहसन्दर्भमूकसः ॥ अनूतिष्ठस्वमहाक. मतकुशूब
 एयनः ॥ १०१ ॥ स्फुल्लजलच विचल न्यमादनाक निष्यति ॥ वृमादात्यसं चित्रानि. विनह्य किनण्मय ४ ॥ १०२ ॥ नचलाभनचर्कयः विषमहृल
 एष्वचित् ॥ लोतादिना ४ सर्वथा मिरुलाकेयनयच ॥ १०३ ॥ समूहमठवीद (ग) विष्णुकैलासमाहित ४ ॥ लोतादिकौदकायसत्ययः विद्वानयिसमा
 चन ॥ १०४ ॥ लोतायनोमादादिशुक्ला. ददतिना (म) तर्वैकैलदाः ॥ तस्मादर्वनकुर्वैकौर्वीत. यदोमादचानविश्वस्त ॥ १०५ ॥ आत्मादिनैसतर्नयूय नदि
 नव ४ वचस्त ४ ॥ ययैय ४ स्वायदह्य. भुक्त्योनादिसंकट ॥ १०६ ॥ निलम्बायाल्लक्षानिनाः भवयवसनामयि ॥ विद्यनीतानिचिद्वानि. नविष्णुसक्तिव

[illegible]

निष्पत्तीवद् ४ स्वाहा दीर्घमूर्द्धमूर्द्ध ॥ यूगहीनाजगच्छुः सादृष्टकृततांगता ४ ॥ १२० ॥ महायज्ञनिमग्नव. निष्ठनेवावसीदति ॥ विलयवद् यूगलोग. म.
वाचदन्त्यनर्चव ॥ १२१ ॥ नास्मि यूगसमश्नहा नास्मि यूगसमसूखः ॥ नास्मि यूगसमायाति नास्मि यूगसमागति ॥ १२२ ॥ अयूगस्य जनकृत् ॥ अयूगस्य गृहवतः
यूगमजयतेलाका. योगसिद्धिर्वज्र ॥ १२३ ॥ अथ यूगस्य योगस. अनन्त्याथायकल्यण ॥ अन्तर्गच्छिकालायः चन्दनं किं खलूणातलः ॥ १२४ ॥ यूगमग्नयनि
ष्टग. स्थन्नादयिणातलः ॥ तीष्ठादवाच ॥ १२५ ॥ यूगयुगानूका तिनीक्ष्वमूर्द्धमूर्द्ध ४ ॥ १२६ ॥ स्वमातर्गच्छी (गयाः) खनमाना हि दृष्टति ॥ वदन्तावाच ॥ यूथ
स्था (युवनकीमा. मससादमृगमिव ४ ॥ मूका रुकेन जयत्य. यूगदृष्टागमिष्यति ॥ १२७ ॥ साचाहं गतलं दृष्टः सखी चर्चिष्वान्धवान् ॥ आगतास्य वाक्कन. यूनया
स्थामितगवे ॥ १२८ ॥ मातङ्गमस्य भसवः वालि साद्यहं मया ॥ न्यस्तवायं दोहि ४ किमग्नयदमीत्यरुः ॥ १२९ ॥ विपूलचम्यकदाभ. लदसून रिमालिनी ॥ वसूष्म

नवप्रतपः महानन्दद्यतः ॥ अज्ञानान्ज्ञानभावावि, यद्वक्तुं न चिदपि चः ॥ १२३ ॥ गच्छामश्च महाराज यच्चाव्यवकर्तुं मया ॥ सर्वसिद्धिगुप्तायता १ सर्वला
कस्यमानन १ ॥ १२४ ॥ सर्व १ सर्वदानित्यः कश्चिन्ममवालक १ ॥ अनाथमवलदीनः यच्चादीर्नसूतमम ॥ १२५ ॥ माहृष्णकारिर्हीनकः रगिन्य १ बालप्रियथ ॥ रगि
नीनामयलूग १ सीधर्नचविष्णवत १ ॥ १२६ ॥ याल्याबाला निसर्वाणि १ थाय्य १ मस्य १ सवृणवत् ॥ वनर्नविमभक्तान्, गच्छन्तं यत्नः गच्छन्तः ॥ १२७ ॥ अकार्यव्यवर्त
कः सत्यसुखानप्रियतथ ॥ यत्नयुगलस्युगल यासीद्विर्नसमस्तक ॥ १२८ ॥ नाभन्या १ साकनाथश्च, नास्ति यो लोकमानन १ ॥ भादकंदवलाकम्, ना १ दूष्मसाकनाथवा १
॥ १२९ ॥ या १ बालप्रकानाथश्च, यत्नयुगलस्युगलवत् ॥ तस्मादिर्ममद्वचना लूगवत्याल प्रियथ १ ॥ १३० ॥ कश्चिन्ममहाराज यच्चाव्यवकर्तुं मया ॥ नचापिम
कनकार्या, मयू १ सत्य १ कथधेन ॥ १३१ ॥ यत्न १ सर्वस्यजानस्य, हितं मनमयत १ ॥ गृहेर्वदुलावार्थं, मातासत्यश्चदुर्मम ॥ १३२ ॥ निखादयनमजगत्, विद

मूच्यविहिता ४ ॥ अहोयु मरुदाय्यः यदायु वदनमरुत ॥ १४५ ॥ यवद्वयसूचनातीमः वदुलासत्यवाकन ४ ॥ सयवाथे ४ सत्यवाकन. वंदयित्वायतातवा
 त ॥ १४६ ॥ तासितव्यययनन. गम्यततत्यन ४ कथः ॥ वदुलेनेवगकथः अमार्थिकथमरुव ॥ यदालंस्वसूरीत्यका. सत्यलातीगमिष्यसि ॥ अगुगमथयुनागाता
 मभिरि ४ सत्यवादिहि ४ ॥ १४७ ॥ यदायु गसमत्यने सयथेनाक्षियाठकः ॥ उदाककालमरुसंयथाः ग. योमत्ययसर्वमनायका ॥ १४८ ॥ विषयाः
 र्थजुनरीवदय ४ यदायु नोनेन्यादुलयातकानि ॥ उक्तायलीरुवद्याय. यासिनीयासनका ॥ १४९ ॥ अन्तर्गतसत्यस्या सत्यमयनरीतवत ॥ कामिनायुविवाहय
 गवीरुक्ततथेन ॥ १५० ॥ वाक्कल्ययवकोच. सयथेनाक्षियाठक ४ ॥ वदुलावाच ॥ यनयायासनका ॥ वदाम्यवानरीवत ॥ १५१ ॥ नात्माथमस्यरुव
 दुः मत्यमयनरीवत ॥ १५२ ॥ यव ४ संक्षिप्यतगर्ज आचत्यकामुवतिव ॥ १५३ ॥ उक्तेवक ४ सूत्र ४ इ ४ ख मतस्यैवतिवदाम्यरुः ॥ सत्ययतिहितालाका

१०२

अर्म ४ सत्ययतिहिता ४ ॥ १५३ ॥ उदभि ४ सत्यवाकन. नमय्यादिन विलेयति ॥ विषुवयथिवान्दत्ता. वलियातालसाहित ४ ॥ १५४ ॥ कृदनायिवलिर्वद्वि ४ स
 त्यवाकनयति ४ ॥ यवर्हमान ४ लेनेद ४ गतगुगमैकि कित ४ ॥ १५५ ॥ सत्यनरीहिताविष्य ४ यवर्हनेववर्हने ॥ स्वर्गयिवगतिनका ४ सर्वसत्ययतिहिता ४ ॥
 ॥ १५६ ॥ यस्मांलाययनवालेच मः गमीक्षुनलायिता ४ ॥ अन्यथायसुमात्मान. मयथाययुतायस ॥ १५७ ॥ किन्नननरीयार्थोभमत्तायकाविता ॥ तस्मांलेवदिमा
 त्मान. मात्मानेवविलाकयात ॥ १५८ ॥ यतिथननकायन विलायात्मनमात्माना ॥ अगुग (अ) विमलिषुद्ध सत्यनी ॥ र्थदमादुद ॥ १५९ ॥ आत्मायायमलेमैकि ४ ययातिवलमा
 गति ॥ सत्यनवदवावाय ४ सत्यनतयननवि ॥ १६० ॥ सत्यनवर्हनेतिद्व ४ सत्येदहनिवावक ४ ॥ नाक्षिसत्यात्यना अर्म नाक्षिसत्यसमीसूत्रः ॥ १६१ ॥ नाक्षिसत्यात्य
 नात्मा. नाक्षिसत्यात्यनाजति ॥ अगुगभटसदयवै. सत्यभर्कविगियन ॥ १६२ ॥ सत्यैसायनय ४ अतः चयनमक्षिप्यदिशिर्वर्जितः ॥ स्वाधीनचसूदस्वरीचजगत

सत्यैव ३ उलवाहुतः अगुगभटसदयवै

४ या अवलोकय ॥ साधुनात्रिकय ४ सतां कल ४ मर्मनं सर्वं च आतां वलः ॥ चमूकं य वि हि आचम कृति दिवत तद्यति द्वयः ॥ १३७ ॥ अन्तर्भवत्तया यमू निलीया
 दिव ॥ अमूच ॥ ग्रहि सार्धं न वि श्मसा. लाक १ ॥ अयाना हि स ४ ॥ १३८ ॥ एवं वदल जायका. सख ४ सर्व ४ सु ॥ अरुता ॥ दुचुका ४ यन भवाथ. वदली ४ मर्मकी द्विनाः
 ॥ १३९ ॥ सखडुवाच ॥ वदल लीन मस्काया सर्वे न वि सुनायुवे ४ ॥ अर्धं अर्धं अर्धं अर्धं मस्य सखन. दानं ॥ अजिद ॥ अजाः ॥ १४० ॥ वृम ४ किमय कल्या मि यावै ४ मर्म अज
 न्मना ॥ त्यागनायन इत्याया ॥ शेला कर्दि चिदकि न ॥ १४१ ॥ अविधानं च यश्च म. स्या म दयान् नूनन ॥ तदिकल्या ॥ अचिहना मायद ४ सकि कृणवित् ॥ १४२ ॥ नर्व
 अन्तसूक्तस्य नमिना लिनवा ४ ॥ वनवस मरुथोयो. मान्य ॥ अनितशजनः ॥ १४३ ॥ याचिद ४ यायका निव. मान्वादा ननु निद्वय ४ ॥ तमर्मजायन रुद. अमर्म
 यथसा शिन ४ ॥ १४४ ॥ कृतकनच वि श्मसो. तिनैश्च न इनात्मना ॥ याति हि न्या नृदि नित्यः ॥ नान्या नृदि नित्यभाचम ॥ १४५ ॥ निवर्तय मर्तिरुद. गमना यच तं वति ॥ तिष्ठत्तु

१०३

सहासा हि ४ यूनन सहन मयव ॥ १४६ ॥ वृष्य स्यात्तु किनैरुद. मूढव विुत मानिति ॥ वदल जायच ॥ सखवादी मदावाक्का. अर्मिष्ठ ४ सखसं प्रच ४ ॥ १४७ ॥ तथासं द
 म्यतयाय ४ सखसत्यवनाम ४ ॥ यदि अर्मन जानाति. किमर्थं मां वि मूक ति ॥ १४८ ॥ किमय कल्या मि यावै ४ मर्म अज
 नाः ॥ १४९ ॥ अर्मसं प्रचतादव. मूकाद सखवाकृत ४ ॥ अर्वश्च मयिकर्कयः ॥ सखवाकृतस्य यालनः ॥ १५० ॥ दृष्ट्वा ॥ गोपीजनं सर्वः ॥ यनिकु मस्य ॥ अकुलः ॥ वदल जायच ॥
 ॥ १५१ ॥ अर्धं अर्धं अर्धं अर्धं मस्य सखन. दानं ॥ अजिद ॥ अजाः ॥ १५२ ॥ वृम ४ किमय कल्या मि यावै ४ मर्म अज
 न्मना ॥ त्यागनायन इत्याया ॥ शेला कर्दि चिदकि न ॥ १५३ ॥ अविधानं च यश्च म. स्या म दयान् नूनन ॥ तदिकल्या ॥ अचिहना मायद ४ सकि कृणवित् ॥ १५४ ॥ नर्व
 अन्तसूक्तस्य नमिना लिनवा ४ ॥ वनवस मरुथोयो. मान्य ॥ अनितशजनः ॥ १५५ ॥ याचिद ४ यायका निव. मान्वादा ननु निद्वय ४ ॥ तमर्मजायन रुद. अमर्म
 यथसा शिन ४ ॥ १५६ ॥ कृतकनच वि श्मसो. तिनैश्च न इनात्मना ॥ याति हि न्या नृदि नित्यः ॥ नान्या नृदि नित्यभाचम ॥ १५७ ॥ निवर्तय मर्तिरुद. गमना यच तं वति ॥ तिष्ठत्तु

हस्यथ वदन्तायुक्ता तावतः ॥ १०४ ॥ वदन्तायुक्ता देवा सर्वे स्थिते नून ॥ द्विती वन न मसिच वायुमर्क निष्ण कलः ॥ १०५ ॥ वसु दि द्यवतानद्या नक्षत्राणि ग
 र्हे ॥ सह ॥ सद्य विष्णु यथा मय द्य वासि यत्न मूढ मूढ ॥ १०६ ॥ श्वे ॥ श्वे ॥ यत्न वेन दक्षः ॥ मथी नाथ मव वालकः ॥ साधुनां चैव देवानाः सर्वे वक्ष्ये समाजना ॥ १०७ ॥ त
 स्मात्कनूनाया वाल, मनाथ यात्त यि स्यथ ॥ असी क्षि तावत सिन्हा ॥ सर्वे स्थिते नून देवता ॥ १०८ ॥ वन वन न मवली सर्वे लक्ष्मि वालक ॥ नम्यका ण कय न्नाग ॥ १०९ ॥
 नलाईन किं शुका ॥ ११० ॥ गृध्र नु यादया ॥ सर्वे स्य दण मम विज्ञावः ॥ वाल भका किर्न दीनः ॥ चनर्क विम भवन ॥ १११ ॥ नक्षत्र माह ण कालः ॥ श्रद्धा युग मित्रो
 लसी ॥ माह यद्वा विनिर्मुक्तः ॥ मनाथ दीन मां न मानसः ॥ ११२ ॥ निगो दक्ष न मिर्न च मिः ॥ कद मानं सुदृ ॥ खितः ॥ तस्य रुक न मानस्य ॥ मत्स्य गत्या ल्य भ मस ॥ ११३ ॥
 माह ण काल विद्वत्स्य इ लिय आ गार्क कस्य च ॥ वृत्त्यस्य का किन ॥ सर्वः ॥ जगत्कृत्य यय स्य च ॥ ११४ ॥ वल दान स्य कर्क यः ॥ सानू का णे सुलक्ष्म ॥ ११५ ॥ तौ अड वाच ॥

१०४

वेद्यदि श्व वदन्ता, वृक्ष रुक्म गता ॥ ११६ ॥ ण कालिना विर्य दक्षु छि न्नासा यद्वा दर्शनः ॥ विमूका च कवा कीव नत वय ति ता तना ॥ ११७ ॥ अथ वच विनहि
 ता, यस्मिन् लकी वदयद ॥ गच्छ न च वून स्रग् यग सो वि सि ता सन ॥ ११८ ॥ आक्ष विद्वर्जित मूख श्रेणी द्वा द्वा त वा वद ॥ वार्थ द्वा उ सा ण नू निर्द वचन मव
 वीत ॥ ११९ ॥ वदन्ता वाच ॥ आग ता र्हे म हा ता ग सत्य अर्म वि छि त ॥ कनू ह कि यथा कामः ॥ मम सा भन सी वनः ॥ १२० ॥ नव्य आ स्र व च ता नि, यं वा स्म क्का नि भन
 वे ॥ आशु ड वा च ॥ स्वाग न त व क ल्या नि, वदन्ता सत्य वा दि नि ॥ १२१ ॥ नहि सत्य व ता किं चि दगुर्न वि द्य न्नुत ॥ त्रधा कं वदन्ता दूर्ध्व साग मित्रा म्य र्द यून
 ॥ १२२ ॥ तव सत्य व नि द्वा र्थः ॥ यमि ता सि म या यून ॥ अथ अ मा न्य मा सा द्य जी व च नी वा स्य स क थः ॥ १२३ ॥ अथै वृत्त नै च्च दौ उ र्क न च द र्द स र्थ म वा म या
 तस्मा द न न स र्थ सैन विमूका सि म या यून ॥ १२४ ॥ सत्य यति छि ता लो का, अर्म सत्य यति छि ता ॥ ज्ञान मा द्वा छि गो सत्य, सर्व सत्य यति छि तः ॥ १२५ ॥ सत्य

नदवक्रि व्यति ॥ सत्यनवितनसुथ ॥ सत्यनसय ४ सिद्धा ४ सत्यवच विर्यं क्लितः ॥ २०४ ॥ अन्यागव ४ द्वि तिर्द्वेन्या, अन्याकृतमभि (अनूक ॥ अन्य ४ ॥
 ॥ सत्यवचः वचससत्यवादि नि ॥ २०५ ॥ अन्य ४ सनाजायवत् ० नाकु निवसययुत ॥ अन्य ४ सविषयामाता, हवद्वज्जलान्वित ४ ॥ २०६ ॥ चवावलेदुलाच
 य, दह्यावायं विनासयत ॥ न अन्यातकनाथय, तेलवसूकनं कृतः ॥ २०७ ॥ तेनाकाजमसंसाभ, यविवक्रिगवीयय ४ ॥ मृ (गन्धसुलयेदुला विस्मयं यनमं
 गत ४ ॥ २०८ ॥ यत्नाद (समयमस्माकः दिव्ये द्वे ४ यदार्जित ४ ॥ सत्यं हि मिहं गवाहृद्व्या, तमवावतिजा वितः ॥ २०९ ॥ कक्कविद्याम्यहं कर्म, यनमूयं मि कि
 लिवात ॥ मचाजीवसह्यानि, तद्विनातिवनेसदा ॥ २१० ॥ गमिकानूगमिद्यामि, कृत्वाकर्मसुदानु ॥ गमिथयव्यतीथानि, कविथकाच (समयतः ॥ २११ ॥ य
 तिथिगिनिमानूक, यवि (सहादृतासतः ॥ ॥ सत्यविथनिर्जदहः गाभ्रतानूकिलं यथा ॥ २१२ ॥ वदुलजन्मयाकायः तव ४ वायविषुद्वय ॥ तदादिमह्यं यं कृत्वा

१०३

त्वं अमर्षवत्स्य (समयत ४ ॥ २१३ ॥ वदुलावाच ॥ तव ४ कृतवयं सत्यनि, शतां क्लानकर्मचि ॥ दायवचकृमिथ्याइ, दानमर्ककलोयु (ग ॥ २१४ ॥ सर्वविभवदानां
 मिहवामुगचाकमः ॥ अतर्क्ययवद्वेतानां, नास्तिनोर्नदोमतयवः ॥ २१५ ॥ चवावना (सद्वतानां, मरुयं यत्युतिं दीयत ॥ सर्वविभविनिमूकः, यनं वक्ता भिगद्वति
 ॥ २१६ ॥ नाकृदिन्यायना अमर्ष, नाकृदिन्यायनकय ४ ॥ नाकृदिन्यासमाविद्या, नाकृदिन्यासमं श्रुतः ॥ २१७ ॥ यागवद्वस्यक्काद्याया, जातयग्न्यमासत ४ ॥ निमि
 ४ साहानयुयानां, मूर्त्तभाद्रहलस्यज ॥ २१८ ॥ इ ४ रवणानि र्यंतक ४ क्रायायागतना क्लित ४ ॥ नवाभ्रतयून् ४ इति, वायुनिर्वृतिमूकमः ॥ २१९ ॥ वृथानत्य
 नयामागय ४ ॥ कौर्त्तनं देसमासत ४ ॥ त्वमयतद्विजानीया, केवलं मायनिद्रस ॥ २२० ॥ वायुडवाच ॥ अहं देव ४ यूनार्यं सौक्षा, वायुविव निवसित ४ ॥ नकत्या
 निवभ्रध्वाना कृत्युर्दममविस्मित ४ ॥ २२१ ॥ तर्क्यवक्रविद (गन, र्यं जार्नं साननमस ४ ॥ मूक (समययं जात ४ यसादाकृव (अनूक ॥ २२२ ॥ वदुलगद्वउकासि

दूरेण सहितावस ॥ त्वंदायनन, सत्यन, गमिष्यसि यनंगतिं ॥ २२३ ॥ तीष्ठाडवाच ॥ तन ४ संन्यासमाश्रित्य, यावत्तु ज्ञानमानस ४ ॥ ब्रह्मचर्यमेव स्वर्गद्वारं ॥ यनि
 त्वं दिवंगत ४ ॥ २२४ ॥ सर्वं वायविष्ठुहासा, आगे स्वर्गसमन्वित ४ ॥ विमाननातिमरुता, सविष्णुयन्त्रागले ४ ॥ २२५ ॥ विमानसंस्तिर्गद्वारं विष्णुचयनमंगता ॥
 आगत्य च यथावत् ॥ वायुसम्पादमूकम ॥ २२६ ॥ सखित्यकथयामास, जनन्या ४ स्वसूतस्य च ॥ वदन्तायुगसंयुक्ता, सुधीतासूनिनाकला ॥ २२७ ॥ (ममनेव बने) (मोयेन)
 विष्णुवासमूकम ॥ नमिहासुचिलकालं, सत्यवाक्यसंश्रयात् ॥ २२८ ॥ गृहीत्वा (ममकूलसर्वं) नयधस्यनिष्ठं ॥ जलकूलगतजावा नृक्षयुल्लगतादिकान् ॥ २२९ ॥ १०३
 ॥ समतातेयतायुष्म, वदन्तायुष्मकर्मस ४ ॥ मरुविमाने ४ ग्रामहि नसंख्ये ४ सर्वमेव ता ॥ २३० ॥ डयर्गयनिनाकानां, स्वर्गमालाकमासुता ॥ तन ४ सातागसंयुक्ता
 नसंख्यते ४ युनाकमे ४ ॥ २३१ ॥ कौणिकसहितासर्वं वायदाहृतसंयुव ॥ १०४ ॥ त्वत्सत्यवाक्य, महिर्लसमूदाहृतं ॥ २३२ ॥ च ४ व ० ॥ १०५ ॥ वायि, स्वर्गलाकसंगच्छति ॥

न२

वदन्तायुसम्पादं च ४ व ० ॥ त्वत्तननन ४ ॥ २३३ ॥ शृणुयाद्वाचि च ४ कश्चित्पु विष्टेनातिद्वयन ॥ विमूका ४ यतिरि ४ दूरे चान्धवे वृथिथावित ४ ॥ २३४ ॥ च ४ य ० ॥ यत्
 वान्ताय, चतुर्दशमिषुच ॥ सतान्युष्मकर्मलाकान् गच्छतानसंगच ४ ॥ २३५ ॥ (ममसम) (ममयथतां) (ममद्विन्नसि) संगच ४ ॥ द्वागुम (ममयथतां), सस्यद्विष्ट
 जायते ॥ २३६ ॥ गृहसम (ममयथतां), कालानां गानिर्वर्धनं ॥ दुर्गमयथतं नित्यं, मठयाधे विष्णुमत ४ ॥ २३७ ॥ दिवावाचं यदिवानां, नतयां विद्यते रत्नं ॥ २३८
 स्वयन्दुर्दमिगुं ० व ० त ४ संयुगस्यति ॥ २३९ ॥ वन्मया शतवत्सुगा, संगयलेतवित् ॥ कमानि च सदा शृणुयात्सत्यमिंसमवायुयात् ॥ २४० ॥ तनावाच ४ व ० ॥ य
 व ० गानिर्वर्धति संगत ४ ॥ १०६ ॥ वन्दे च वन्दे शृणुयात्सत्यं ० व ० ॥ यत्तु लिप्यति ॥ स (ममद्विन्नसि) ममवाचाति (ममलाक) महीयते ॥ २४० ॥ १०७ ॥ निहाससमूचयवदन्तायु
 सम्पाद ४ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ वेणुम्याचतडवाच ॥ निवर्तिते नानयद्वे, वाकनाक्षयमिष्टिन ४ ॥ अस्मिन्वाहाननूयन, नाह्वानमूयति ४ ॥ १ ॥ सुडयत्युद्धृतस्य अस्मिन्वाहान

यद्यभिष्टिनः ४ ॥ स्य विस्मिनः ४ ॥ यनिष्ठु ति अस्मात्मा. यतिहानमिदं वचः ४ ॥ २ ॥ चाहुल उवाच ॥ कस्य वं तर्गदियः सुप्रतं सुदणनः ॥ अतिवनिर्मलं सोम्य गण
 कस्य दः स्य मः ॥ ३ ॥ यतिहान उवाच ॥ अस्मात्मा तिस्रद्व्या नि. स्नातकानां निभदिनः ॥ दुर्गे नि नू कयाशु कस्यान्यस्य निवर्णनः ॥ ४ ॥ कथमनयजानाथ वद्वि
 म्मतिवायनः ॥ यभिष्टिनस्य वनं, दवना ऊ गृह्य मः ॥ ५ ॥ चाहुल उवाच ॥ अवलस्य वलनाजा. वलस्य नू दिती वलः ॥ वली मूर्खस्य भोनवः ॥ गच्छलस्य नू वली
 ॥ ६ ॥ गच्छलस्य स्वजाजानः यतिहान वचामम ॥ ७ ॥ खाति हि रथादि म्म गृह्य लोहालि तिष्ठति ॥ ८ ॥ केनापि दुःसाशना तवर्क उदू सागतः ॥ यतिहानस्तत्कृष्टः
 गत्वानाजनिभवनः ॥ ९ ॥ चाहुल वचनं यवः सधवाच यभिष्टिनः ॥ यभिष्टिन उवाच ॥ किं वयं कीदृशं गालः कास्यार्थं किं यथाजनः ॥ १० ॥ वृद्धिदाह्य यथावत्
 तन किं किं कीदृशः ॥ यतिहान उवाच ॥ काकका किल कृष्टी गम. तस्य नासा नू द्वा ४ ॥ १० ॥ यवमः कृष्टी गम. द्रष्टा यादा म हाहू ४ ॥ यभिष्टिन उवाच ॥ वृद्धि

१०१

गच्छ दनावालः चाहुलं याय कर्मणाः ॥ ११ ॥ दवकार्यस्य वलायाः कृतस्त्री यय्य वस्तिनः ४ ॥ चाहुल यति गोदृष्टा ननः ४ ॥ यश्च तत्ताहू नः ॥ १२ ॥ स्वागच्छे वं स मालाकस्य
 वेलान्नानमर्हसि ॥ १३ ॥ खाहू कृष्ट (आवहुं कृष्टु चाहुल कृतवतनः ४ ॥ १३ ॥ यद्युवाच यतिहान मायत्तन्य यनिष्ठुत ४ ॥ चाहुल उवाच ॥ किं दवकार्यस्य नना विवस्य क
 खाहिसन्य विवय च्छिताताः ॥ तद्वकार्यः सत्त कौं चहू दामा ॥ १४ ॥ यदधू जाथन तव किं वाहू ॥ १५ ॥ दवचनमययः यतिहान त्वना मम ४ ॥ १५ ॥ निवद
 दयेहना ऊद्व ४ ॥ यथर्ह स कमा उव ॥ १६ ॥ कृष्ट ४ सतती गत्वा अस्मात्त यथातथा ॥ १७ ॥ कथयामास तत्सर्वं चाहुल नयदी वित ४ ॥ सः सः तमि दं वाकः ॥ न
 तव दह्या जातिभू ॥ १८ ॥ चिके चित्वा तनाजा. निर्गजामयभिष्टिनः ४ ॥ यद्युवाच सत्त अल. मायत्ता यय मचित ॥ १९ ॥ यभिष्टिन उवाच ॥ कृतस्तत्त मूख
 तः यन मः हू सागतः ४ ॥ अथावकाल सः सर्वः यथावकथ यहू म ॥ २० ॥ चाहुल उवाच ॥ वक्ष्यामि ननु ज कि. सर्वः अदि जत जत ४ ॥ यानि हि सा उभय कि

दवना प्र निभनृय ४ ॥ २० ॥ अन्नकज नसाहृयः वायसं सानवहतिः ॥ मनुंश्च कृदि गंजाति, मायना मुखिता स्मिन् ॥ २१ ॥ कर्मविमि मिमांजाः वाथय कि दिथो कय
 ॥ तीसं वायव अजन्म, मुखिता स्मिन् नूनत ॥ २२ ॥ इ ४ ख इ ४ ख मिर्वयश्च, सुखं यश्च सुखा भिकः ॥ आत्मानं ॥ २३ ॥ क इ ४ ख ॥ अक्रुत्या मि वलन्य यत् ॥ २३ ॥ सा
 ह सिक्का सि विक्कायु, मिति इ सुत कर्म कृत ॥ वकु मर्ह सि अर्म ४ क ४ या यी कृत नो मया ॥ २४ ॥ अनु आया गृह को हः व अर्थ मृगय द्वि ॥ २५ ॥ व अ व अ न ता नि ॥ २६ ॥ क ४ या
 यि कृत नो मया ॥ २७ ॥ अ भि वि न ड वाच ॥ अश्व गी हू य नि श्र कः वाक्क ए गृह मागतः ॥ न अश्व चित्वा आरुं क, स या यि कृत न ल्वया ॥ २८ ॥ मात नं यि त नं चैव, वि क ली त य इ
 व लः ॥ आता ह्यु न न वृथ, ४ स या यि कृत न ल्वया ॥ २९ ॥ ॥ अ न स्य ह्यार्क स्य, उला थ मि नि अ व त ४ ॥ विद्यु मा व न न य सु, स या यि कृत न ल्वया ॥ ३० ॥ स वि वा क्तु य ४
 क द्याः क ल जी गाल म लु लैः ॥ ३१ ॥ विना क्ष अ ल य ज न, स या यि कृत न ल्वया ॥ ३२ ॥ अश्व कान ल्व दाना च, दा तु श्व य नि अ भ क ४ ॥ द ह्ये य ४ की र्क य नि, स या यि कृत न ल्व-

106

या ॥ ३० ॥ व इ ह्ये द नि दे श्च, अर्त ना वृं वि जाल मे ४ ॥ या चि ता न य च कृ दं य ४ स या यि कृत न ल्वया ॥ ३१ ॥ नक्ष काल च इ ति च्छ अ न्य र्व य ल यं ग न, क तु मं ल य ज न य
 यु, स या यि कृत न ल्वया ॥ ३२ ॥ ज न य ह ति गृ दान, मृ छि क मृ त य न क ॥ अ य श्च काल यी ल व ह्यो ल य या यी कृत न ल्वया ॥ ३३ ॥ य थि ह्य वाक्क ए व द, दानं गृ दान ति वे न य न
 या द द्या य श्च गृ दान ति, स या यी कृत न ल्वया ॥ ३४ ॥ वाक्क ए क रि था र्वे वा यि वे श्च गृ दान ति वा न न ४ ॥ ल्व अ म्मि न्द्र ज न य सु, स या यी कृत न ल्वया ॥ ३५ ॥ ॥ अ न द्रि य मा न व य ४
 क रि च ड य द न ॥ गृ ह्यो ल वृ त ल म्म ति स या यी कृत न ल्वया ॥ ३६ ॥ वा अ ल ड वाच ॥ क ता ॥ अ र्क ग मि क्का र्क ति, य ॥ अ म्मि न्द्र वा द्र या ॥ उ श्च म्म र्क श्च या का द्या म
 क थ क ॥ ल्व या अ म्मि, ४ ॥ ३७ ॥ अ भि वि न ड वाच ॥ द वाना न मृ र्वा ल चै वि ह ल चै क र्क म या ॥ वा य क्त्वे दे श्च क्त्वे द वा क, ल्व म वा य न वा ति थि ॥ ३८ ॥ वा
 अ ल ड वाच ॥ वा अ ल्हा र्क म ह्य ना ज, य ति गो ला क वि श्वे व र्जि त ४ ॥ क थ वि ह्यी न व ॥ अ र्क श्च मि त व न म ह ॥ ३९ ॥ अ भि वि न ड वाच ॥ वा अ ल्हा र्क व य

यावा मकुचवित्वाठक ४ दवकार्यस्य वलाया ० विजानामभिकस्त ४ ॥ ४० ॥ वाहुलडवाच ॥ यद्यद्यदे हि वाहुल ४ यनित ४ वायधानिज ४ ॥ तथा
 यिसमनाजद्व निवर्त्तनाजराजन ॥ ४१ ॥ यमिदिनडवाच ॥ कादासाजननाका ० यनर्त्त ४ दससकृज ॥ अदृष्टमकुसज्ञाव ४ श्रुतिस्मृत्युगिहित ४ ॥ ४२
 ॥ वाहुलडवाच ॥ दण्डनासर्मचक्र ० दण्डवक्रसमाधज ० ॥ दण्डजसमाधम ० दण्डमसमाधव ४ ॥ ४३ ॥ दण्डनासदेवनि, आवाकृतिसेनिक ४ ॥ ४
 नडुल्लसमानाजा, धानस्यप्रतिग्रह ४ ॥ ४४ ॥ यमिदिनडवाच ॥ नानागमयानिचनमा, तुंजनवाकृत्सम ॥ नतवदकिवायुद ० यथेवत्कीर्तिर्नृत्त ॥
 ॥ वाहुलडवाच ॥ लाहादन्तजानीयु, वक्रसमाधज किलिब ० ॥ वनस्मीसेवर्त्तय ० नडुनाजाप्रतिग्रह ४ ॥ ४५ ॥ नाजकिलिबदसना ० वाकृत्समीयमिदिन ॥
 किन्नातामिवदीजाना ० यूनर्त्तनतविद्यत ॥ ४६ ॥ नाजप्रतिग्रहाधाना, मक्षसाधाविषावम ४ ॥ वृक्षनयनिवर्त्तय ० स्वमानस्यवहद्वन ० ॥ ४७ ॥ अथात्यचन्द्रभाव

१०७

दाह्यवर्त्तमस्तुथितवित् ॥ नमद्वरवनडुक्का विष्ठायाचंजायत क मि ४ ॥ ४८ ॥ विमंयुनियहानाक ० नविमंविममूचत ॥ विममकाकिर्नरुकि, नाजसंयुगथो
 यक ० ॥ ४९ ॥ लारुचुडुसिचुडुधे, विमंनजनधत्तन ४ ॥ नाजप्रतिग्रहं धान ० क ४ वमीर्त्तयिनि ॥ ५० ॥ नाजप्रतिग्रहं द्विद ० वक्रादपिउमिक्कति ॥ नर्त्तयक्रा
 दतद्विद ० मन्यवचविष्ठाया ॥ ५१ ॥ प्रवयुनियहाना, नाहंवेवनसीणय ४ ॥ विष्ठाजनडुज्जनाद्य ० नराकार्यकथयेत ४ ॥ ५२ ॥ नमिगवाहिर्नक्षत्र ॥ नत्ता
 निविदिष्ठा निव ॥ सर्वयप्रतिग्रहीवा हाजनडु विवर्त्तय ० ॥ ५३ ॥ नानावृथा ४ यजान्यर्त्त, नानावृथा ४ यनियह ४ ॥ सविकालप्रिउंणक मन्ननवादिद्वन ४ ॥ ५४ ॥
 दृष्टर्त्तहिमनूयात्स ० मन्नमाप्रियुनिकृति ॥ आयस्यवान्नमग्नाति, सतस्याह्नातिद्वन ० ॥ ५५ ॥ यस्यानैवाकृत्समुक्ता कर्मक्याकृतायुत ० ॥ अन्नयंदस्ययथागम
 ४ कर्त्तताग्नययत ॥ ५६ ॥ अन्नाद्यस्यैवधेनायम, सकनायमवेयय ४ ॥ दमिदिंतिनायम, यर्त्तमासनजायति ॥ ५७ ॥ अमिद्यवर्त्तुभावदान्यवर्त्तमस्तुथितवित्

त्नाजाप्रतिग्रहणक ४ शूद्राद्यावतननुन ॥ ३८ ॥ यदिनाजं विज्ञातं च वृत्तिनाजाविकल्पितं ॥ इदं त्वं त्वेति ननु किं स स्वयाकस्य वत्तनं ॥ ३९ ॥ यमिष्टिनडवा
 च ॥ निन्दस्य सर्वनाजानां नचात्मानं प्रसंसासि ॥ त्वानुयत्युण्णकावा सर्ववार्त्तं विनाक ४ क ॥ ४० ॥ अथवा नीचनयन, विनातस्त्वमिह गत ४ ॥ वेणुम्यावतडवाच ॥ तद्वद्व
 यं त्वं ह्येका स, सर्वजनुशुभु स्थित ४ ॥ ४१ ॥ दिव्यनयनमनशा मान् अर्म्माजावत्तवत् ४ ॥ अर्म्माडवाच ॥ साम्प्रकमहाब्राह्म सत्यमर्म्मावत्तित ४ ॥ ४२ ॥ नन्दनुयलुनद
 म्मा, नगना ४ सूत्रवत्तना ४ ॥ यमव ४ यद्विष्णुवत्तना, यमनाजायमिष्टिन ४ ॥ ४३ ॥ निर्जित्यवसेधनसेन्यानि, द्विर्निमर्म्मायालव ॥ स्वल्पासत्तयसुभेवलाः साक्षाद्विन्दसि
 तैमन ४ ॥ ४४ ॥ सततं वासुदेवस्य, तुकिं कथयति चाविना ॥ यमिष्टिनडवाच ॥ किं नञ्जनतात, विमयेर्जिवितनवा ॥ ४५ ॥ सार्द्धं च नसहस्रेषु दण्डि ४ वनिवत्तित ॥ अ
 र्म्माडवाच ॥ माविवादेन नष्ट, समुपेहि यमिष्टिन ॥ ४६ ॥ अथर्वविमथकश्चिद्वाक्य ४ संसितवत् ४ ॥ वृद्धिर्वेष्यतनीनाजान् यथाकं निर्वमिथ्यति ॥ ४७ ॥ तस्य सङ्गागमा

११०

शेषं तत्प्रायेतनिश्चयि ॥ अग्निहोत्रादौ त्वत्कश्चिद्विषयतवसूवत् ४ ॥ ४८ ॥ तस्य तद्गागमाशेष, तद्गागं तानयिष्यसि ॥ सम्यग्दत्त्वा सुनाजं च, अनूभवदिनदिन ॥ ४९
 तस्य वलननाजं च, तत्प्रायेजलविष्यति ॥ अहिनाग्निमुखाविष्य, ४ यातस्मादा जिह्विष्य ४ ॥ ५० ॥ दण्डनां अनूकानां च, हर्षदद्यादिनदिन ॥ ततश्च ज्ञानमायन, तत्प्रायेतनिश्चये
 स्थिति ॥ ५१ ॥ अकर्मणालिनां याद ४ यादानां याज्या विना ॥ हृतीयावलिजां याद, चतुर्ध्वमिमाप्रित ४ ॥ ५२ ॥ एकदादकुच ४ यादा, तद्वाचकीदिनदिन ॥ तथा कनूच
 नाजं च, यथायादाननस्यति ॥ ५३ ॥ यदवातयद्यजहि, नक्षत्रातिष्ठद्वर्त्तति ॥ यस्य सङ्गागमा, सम्यगुवतिनक्षत्रात् ॥ ५४ ॥ हतणमस्य यद्वाच्य वेष्टवत्तनस्य च
 नाजायाश्चातिमद्गागं व्याधनवलिवालयन् ॥ ५५ ॥ वेष्टवत्तवमिनामूका, व्याधिना वदनाम्यय ॥ तर्क्याक्षमहानाज, तदुदयप्रतिग्रह ४ ॥ ५६ ॥ यक्ष्य यद्वाचनानित्यं
 ददता निवृजवा ॥ तमां प्रतिग्रहादय, स्नानयकीतनकिच ॥ ५७ ॥ य ४ वृद्धिर्वेष्यतनीनाजान् यथाकं निर्वमिथ्यति ४ ॥ यितनस्य सङ्गागमा, दण्डवत्तविवर्त्तवा ॥ ५८ ॥ वृद्धिर्वेष्यतनीनाजान् यथाकं निर्वमिथ्यति

११

ससमूहयवकुलायाख्यानः॥ जन्मयडवाच॥ कथनागमयुतव्राह्मणाभासीमयनाक्रमः॥ जगमस्यवस्यवैमः॥ वृद्धिमतथावन॥ १॥ वेगम्यायनडवाच॥
 यदृष्टयाकदाचिदुखक्यानिर्द्धनूद्धनः॥ चवानमगसाहका. वनगमिन्दुकादलः॥ २॥ सलोचनवनगोथयुकासींश्चिद्विनाकन॥ ददमजिगनग्रहं मूर्ति
 मकमिवाककः॥ ३॥ ततः॥ सतीमस्यनस्य रुजगमदेत्यैवधादितः॥ वेदयामासतकायः॥ निष्पद्यैवाकभाइलातः॥ ४॥ एतस्मिन्नेवकालेउ. अस्मिन्नाजस्यम
 आसतः॥ ध्यानवृत्तामहात्मा॥ समुत्तकः॥ समकतः॥ ५॥ तान्दृष्ट्वासमात्माता नृत्तितामृतवावहान्॥ ताहविलोकयामास. नवायश्चदुकादनः॥ ६॥ तता
 ईर्तसमादिश्व. शेषद्यावद्वक्ष्यति॥ नकुलैरुदवधैः सैयतकृवर्नैवः॥ ७॥ तस्यधर्ज्यान्वगन. तन्मवावयलक्ष्मातः॥ जगमस्यवृत्तागि. (अम्यन
 सहितकदा॥ ८॥ गत्वानाजाननजन्दाददशगिनिगद्वध॥ वातनैरुजगद्वध. महतायविधेदितः॥ ९॥ ततः॥ सलोचकइ॥ खाकी. सीमयवद्ववाशिवः॥ कथ

१११

मतन्वयावाकः॥ गवायैरुजगमहान्॥ १०॥ एतदुखयनिगत. ताहदुकादकादनः॥ यथावर्तयेत्तत्सर्वः॥ कथयामासअद्वितः॥ ११॥ ततः॥ सतीम
 सनस्य. मादमिच्छुनाभियः॥ यवकाद्यैजगर्वसास्त्राकोरुनसमन्वितः॥ १२॥ यमिनडवाच॥ दवावादानथावायिकर्त्तव्यकथयन्नग॥ किमर्थवागृहीतक
 वातार्थमनुआममः॥ १३॥ यन्नगडवाच॥ नद्युआतामनाजोहः॥ वृद्धिर्वावृद्धिर्जकृव॥ यथिमः॥ यथमः॥ सासा. दार्थवैसकनः॥ सूतः॥ १४॥ तथासिः॥ कुरुनिष्पेव
 विद्यायानिजननव॥ गेलाकेष्वर्थमनुलु॥ वाकमविक्रमनव॥ १५॥ अथदर्थमहान्॥ यातावित्वात्मा मयाविसन्॥ सहर्षमूनिमूल्यानाः॥ मूवाहमिदिकीममः॥
 १६॥ तताविश्वसुकाहः॥ मगस्कनमहात्मना॥ वृद्धिर्वावृद्धिर्जकृव॥ यथिमः॥ यथमः॥ सासा. दार्थवैसकनः॥ सूतः॥ १७॥ तदवस्थातिनाभाकि. सुखदुःखावयादन॥ यदहन्दवन
 जत्वात्तन्मनाजगतांगतः॥ १८॥ नवकिर्तिस्तथासम्य. द्विवर्तिवायिचिकता॥ मूदूर्कनेवतद्व. मययादयननृत्ताः॥ १९॥ नदेवैवकृत्वातात. नशोर्वाकाहमकिरि

॥ नसदायवलवादि. काष्ठिदयतिवर्तन ॥ २० ॥ नचयह्मार्थोच्यन्ता. सैवद ४ काननंरुवन् ॥ यययह्मार्थशूनाय. दृश्यकद ४ खजावन ४ ॥ २१ ॥ हीनमूर्त्तिश्चसू
 खित ४ तस्मादेवैहिकानमः ॥ वदताचमि विमोयम् ॥ मयासमनिसकम ४ ॥ २२ ॥ कनूष्मायानमित्युक्त ४ वावाचदं दयाचिन्त ४ ॥ यस्तुतयाकृतान् वक्ष्यन् वनिवक्षति
 अर्मवित् ॥ २३ ॥ सर्वमादायितामया कश्चिद्वालविवर्त्यथ ॥ नचनसत्यसादन. सुतिनश्चातवियति ॥ २४ ॥ वलवानयिजनुक्त. गृहीतावसमयति ॥ तद्यदिवा
 कृतान् वक्ष्यन् मयाकथयसन्वय ॥ २५ ॥ तथायातनमतक. मादायिहेरुनायम् ॥ यमिदिनडवाच ॥ वदताममैहोयथकाम. त्वं वक्ष्यताचिन्तता ॥ यथह्मनसकृताग.
 यवक्षामीहगकिन्त ४ ॥ २६ ॥ नद्युवडवाच ॥ अर्मसुर्वयसं सन्ति. दवावक्ष्यवचकथम् ॥ तस्मात्सम्यसनामर्मः कथयस्वममानद्य ॥ २७ ॥ यमिदिनडवाच ॥ सत्यन्दमस्त
 य ४ ज्योत्स्नाः सनाभाङ्गा ४ समाङ्गवः ॥ ह्मनं समादयाश्मनः मयमर्मसनातन ४ ॥ २८ ॥ नद्युवडवाच ॥ किं सत्यं वाचनमाज. कामदश्चयकीर्तित ४ ॥ तय ४ किलक्षत्पथा

११२

काः किंचै सौचमूदाकृत ४ ॥ २० ॥ यमिदिनडवाच ॥ सत्यं चतुर्दिनथाकाः मनसादमर्तदम ४ ॥ तयस्वमर्मवर्तितः सौचं कनवर्जितः ॥ २१ ॥ नद्युवडवाच ॥ सनाम ४ की
 दृग् ४ वाक् ४ कावकी ४ यनि कीर्तिता ॥ दमाचकायनिहृत्वा. किंचैर्जवमूदाकृतः ॥ २२ ॥ यमिदिनडवाच ॥ सनामाविवचत्वात्मा. जीनकायनिवर्तितः ॥ दमाचद्वसदिसूत्र
 मार्जवस्यमचिहता ॥ २३ ॥ नद्युवडवाच ॥ किं ह्मनं वाचनमाज. क ४ समश्चयकीर्तित ४ ॥ दयाकिलक्षत्पथाका. किंचैश्मनमूदाकृतः ॥ २४ ॥ यमिदिनडवाच ॥ ह्मनतत्वाथसं
 वाय ४ समचिहवक्ष्यकिता ॥ दयाचतुर्दिनेष्वित् ॥ अर्ननिर्विचर्चमन ४ ॥ २५ ॥ नद्युवडवाच ॥ किं हेर्चमृषिहि ४ वाक् ॥ किंचैर्मेयमूदाकृतः ॥ स्नानचैर्किंचनं हृत् ॥ कि
 चैर्दनिमिहचत ॥ २६ ॥ यमिदिनडवाच ॥ स्वमर्मेहेर्चताहेर्चः ॥ मेयमिदिचनिग्रहः ॥ ह्मनं मनामलत्वात्मा. दानं ह्मनवदक्षिण ॥ २७ ॥ नद्युवडवाच ॥ क ४ गफ्दुर्ज
 यवन्माः कर्त्तव्यामिननक ४ ॥ सन्धानरुड ४ कश्चाय. कृताव ४ क ४ यनस्त ४ ॥ २८ ॥ यमिदिनडवाच ॥ काम ४ दुर्जय ४ गफ्दुर्ज लक्षित्यामिननक ४ ॥ कामसन्धानरुड ४

सूक्तिविजयः २ अस्मात्तद्विभक्त्या तद्विवाहुर्यदित्येत ॥ सर्वज्ञानन ४ सा ५ नसा ५ त्रिदिवस ४ ॥

[illegible]

लैनद्य, नश्चश्चश्चश्चश्चश्च ॥ कालमनिदिजानीनाः वक्तुमवदिकान्तः ॥ ४८ ॥ अनेकमूनयस्तान्, तिर्यङ्मनिसमूहवा ॥ अस्माच्चिन्तननिवता, वक्तुलोकसिमा
गता ॥ ४९ ॥ किंकलतायदिक्षत, त्रिवलनमहात्मना ॥ कस्यकिन्नजायके, कस्यमबुसुगन्धिव ॥ ५० ॥ ननुदेवाकतायाद्या व० तानि विज्ञान्यते ॥ वक्तुमवदिकान्त, न
द्रोहिनयिवधन ॥ ५१ ॥ माविद्यादैननयाद्यु नाक्षसखरिवधन ॥ जिल्यमव्ययननाम, वक्तुमवदिकान्तः ॥ ५२ ॥ अग्निहोत्रध्वजवदाधे, नाक्षसानां गुरुगुरु ॥
दयासख्यचणोवधे नाक्षसचनविद्यते ॥ ५३ ॥ वक्तुना किमभिमत, नटस्थेवदनात्मनः ॥ नतभार्तं प्रतेवेव, यः क्रियासमि तिष्ठति ॥ ५४ ॥ याज्ञका ४ या ० काष्ठे
व, यज्ञान्यग्न्युचिकंका ४ ॥ सद्यस्यसनिभानाज, न्यः क्रियावान्यवदित ४ ॥ ५५ ॥ कयालस्यैयथाभायः ॥ दृष्टोभोवायथययय ४ ॥ द्वितीयांशानदा
अस, वक्तुलीनयथश्रुतः ॥ वक्तुयत्ननसैलक्ष, दृष्टमायातिद्यातिनन् ॥ ५६ ॥ अद्वात्मवक्तुनद्वात्म वक्तुनद्युक्तमादत ४ ॥ नक्तवलीजनस्थेव, याश्चर्तवति

नाय विधि नडवाच ॥ सत्ता ग्माहे मरुनाज यस्य उक्ता वात सुही ४ ॥ तात्येताग्नस्य उ यानि देवकल्या त्वादृप्त ४ ॥ १०१ ॥ साधूनां कि तु साधूत्वः यद्गत गुणी का
हनः ॥ सुतो कर्ष निथोसा त्याभवक्षन साभव ४ ॥ १०२ ॥ किनु कोउ रुनें कि क्षि त्तमया थिव सकु म ॥ अत ४ वृष्णि शो रुद्वि त्वा महे तात्ये वचा ॥ १०३ ॥ सर्वज्ञा क्रार्थ
तत्त्व हरेला के स्थ र्या द्रुजितः ॥ कथं हा मा विम लाह ४ प्राकृतं पूनर्व च था ॥ १०४ ॥ नद्य उवाच ॥ कृताके या गव हानाः देवावरु तध तथा ॥ बद्ध च ४ कुदु गा मिन्धा त्वकी
मरुता मेयि ॥ १०५ ॥ सू सिद्धान पिवा भा पि, सर्वज्ञा स्मार्थ तत्त्व विन् ॥ कृताक वस माय ना, न जानी के क भाम्य हः ॥ १०६ ॥ यस्मा च धन च यदा च यथा च यच्च, चावच्च यय व शु रा शु
रु मा ल्प कर्म ॥ तस्मा च तेन च त दा व तथा च तच्च, तावच्च त एव कृताक व ग्मा इये ति ॥ १०७ ॥ हा ना हि जन ना आ वि न स ना जा लि कश्च न ॥ यस्य च त सि ना जे न्द्र, न क ना नि स दा म्य
हः ॥ १०८ ॥ दुर्जय ४ सहज ४ ग क् ० मदाना ह्म मूदा रु त ४ ॥ त ना सि द्ध ता प्र स्य के, ना आ ल्प ग द्वि या थि व ४ ॥ १०९ ॥ ना अ ल्प दा दे ना जा न, स्व भर्मा कर्ष ना दि त ४ ॥ तत ४ ह्म ग द्वि

नाद्याच्च, नान्या केन गतिमाप्नुया ४ ॥ ८३ ॥ एकना द्वा नृथा मर्म, मर्म मर्मि कथयिष्य ४ ॥ वक्रता विन कालेन, तै कना तीत नाजन ४ ॥ ८४ ॥ यथा (मो) क्रव मू मूख, मनिल
चलनं यथा ॥ यथा गलि निजा तन्त्र, तथे श्वर्य क्रवा मद ४ ॥ ८५ ॥ ना के श्वर्य मदा विद्व, सर्वथा य मदा चित ४ ॥ वे श्वर्य मद मला हि, मय दिवं विमू क सि ॥ ८६ ॥ सा
हमे श्वर्य मदिना, मद व्या कृत मानस ४ ॥ यति ४ यति वृ स ह ४ सां यतं ह्यं यथा म ध ॥ ८७ ॥ लोक द्व यदितं वाक्, वक्रु का वान यदित ४ ॥ तद नू क्तान स यत्नो क्तो, मून था यि
न यदित ४ ॥ ८८ ॥ द्वि जा स्य ना व म क था, के लोक क्तित रुत व ४ ॥ दव व ल्यु जनी या श्च दान साना चि चि ना दि हि ४ ॥ ८९ ॥ ये ४ कृत ४ सर्व तु क्षा मि न य च श्च म हा द वि ४
क्षया च वृद्धि ना न दू ४ किं च त म भि र्दं त था ॥ ९० ॥ ये ४ वृ डि ते ४ सू ना ४ सर्व, वृ डि ता म य क्त्वा ॥ तथा व क्त म ना थ वे उ का ज ग ति ना च्छि त् ॥ ९१ ॥ वा क्त्वा वा ग्मि वा
ना ज नू वी ग या न ति का चित ४ ॥ ना मि ता क्त्वा थ च्छि ता श्च, सर्व था य रु ना य चै त ४ ॥ ९२ ॥ त स्मा क्त्वा म य वे वि द्या न् म दं वा यि वि वर्ज य ॥ यदि क्त्वा सि म हा ना ज, सा क्त्वा ती ग ति मा त्म न ४

॥ १॥ वेणुम्याचनडवाच ॥ एवमुक्त्वा पुनरुक्त्वा. विमाननदिर्वंगता ॥ अमिष्ठिभाविताभन. सहित ४ स्वाग्र्यैर्मयथो ॥ १॥ ॥ गत्वा स्वमाश्रमनाजा. तदाश्रयसि
 रुद्रुगः ॥ कथयामास यमजा. मर्जनस्य विष्णुमत ४ ॥ १॥ एतत्कथितं नाना न्यथा रोमावहावल ४ ॥ अत्र १ अजगनयका. अमर्जाजतमाक्षित ४ ॥ १०० ॥ य ४
 ०० दंष्ट्रयाचानिहः नद्युवायात्मानमूक्तमः ॥ सर्वथायविनिमूक्ता. विब्रुलाकैसगच्छति ॥ १०१ ॥ ०० गिरुससमूहध. नद्युवायात्मान ४ ॥ १०२ ॥ वेणुम्याचनडवाच ॥ १॥
 नतल्यगर्तरीकाः सनेर्वंशमकु विष्णुनदः ॥ कववर्तमहात्मानः सर्वंशमकुथकाविदः ॥ १॥ ॥ वदवदाजतवहूः अमनथागवनायनः ॥ यमन्यासिनसाक्षमो. यवकृदंय
 मिष्ठिन ४ ॥ २ ॥ अमिष्ठिनडवाच ॥ वितामहमहावाहू सर्वथाधे दिगनत ४ ॥ विद्वत्संनदः एयस्या लूलैतद्वदसूवत ॥ ३ ॥ रोमाडवाच ॥ शूयनी अमर्माहात्म्यः वि
 द्वत्संनदः एयच. ॥ कन्यकासूवतानाम. मिमूकाकर्मवन्धने ४ ॥ ४ ॥ अश्वयुदाहर्नकोम. मितिहासन्मनातनः ॥ सूवताचीश्वसम्पादः यमसूचमहात्मन ४ ॥ ५ ॥ कन्यका

११५

सूवतानाम. विद्यांगववनवर्णिताः ॥ सुगालावसूवमाच. अहमिल्लविनिर्मिता ॥ ५ ॥ वितातस्यामहावाहू ४ सर्वंशमकुथनित्वविद ॥ अमनगालसूयतर्त. स्वाः अम
 ययानिनिष्ठित ४ ॥ १ ॥ गत्वा विवस्यनाजद. राय्यायनमहंगता ॥ अतिवतामहासाक्षा. कालअमर्माजाजिता ॥ ६ ॥ गतकुनेवद ४ खन. गृहकाश्रमनिष्ठ. रु ४ ॥ तथा
 वनेजगमाथ. विवद्व ४ सीहितवत ४ ॥ ७ ॥ अविहि ४ सविर्तयुधः शमकमूलरुलासने ४ ॥ युधे ४ सनाहिनमले. विमर्सीदे ४ सुमहितः ॥ १० ॥ सतस्मिंश्चतस
 साक्षः अमनथागवनायन ४ ॥ निर्वंशकृतवीनाजन् सूवतायाश्चलैः ॥ ११ ॥ गतवालासूयैवद्व सावकाः एनभासता ॥ वल्यववसिवर्तकी. माहृहीनीवि
 वंशत ॥ १२ ॥ युयुके ४ कर्किभेभना. लीलाहालुश्वः एनहने ४ ॥ अयेश्विविविमेरुधे ४ वितातामूयलाययव ॥ १३ ॥ वालासासअमर्मात्मा. युरिकीहन
 आयमाः ॥ तामेववसनीन्यासा. मन्ममानामहातया ४ ॥ १४ ॥ गिणुवासूवतायाश्च. विताइतिहिरुबल्ल ४ ॥ वालिनाः एरुवायबा. माहृहीनति

यद्व

ॐ

व

चिकचत् ॥ १३ ॥ विनकायिमहाब्राह्म. सन्मार्गममवित् ॥ यद्विवायेक्षयासम्य संन्यासं कनाद्वर्णा ॥ १३ ॥ ॐ निर्यनदयेदालाः माहृहीतावस्थिनीम् ॥
संयुक्त ४ कालमममं, विनार्वलोकमाश्रित ४ ॥ १४ ॥ गत ४ साकन्यकादीना, विहृहीतासूद ४ विना ४ ॥ विलालावाकलावाला, अनिताः सागन ॥ १५ ॥
॥ सूत्रभावात् ॥ अमाममयितावायाः निनासी ४ खजीविनी ॥ सन्मार्गममवित्, दद्यात् ४ सर्वनिष्ठ ४ ॥ १६ ॥ अरुहसर्वसिद्धतायि, समालोकहिमनत ४ ॥ माभवा
अयनित्यक्त यनलाकमिनागत ४ ॥ १७ ॥ नारुयनमद ४ रार्क विहृ ॥ अकनविहृला ॥ गलिर्लामनयाम्यद्य, कयमदतजी विनः ॥ १८ ॥ वक्रक्षायिमहाब्राह्म ४
यनमार्थवदिमूर्ख ४ ॥ माभवयल्लयामास, माहृहीततिर्यस्यभत् ॥ १९ ॥ अन्यथाकन्यकावाह, मन्मनस्सुवनादय ४ ॥ तथायिमयिनिर्वन्दु ४ कानूः सादवकवलः
॥ २० ॥ यनसर्ववितावाला, यनास्मि यविनक्तिता ॥ गतयिनामिभूकाहः नजीविश्वकथयेत् ॥ २१ ॥ नद्यास्वायि यतिश्यामि, समृद्धवाहतामन ॥ यद्विताहयतिश्यामि, ० विहृ

११०

हीतानिनाश्या ॥ २४ ॥ सीमडवाच ॥ ॐ निः साकां तुलावालाः विलयकीनिनाश्याः ॥ वाक्सामानामहानागे ४ सत्तायेमूनिसकते ४ ॥ २५ ॥ कन्यकातिनूदकीतिर्वि
श्याति ४ समकत ४ ॥ अलिं ग्मलिं ग्मवद्व ४ वीश्वमार्गसूद ४ विनाः ॥ २६ ॥ आगत्यकनूत्ताविश्या, यम ४ सर्वदिभनत ४ ॥ ह्रविभावाकृत्सात्रवा, थावाधेदवचसदा ॥ २७ ॥
॥ वाक्साकाडवाच ॥ अलीवालविश्यालादि, भादननामिविकले ॥ नद्ययवायगतत, सुस्मात्तार्हतिः ॥ २८ ॥ अनिलीजीवनं नूयः सायुष्यं दयसं वच ४ ॥ आभा
ग्ययियसम्बादः तास्मात्तार्हतिः ॥ २९ ॥ त्वयाचेतत्कर्तकर्म, ब्रुवजन्मनिः ॥ गतयिताविश्याग ४ श्या, दनः समू निः ॥ ३० ॥ वद्वकानूत्ताकातीव, तव
तातामहायसा ॥ त्वत्प्राप्तिग्रहस्पदद्वू ताताजासातनं ॥ ३१ ॥ सैन्यस्यसर्वकर्मलि, समलाहृस्माकायेत ४ ॥ आश्यामिवनमवाहः ॥ गकिमित्यकनात्मन ४ ॥ ३२ ॥ गत ४
कालवशाद्विद्य, सुवस्तीकनूत्तामद ४ ॥ स्वस्तीकमहृगमहाल, त्वामवयविचिकयत् ॥ ३३ ॥ त्वीविहृयगत ४ वायि, सम्यवात्तिविः ॥ ॐ देवतमिर्देकार्यः मिदमन्य

कृताकृतः ॥ ३४ ॥ प्रवसीदासूखानकः कृताकृतः ४ कृतवसः ॥ तस्मात्तुं ५४ स्वमूखः ५ ॥ अत्रुमर्हसिस्ववतः ॥ ३५ ॥ विरुह्यं विवथाः ५ ॥ यतारुह्यं विवकर्मन् ॥ ५५ ॥
 त्वं सुन्दनीताम, वस्त्रायनमसुन्दनी ॥ ३६ ॥ नृत्यगयादिनियता, वाद्यवेष्टु विवदन्ता ॥ ३७ ॥ विवदिवयताः ५ ॥ इयसैलावन्धयन्ता ॥ ३८ ॥ आद्यावयन्धनानीताः ५ ॥ इयन्ताका
 दनादि ८ ॥ त्वं दृष्ट्वा नृपयस्यन्ताः सुवन्ताः सुविद्वन्ताः ॥ ३९ ॥ वाक्कल्पागुणसन्तः, सहसाकामभादिता ४ ॥ तं विदितायथानृतः ५ ॥ वाक्कल्पाकामभादिताः ५ ॥ ३९ ॥ आद्य
 नृपयस्यन्तः, मितिसत्वा विद्वन्ताः ॥ समीपगृहं गच्छः ५ ॥ वन्ताकल्पासखीजने ४ ॥ ४० ॥ प्रवृत्तगृहमानीय, नतेवनममानया ॥ दृष्ट्वाथमिदमकस्य, नन्तामभिदितागुणा ४ ॥ ४१ ॥
 सायिप्रायननिर्मिता वाक्कल्पा विद्वन्ताक ४ ॥ दृष्टं ४ ५ ॥ दृष्टं कनायि, कामिनातवधमिति ॥ ४२ ॥ विद्वन्तायथोदात्तः कल्याणीतववायिकाः ५ ॥ संप्राप्ताननवंधानं सुदास्यन्ता
 गर्दिता ४ ॥ ४३ ॥ ततस्तस्य वितावद्धा, मागववनवर्दिता ॥ कृष्टावृणविआगन, सायिचिद्वनिदवता ॥ ४४ ॥ रवातिद्वतमनसा, कामकसूदमिति ॥ आदृष्टं ४ ५ ॥ कामनमनसा, जा
 आभासचित्तानं विवः ५ ॥ मितिसत्वासखीजने ४

११६

॥ ४५ ॥ दृष्टं कनायि, कामिनातवधमिति ॥ ४६ ॥ विद्वन्तायथोदात्तः कल्याणीतववायिकाः ५ ॥ संप्राप्ताननवंधानं सुदास्यन्ता
 गर्दिता ४ ॥ ४७ ॥ ततस्तस्य वितावद्धा, मागववनवर्दिता ॥ कृष्टावृणविआगन, सायिचिद्वनिदवता ॥ ४८ ॥ रवातिद्वतमनसा, कामकसूदमिति ॥ आदृष्टं ४ ५ ॥ कामनमनसा, जा
 आभासचित्तानं विवः ५ ॥ मितिसत्वासखीजने ४

[illegible]

कै० ॥ ५ ॥ मलिनैश्च ॥ निद्रुमात्समाकृता, इतासुनं वादिता ॥ ३३ ॥ तन्मनिसि (अर्थात्) वाक्, यन्मायालनतत्त्वत्वा ॥ तन्मा ४ कवचसन्ना, ४ खड्गयानि अन्तर्धना ४ ॥ ३४ ॥ य
नद्यावद्वयूना, तनीनवर्चकना ४ ॥ स्याद्वाक्यगृहाह्यार्ष विचनकाचद्वयत्वा ॥ ३५ ॥ तन्मायकर्मनिगता वाक्कल्पवीतकल्पमः ॥ योनयवायुमित्युक्त्वा मयानैवयवायुज
न ॥ ३६ ॥ इच्छुः शमहासत्त्वः कश्चमन्त्रदुताकृति ॥ कृमावाक्यवत्त्वः कोडुल्लसमवित्ता ४ ॥ ३७ ॥ तन्मायनेवयत्वाकः वाक्कल्पयथातथा ॥ चक्रिनेववि
मस्य, मिथ्याग्नानवृत्तंगता ॥ ३८ ॥ ववच्छ्रमसहाय्याह्ला नद्यायायविनिश्चया ४ ॥ तेवन्मज्ञानकावादी, वाक्कल्प ४ दूर्ध्वकर्मवित् ॥ ३९ ॥ तन्मायविदायाकः सत्त्व
अमात्मिकैवव ॥ शुद्धतस्यामहात्म्य नवगम्य वि (अर्थात्) मातृ ॥ ४० ॥ नृवर्गवियनहृत्वा, गृही निद्रुम्यसत्त्वः ॥ निद्रुतिष्ठितानुक्त्वा दीयमानायवमन ४ ॥ ४१ ॥ सम
लाकृमहात्मानः भवमूकवतीतदा ॥ मयताममममात्मा ॥ तन्मोनेवयावमा ॥ ४२ ॥ जूनवयत्त्वनेवाचः तन्ममेतद्वर्गवत् ॥ गच्छति तितामुक्त्वा, वा ॥ ४३ ॥ नविनि

युक्तः न विप्रश्नः कर्तव्यं न च, न न वृत्तं विदुः स ह ॥ स य न विमलं यच्च स मच्च वे स दा स न ॥ १०१ ॥ अथ दयादि निष्पेक्ष, समानाश्च तथा निमिः ॥ त
 कृत्वा यथा न्यायः विमलं च नि निष्ठ ॥ १०२ ॥ आर्कं द्वाय दिने वृत्तं राजना द्वा दना दि नि ॥ अतः गृहीतानि ॥ गच्छ ॥ के आ सि म लि नां च व न ॥ १०३ ॥ अ
 यता मग्न अमर्त्ता, दिना नि क ति वि युक्ता ॥ अनि नै वृत्तं नो क्ता य, य न गच्छ यथा स स्वः ॥ १०४ ॥ ॐ ह्य व मू को अमर्त्ता ह्य विमल व न या ॥ उ वी र्व नै व्रा कः वि व ॥ स वृ थ
 ति स्त ॥ १०५ ॥ वि वृ ड वा च ॥ न च द्वा अने व वि वा यौ ग या वि ता, य द्वा द्वा व ल मा ग न स्त ॥ १०६ ॥ य न ॥ य नै नै म मा कि कां दि तः नि ना क लं ह्य न्द नि ग नु म र्द सि ॥
 ॥ १०७ ॥ रु ज ह्य ग य क व र्त्त यै ग्नि ता ॥ न म कि क र्त्त क नू त्ता ड मा न स ॥ ह्य दि म द्वा व वृ द्धि य क या, त दा व कि म न क र्त्तं शु चि स्मि त ॥ १०८ ॥ ह्य स म ॥ कानू य ना नू य ल
 न, उ ति कृ ता नू द नो क थ ता मि य ॥ य ना य का ना र्थ व कि सा अ व, गु ल वि ता श्व न न दा द या ॐ व ॥ १०९ ॥ यथा ह्य द्वा य नि ति वि ती म न ॥ क दा ति न श्च म वि न द्वा त्म ह्य

१२०

॥ ११० ॥ दं स मा ला क य ना वि ल्प न, सून द्वा ना आ दि त मि कृ ता त्त न ॥ १११ ॥ स व व अ न्ना ॥ क नू त्ता ड मा न स, य ना य का ना र्थ मि ला थ सै व दः ॥ वि न किं च ॥ स व
 कृ ता य ना न न ॥ ११२ ॥ ह्य ला वि ता ॥ स न्ध थ या द या य था ॥ ११३ ॥ गृ ह्य स ह्य अ न अ न्ध थार ते ॥ य ना क र्त्तं क र्त्त रि ना र्त्ति नै य दि ॥ अ ना द ना ति अ म हा नि मि ॥ य मा न
 क थ द्वा जी व नि ला क ग र्दि त ॥ ११४ ॥ ह्य वि अ न्ध ॥ सृ ज न ॥ स वृ द्धि मा ॥ य ना य का ना र्थ व कि सा अ व ॥ म हा य अ व क्ति त या द य ॥ पु न, ह्य वि का म च ह
 ला वि त ॥ स कि ॥ ११५ ॥ क र्त्त अ म्म ग्नि त वि क र्त्त य ॥ न न कि र्त्त सान स म्द सा यौ मा ॥ स व कि न यै सृ ह द ॥ स दा न ना श्व न कि य अ म्म नै क र्त्त क र्त्त य द ॥ ११६ ॥ अ ना
 नि अ म्म वि नि वि कृ त सा ॥ य जा कि व ह्यि गुरु व दि न दि न ॥ न सा ग ता न स्य ति र्त्त य दा न्द त्मः ॥ पु र्त्त य दा स्य ति न स्य ति कृ वः ॥ ११७ ॥ वि व ह्य ह्य अ नि हा न मा न सा, अ ना नि
 न कृ त्वा यै क मा त्त न ॥ ह न कि न मा म य न वि व द्वा त्म, ज ला ति म ह्य ॐ व नो न मा ग्नि ता ॥ ११८ ॥ ह्य अ म्म अ म्म त न सै य दा न ना, व क्ति स र्व य म सा द नै व ति ॥ त था वि

११

विष्णुर्मविमूखाय न कृदा ॥ विवेतनां किमाह किद्वनः ॥ १०२ ॥ अर्तसनीलं खजनं खजावितः ॥ विद्यानि मित्राणि सुदुर्दथस्य दः ॥ विद्याय च ४ यश्च नि सुदुर्दथस्य दः ॥
 ॥ १०३ ॥ नतस्य स ४ किचिदिहा किद्वमिति ४ अतिह्यमतस्य कलं वनावनः ॥ विनष्टमूल्यं न मिती यश्च ताः ॥ वदामि किं कवद्वं अमन्यकः ॥ १०४ ॥ एतज्जिह्वा विचारादि
 विद्युत्ता ४ ददामि अर्म्म ४ समुद्योजितं हलः ॥ हलार्थिनि ४ सुन्दविवां हितकदा, सदा सुनिष्काम ईने वयाजित ॥ १०५ ॥ कमानि ही सान समुद्र विद्वदः ॥ वृद्धवय ४ ह्य
 दनि कथं तमया ॥ विबुद्धमया तदिति र्थं स्मन् गतस्य हा ४ ही यमिमा विमानवा ॥ १०६ ॥ रुक्मिण्युग्रयूहि यच्च याति न ४ वृद्धं युक्तेव कनकवर्णं शुभं ॥ समीला मसिद्ध ४ ख
 सतावर्तं तथ, गनीन सी स्त्रान यथा वनावनः ॥ १०७ ॥ वृथा तन ४ क्रियति सुदधतन ४ गनीन विना न्यून विनिवृत्तयाः ॥ महात्मना मया वदात कर्मताः ॥ रुक्मिण्यु ४ खानि तथ
 किद्वमिति ॥ १०८ ॥ गनीन न्यून विहाउ मिच्छति, तदस्य वीर्यं यदि हास्य राजनः ॥ जनस्य वीर्यं तव मित्यनाकलः ॥ उदिच्छमान ४ सहसा ति निह्य ह ४ ॥ १०९ ॥ गनीन मत्यकस्य

१२१

खतनाम्यहः ॥ किं यत्प्रकाशं गनीन अवनः ॥ रुक्मिणी तत्प्रविता मनुयुवत ॥ १०० ॥ गनीन मया त्पुत्राय न सा खतः ॥ विचिन्वा च आत्मस्वया अमावनत ॥ महात्मन ४ स
 निविद्वधतस ४ यथा किना ॥ विद्युत्ता तव ह्यथ ॥ १०१ ॥ सती समालोक विष्णु ह्यसावनः ॥ किमस्ति नास्ति ति विचिन्वा चिथ ॥ विद्युत्ता नतमानि न्यून, यथा थ विह्वान मनादि
 मालिका ॥ १०२ ॥ कथं तमसि नै कि कृति ही नि (ओ नव ४ सुभावन इव लता विचिन्वा ताः ॥ विद्युत्ता नतमानि न्यून यथा, कमानि तत्प्रविनिवृत्तयाः ॥ १०३ ॥ तथैव
 ४ सुन्दनिसा अस्त्यथा, यवक कयो यमला कनिद्धित ४ ॥ यवर्कमानस्य यथा कवत्सना, यवर्हिदाया ४ यलर्च यजकिदि ॥ १०४ ॥ यवर्हिदाया विना कृत ४ यमान् कथं
 विद्युत्ता गीयति इर्मता तवत् ॥ कविह्यमानं क्वचिदयमानः ॥ क्वचिद्विह्व ४ क्वचिदयवाय ॥ १०५ ॥ क्वचिच्च वृद्धि नूतवकसावनः ॥ रुक्मिणी तत्प्रविनिवृत्तयाः ॥ यदा तदा क्वचिच्च
 वृत्तिर्वचक ४ सुब्रह्म विष्णु सुनिष्ठलः ॥ १०६ ॥ सदात्मनि स्मृत्तव नितीदसर्वथा, विद्युत्ता यश्च तथ वयस्यताः ॥ विविक्तस्य विद्युत्ता निह्य ह ४ यवनस्य सदा

लेनथागिनें८गवित् ॥ १०३ ॥ कभलचित्तं विदधातिऽणरुत, खबूयसाध्याययनाथनिष्ठित ॥ यदाउविर्नुगतनूहमात्सनी ॥ खबूयसीकृतमूयतिनका ॥ १०४ ॥ तता
इमतत्वज्ञातसुधागवित् विष्टवाक्खियवलिऽणवभ ॥ वृत्तिरुमुद्रायनमार्थवेदिता, विष्टव्यतश्चाकवतीतिसुवता ॥ १०५ ॥ नवानहाहृतजनके सद्विअः कभातिकानू
त्यविऽणमहाजनः ॥ अचिकितहृतजनसुद्ध ॥ सद्दः रावद्विअस्तु निविष्टिवृद्धिद्वय ॥ १०६ ॥ वदकिनूर्तयून आथसावनः यनाथसिद्धं प्रवतनत्रतसा ॥ कथत्वंदद्व
तकर्मकाविष्ठा मलिमसाध्याद्वज्जनस्यवाप्रया ॥ १०७ ॥ विनष्टऽणकोयनिविष्टद्विष्ठा, तनासिस्सैसानसमूदवमाप्रया ॥ युसादसहृतजनस्यसर्वदेऽथ, तावद्विअ ॥ सद्दं
जनाथमूद्यता ॥ १०८ ॥ वृत्तिवृत्तांतयूनभवमुकावाः तथा अनस्रंकनूलाडमानस ॥ गृहस्थत्किप्रवलयनत्रतसा, वदामित्सुन्दनिकां द्विर्तेत्वया ॥ १०९ ॥ यदुकामेययूनआथ
सावनः समासतायतदनूयहनितः ॥ गुबूयसाध्यायवंचित्तवस्तुअ, गमानांप्रवराप्रवर्ति ॥ ११० ॥ अमानितादम्बिवर्जितानना सुवक्तिसन्धानसमूदमाप्रया ॥ अहिन्सका ८

[illegible]

नवानन, खल्यनामिमहात्मन ४ ॥ १२३ ॥ अनुरिहायननाकः श्रीवात्सवर्धिसामकः ॥ तथाचतत्यसाधन, वचसाचमहात्मन ४ ॥ १२४ ॥ वाक्कामनां कलजाग, सुवर्णव
 क्कवादिनाः ॥ नमोऽग्यदुर्लवाधि वाधा वितथवा निदिताः ॥ १२५ ॥ अनुर्यदादिअदस्य कस्मिंश्चि कालययथि ॥ विमूकाकर्मवन्धन, यनवक्का भिगद्धति ॥ १२६ ॥
 नात्ताम्माडवाव ॥ एनक्कुत्तामहात्मन सुवतात्यक ४ ४ खिता ॥ उवाच ४ ४ खनिर्मुका, वाक्कामनां कलजाग ॥ १२७ ॥ सुवर्णवाव ॥ रगवन्धर्वसुक्कल्ल, ममातिवदिनन
 त ४ ॥ कस्ममत्यकनजल्ली, जन्माकन विष्णनद ४ ॥ १२८ ॥ हर्गत्तयंत्तविद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ १२९ ॥ ॥ तिद
 विद्याविद्युक्क विन्दकि विमलाग्या ॥ अनुर्यदादिअदस्य कस्मिंश्चि कालययथि ॥ विमूकाकर्मवन्धन, यनवक्का भिगद्धति ॥ १२६ ॥
 मनसिर्वर्ण ॥ १३१ ॥ सुवर्णवाव ॥ रगवन्धर्वसुक्कल्ल, ममातिवदिनन
 त ४ ॥ कस्ममत्यकनजल्ली, जन्माकन विष्णनद ४ ॥ १२८ ॥ हर्गत्तयंत्तविद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ १२९ ॥ ॥ तिद

१२३

ज ४ ॥ सुवर्णवाव ॥ रगवन्धर्वसुक्कल्ल, ममातिवदिनन
 त ४ ॥ कस्ममत्यकनजल्ली, जन्माकन विष्णनद ४ ॥ १२८ ॥ हर्गत्तयंत्तविद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ १२९ ॥ ॥ तिद
 विद्याविद्युक्क विन्दकि विमलाग्या ॥ अनुर्यदादिअदस्य कस्मिंश्चि कालययथि ॥ विमूकाकर्मवन्धन, यनवक्का भिगद्धति ॥ १२६ ॥
 मनसिर्वर्ण ॥ १३१ ॥ सुवर्णवाव ॥ रगवन्धर्वसुक्कल्ल, ममातिवदिनन
 त ४ ॥ कस्ममत्यकनजल्ली, जन्माकन विष्णनद ४ ॥ १२८ ॥ हर्गत्तयंत्तविद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ विद्यथे सुक्कल्लकथयन ॥ १२९ ॥ ॥ तिद

सायचक्षासो. सार्यं तो वातकतासनः ॥ अत्रावहूयति वि। यः सम्यग्गनायनाति ॥ १३ ॥ तय ४ स्त्राव्यनि यून ४ सादावक्कसूभायथ ॥ उदन् ४ नव्याधे ४
 कुर्यथदह ४ गुनः ॥ १४ ॥ मातायिहृष्टं शुभं रिक्ताहानिजनयिच ॥ वक्कविद्यामयायाना ४ वात्मजामयनायना ४ ॥ १५ ॥ तस्यवक्कात्महतस्य. संसाभयननिस्य
 ह ४ ॥ वृद्धिनामानाहानाज. संसाभयननिस्य ॥ १६ ॥ यितनमातनंवेव. ताहून ४ यितामहान् ॥ यिहयं मातनंवेव. सखीसंवेवनिवायवान् ॥ १७ ॥ अतमन्यसमृद्धि
 ये गृहंवेवसंकुमागतः ॥ दंष्ट्राव्यमहाहानि. सर्वसंस्थाह्वान्यवि ॥ १८ ॥ वनिहृष्टमहादान हृष्टानीववअसूखः ॥ विवचानमहाभताः ॥ १९ ॥ कर्मूलहृलाभन ॥ २० ॥
 नाभ्रनिर्लीजावनंययः ॥ मायुष्ययसंवेव ४ ॥ २१ ॥ निरसंविहृष्टमानसु. गेलार्कलाहवहृत् ॥ २२ ॥ वनात्मकनमागति. सर्वतीर्थनिवाहृत् ॥ २३ ॥ गमिष्यामिअकाल. नि
 तिहृष्टविहृष्टम ४ ॥ २४ ॥ गंगाययननंवेव. एगमतीगलुकातथ ॥ २५ ॥ गतदुष्टयथाहृष्टं ॥ २६ ॥ ययानकमसांवेव. एगनंवेवमहानदः ॥ २७ ॥ विहृष्टं

१२३

विहृष्टाथनि. हिमवत्यह्वानिव ॥ २८ ॥ औषधमयवयानिस्य नमिष्ययकनामिच ॥ कुरुक्षेत्रययानिस्य कृथागवर्धनादिहृत् ॥ २९ ॥ अन्त्यानिवमहासूत्र. तीर्थनिसमस
 वत ४ ॥ सचनचनमहावाहा अकालंयथविधि ४ ॥ ३० ॥ कदाचित्प्राकवाचाल ४ ॥ गलसामनयातमना ४ ॥ वृष्टुनीकामहासाग ४ ॥ दूष्कर्मविष्णुग ४ ॥ ३१ ॥ संसयमा
 नमृष्टि ४ ॥ सुखविहृष्टाथने ४ ॥ मृतीनामास्यदंष्ट्राः ॥ वनात्मकमसूविष्णुग ४ ॥ ३२ ॥ वृष्टिर्नवेवनद्याच. वक्राहृष्टगिलाजलः ॥ नम्यविचिर्गं विहृष्टं ॥ सदाचिहृष्टवयाने
 नाश ॥ कचिच्चक्राहृष्टाहृष्टिन्ध्यानि ४ ॥ वृष्टदण्डनि ४ ॥ विचनकीयथकालंमः ॥ वृष्टगीथयसंति ४ ॥ ३३ ॥ तस्मिन्वैश्वं नक्षत्रमहायुष्य. गलसाममहाद्युति ४ ॥ वृष्टुनीक
 ४ ॥ वसन्तात्मा. तीर्थनिसमसवत ४ ॥ ३४ ॥ हृष्टादवक्रदताथ. सनसृष्टाधेयवत ४ ॥ तथयानयिताथनि. तस्मिन्वचवानस ४ ॥ ३५ ॥ तन ४ ॥ वक्रवनावन तीर्थनां वसन्तज
 सा ४ ॥ मन ४ ॥ वसादमगम ४ ॥ हृष्टाहृष्टिन्ध्यानि ४ ॥ ३६ ॥ सावितीथयसन्तात्मा. अतथागवनायन ४ ॥ तथेवसिं कामाक्षः ॥ नागाश्चगुरुश्चजः ॥ ३७ ॥ एकमूर्ति विमानन

चतुर्थः ॥ अस्माकं बुद्ध्या, तत्त्वेन वा निनाह्ये स्मृता ॥ ३७ ॥ वेत्तुं द्रष्टुं च जगत् ॥ सुखादवद्विजालम् ॥ अन्यथा सर्वत्र ताताः सुखं वा इह ॥ खभवत् ॥ ३८ ॥
विज्ञानमवद्विजालम् ॥ निनाह्ये कर्मिर्द्विजगत् ॥ ३९ ॥ वेत्तुं द्रष्टुं च जगत् ॥ सुखादवद्विजालम् ॥ अन्यथा सर्वत्र ताताः सुखं वा इह ॥ खभवत् ॥ ४० ॥
तत्रैव लयमवत् ॥ ४१ ॥ आत्मानावद्विजगत् ॥ निनाह्ये कर्मिर्द्विजगत् ॥ ४२ ॥ वेत्तुं द्रष्टुं च जगत् ॥ सुखादवद्विजालम् ॥ अन्यथा सर्वत्र ताताः सुखं वा इह ॥ खभवत् ॥ ४३ ॥
मय कदम्बम् ॥ महाकमलमवत् ॥ ४४ ॥ तत्त्वेन वा निनाह्ये स्मृता ॥ ४५ ॥ वेत्तुं द्रष्टुं च जगत् ॥ सुखादवद्विजालम् ॥ अन्यथा सर्वत्र ताताः सुखं वा इह ॥ खभवत् ॥ ४६ ॥
विद्युत् ॥ द्रुतः ॥ स्वर्गदिवः ॥ सन्नि ॥ अन्यनिश्चितमानसा ॥ ४७ ॥ निनाह्ये कर्मिर्द्विजगत् ॥ ४८ ॥ वेत्तुं द्रष्टुं च जगत् ॥ सुखादवद्विजालम् ॥ अन्यथा सर्वत्र ताताः सुखं वा इह ॥ खभवत् ॥ ४९ ॥
वायुर्द्विजगत् ॥ यथासति यथाश्रुति ॥ वदन्ति विविधया ॥ ५० ॥ तत्त्वेन वा निनाह्ये स्मृता ॥ ५१ ॥ वेत्तुं द्रष्टुं च जगत् ॥ सुखादवद्विजालम् ॥ अन्यथा सर्वत्र ताताः सुखं वा इह ॥ खभवत् ॥ ५२ ॥

निदिर्गुत्तमायाः महाजनायेन गतः सवत्सराः ॥ ५५ ॥ शृङ्गारवदितवत्कृतकथयामितवानद्यः ॥ यनमार्थमिदं गुह्यं ॥ आलस्यं यानमाचनः ॥ ५६ ॥ अनागतमती
तत्तत् विप्रकृतमतिवचनं ॥ न गृह्णाति नृणां नृदि, वर्तमानार्थनिश्चिता ॥ ५७ ॥ तन्मूलमनुमानयेत् कथञ्चिद्वदितवानद्यः ॥ यमात्मानाय लक्ष्यं, इह यमाना विप्रदिने ॥ ५८ ॥
ना आगमामु निहिः ॥ आका, गुणपूर्वकमागतः ॥ यमानुस विह्वलः यनमार्थयकाणकः ॥ ५९ ॥ तदद्या सवत्सराः नागद्वयमलायतः ॥ उत्पद्यते हि जगत् ॥ अथा
यमानमचनस्य ॥ ६० ॥ प्रवभवस्य दानन्दः निर्गुत्तममवयवः ॥ जात्यादिशुद्धनरितः मदितीयमलक्ष्यः ॥ ६१ ॥ अथ कथं कथयन्, यवद्विगमलं वलः ॥ आद्या
विष्णुनिनिख्यातः ॥ शिवादिनयवद्विगमः ॥ ६२ ॥ आगाः अथ मविह्वलः यनमार्थयनाद्युत्वे ॥ तथा यितुद्वयं, लक्ष्यं इह स्वभावः ॥ ६३ ॥ शृङ्गारवदितवत्कृत
कथयामितवानद्यः ॥ यथा कथं वक्तव्यं ॥ यत्कृतममसूत्रं ॥ ६४ ॥ कदाचिद्वक्तव्यं ॥ यथा निदितामह ॥ यतिवत्तथा च ॥ यद्वानहमवयवः ॥ ६५ ॥ विदुः

ज्ञानवर्द्धनं, कथंथागवदसुखं ॥ एतस्मात्तत्त्वतः सर्वं त्वमात्रद्वयितामह ॥ ११॥ वक्तावाच ॥ षष्ठ्यादिनकात, आगच्छानमनूक्तं ॥ अल्यग्रहं वदन्तार्थं
मुखश्चात्यादकक्रियाः ॥ १२॥ यः यनः यदुतः याकः यूनवः यथै विन्यक्तः ॥ यैव सर्वद्वितात्मा नन ॥ अत्रिआयन ॥ ननकातानितत्त्वानितनात्तानितनादिद ॥
नानवचायनकस्य, नननाचायनसुतः ॥ १३॥ नानाचलाऊगत्यर्धः कालकालेयजायन ॥ नक्षिन्नवयूनकावत् वलदसीवलीयन ॥ १४॥ नानाचलायनवृक्ष, तत्त्वना
यनयनः ॥ नानाचलायनैकाति, नानानानाचलायन ॥ १५॥ यनादियना ॥ अथै सैतस्मान्नाक्षि यनायनः ॥ सप्रवदियनादवः सप्रवयनमादन ॥ १६॥ सप्रवयनमा
यकः सप्रवयूनवः यनः ॥ यच्च किंचिऊगत्यर्धः दृष्ट्यनगुयनयिवा ॥ १७॥ अकृष्टितः यतत्सर्वः यथै यनानाचलाः कृत्तः ॥ यथै विदित्वा तैदव, माकावनं यारु तैम
दुः ॥ १८॥ तमानानाचलायनै, अयस्मानन्या ॥ सदा ॥ किंकस्य दानेः किंकार्थेः किंकयाहिः किंसधने ॥ १९॥ यानिली अयननै द्विवैवः नानाचलायनैव ॥ २०॥ एतत्तत्त्व

धर्मशास्त्रः आगच्छेद्वयमनतथा ॥ ८८ ॥ यनस्य न विद्वार्थः किमन्ये ॥ अमुं विद्वाने ॥ वदुवायिदथा मार्गः दिगन्तं स दत्तः ॥ ८९ ॥ तथैकाना निसृष्टानि, अविशानि
 तमागच्छन् ॥ सहि सर्वगता देव ॥ अन्नायक ॥ सनातन ॥ ९० ॥ जगदादिन घन ॥ स्वर्गदुर्गतावन ॥ विष्णुर्विष्णुनचिन्तात्मा निलोसदसदात्मक ॥ ९१ ॥ वासुदेवा
 जगद्वास ॥ यनात ॥ कविनयय ॥ यस्याद्यायैयं कित ॥ सर्वः येलोकं सचवाचनः ॥ ९२ ॥ तस्मात्सर्वैरुगवाञ्छया विष्णु निलविशायत ॥ यस्याद्यास ॥ सद्गतानां तन्वाद्यानयुग
 द्वाय ॥ ९३ ॥ वासुदेवावसत्सु र्गः वासुदेवतत्तुस ॥ तमाद्रुयन्यं कचि कचिदोष्यनमययः ॥ ९४ ॥ विद्वान् मार्गं कचिच्च, कचिद्वक्त्रं वनतथा ॥ कचिक्कालमनाद्यंतः क
 चिज्जीवी सनातनः ॥ ९५ ॥ कचिच्चयनमानन्दा, कचिच्चिवमनामयः ॥ कचिच्छुद्धमिच्छा ॥ कचिच्छुद्धिगकस्तथा ॥ ९६ ॥ अद्भुतं मार्गं कचिच्च, कचिच्छुद्धमनायमः ॥ य
 तद्विष्णु निति त्वात, सहिनाहिनसं कितः ॥ ९७ ॥ आनी अयमविद्वान् यनमार्थयनाद्भुतः ॥ तथैकाना निसृष्टानि, अविशानि ॥ ९८ ॥ यतवाच्यवदुहि ॥ ९९ ॥

सदा ४ दृथक् विष्णु ४ ॥ अक्षय्य कथिता विष्णु लोकाया माह कानर्क ४ ॥ ९८ ॥ प्रकृतिरुच्युक्ता ४ ॥ हानेति ४ संप्रति रवत् ॥ वदुत्वा दिग्गजा ४ ॥ कानतर्ही सुदुर्लभः ॥
॥ ९९ ॥ आला कसर्वं शास्त्राणि, विचार्यति यून ४ यून ४ ॥ अयमक ४ सु निश्चयः ॥ अथा नाना यन ४ सदा ॥ १०० ॥ तस्मात्तु यदुक्तं सर्वः ॥ ह्युक्ता वेणु विह्वलात् ॥ अतः
यता अक्षय्य नाना यन मर्ज विदुः ॥ १०१ ॥ मूकं मयि ध्याय्य, ताना यन मतश्चित ४ ॥ क्षा विन कृता मा ध्या नि, ताना यन यना यन ४ ॥ १०२ ॥ एवं ग्राह्य उच्यते न दददव
तम ययः ॥ द्वितीयं दृष्टं किं तस्यैव, सायुक्तं ताना यन ४ ॥ १०३ ॥ शुद्धं देवा कृता ध्या कः ॥ कानथा ग सुदुर्लभः ॥ तन्मासासन विधुद्ध, ताना यन ४ यना यन ४ ॥ १०४ ॥ तमा
ताना यन निश्चयति, तद्विदुः कस्यैव शास्त्रः ॥ अक काले जयन्ति, तद्विष्णु यन मयदः ॥ १०५ ॥ तस्मात्ताना यन कृत, यन माथ ४ सनातन ४ ॥ अतः सप्तो नित्यः ॥ अक्षय्यं कृतं
चिकक ४ ॥ १०६ ॥ ताना यन जगद्वायी, यन मासा सनातन ४ ॥ जगत ४ सुविद्यं कान, यनियालन तत्यन ४ ॥ १०७ ॥ अक्षय्यं तनना चैव, निदिष्टा सकत ४ कथा ॥ अना

[illegible]

सैसाइनावाना ४ वावावानवाना ४ सदा ४ ॥ १२१ ॥ नयिचौवा कियनंममः नवनाना यमप्रिता ४ ॥ लियकनचवाथन वेबुवाविबुतलना ४ ॥ १२६ ॥ वूनकिसक
 लाहोकाः सहवींशु चिनिधादिन ४ ॥ उन्माकनसदधुय यस्यावद्विनादृणा ॥ १२७ ॥ दधार्दकासुदवस्य सर्वलाकस्यमहात्मन ४ ॥ यथाकि विबुलोसोकाः वून
 आनावर्दीमय ४ ॥ १२८ ॥ कियूनसुद्धतवा ४ ॥ वूनमा ४ संचतद्विच ४ ॥ तीकाउवाच ॥ ०० ल्युक्तातयधुयि सुवेवकनआचन ॥ १२९ ॥ यथायवाननिनत सैलाकस्य
 वद्वमन ४ ॥ वूलुनीकायिअमामिना तावाचनयनाचम ॥ १३२ ॥ नमाः सुकणवाचनि यूनोत ४ यूननूदीनयत ॥ वसीदममहाभागी निनिधाच्चर्यसर्वदा ॥ १३३ ॥
 ॥ ०० ल्युनीकायि विन्दः वृत्तिस्वयजनादितः ॥ नय ४ सिद्धिकवनम्य जलप्रमत्तथावनः ॥ १३४ ॥ उवाच चिनिमकाकी वूनमार्थविचद्वन ४ ॥ सुधुयिकणवाचन
 लयप्रमत्तिसहातया ॥ १३५ ॥ निडादिनस्यनेवासी ल्यूनमार्थविनाआनि ॥ सिद्धकायसुअन्यव मगथका निहिंसका ॥ १३६ ॥ विनाभिसदसैडीहिला यनस्यनसमान

१३०

न
 नाना विचैकी यथाकामं यस्यनास्यसन्निभो ॥ १३७ ॥ गथप्रसन्नान्यवैसि सनसांयनितामयि ॥ दिग ४ इगगिराः विमलं यरुसीयतः ॥ १३८ ॥ सानूतग्यसुखायग्यवि
 द्वा ४ यस्यारुलावित ४ ॥ अूनवूलैयच ४ सर्व सदाथसि स्याममत ४ ॥ १३९ ॥ वसप्रदवदवणा विज्ञातइकावत्यन ॥ तत ४ कदाचिहगवान् वूलुनीक ॥ १४० ॥
 वाइवाणीऊगनाथ वूलुनीकाचनद्वन ४ ॥ गवचवागदायानि ४ यीतवासा ४ वूनवैकुला ॥ १४१ ॥ वूलुलीकविष्णालाक्ष वन्द विष्णाननद्युमि ४ ॥ किनीठे वूलुलीदानीकस्य
 नीकठिचुवकान् ॥ १४२ ॥ ग्रावत्यवद्व ४ ग्रावास ४ कोयुतनविचवित ४ ॥ वनमाला यनीतीग ४ वूलैतां वैकैयुयैनी ॥ १४३ ॥ वूलुल मूकठकडुला ४ ॥ १४४ ॥ वूलुतावकस्य
 म मूकाहानसमाकलः ॥ आहवलीमानाकस्येष्ट वूमलेनयिआकले ४ ॥ १४५ ॥ आइवूकगवूर्तगामान् वडैनातलसुनिहा ॥ नऊकनातययन मूकाहामविलीविना
 ॥ १४६ ॥ विनाऊमानाकवण जमनवीजनादिनि ४ ॥ देव ४ लेदे ४ कथासिद्धे गनुर्वैमूनिशिर्वै ४ ॥ १४७ ॥ वेवानससुदेष्ट रके ४ सीराविनेनवि ॥ रकेहगवग्य

ये ४ सयमानाद्या भागले ४ ॥ १४९ ॥ तद्वृद्धादवदवजः ० वृद्धनीक ४ कृता ३ लि ॥ यथात ४ मिलयादुमो, चिनं वार्थितदर्पितः ॥ १५० ॥ विवकीवद्वयी कः ० न
 यनाह्यस्यवृद्धात ॥ अलिङ्गं लि निववाक्याः ० लिह निवव जिवां दं ॥ १५१ ॥ यथातदुमो सानन्दः ० उद्धाववजनादनः ॥ अलिङ्गं लि वनाभादुत्वा, वृद्धनाकना
 लना ॥ १५२ ॥ वृद्धली कड वाच ॥ तमधु विम्वद्वृद्धः ० सर्वलाके द्यु कवद्वध ॥ निलेजनाय नित्याय, निरुत्ताय महात्मनः ॥ १५३ ॥ ह्रीमादुजगतासादिः ० वृद्धवृद्ध
 तयनः ॥ जात्यादिहि न संख्य ० विम्वर्ययनमययः ॥ १५४ ॥ तमाधु वासुधवाच, यनात यथाभाकम ४ ॥ उगद्वत्य किरीटान, कि निम्वलाय वकि ० ॥ १५५ ॥ व
 दाभा नमिदं सर्वः ० मनाभा नत्वमी न्धन ४ ॥ त्वमी न्धन सर्वद्वताना ० त ० धेवजगदीता न्धन ४ ॥ १५६ ॥ तमसु अहिना मय, गोविन्द ननु उध ४ ॥ अनुयद्वता रकाना
 मनकाभा न्धन ० ॥ १५७ ॥ त्वयि सर्वमिदं वाक्, त्वत्पर्यवेकैवेवलः ॥ त्वमस्मिन्वदहि नं च, त्वमस्मिन्नेजगत्यादा ॥ १५८ ॥ तमाधु नास्ति वृद्धत, तलिनायतनायन ॥

१३१

तमाधु सर्ववेदाके, विह्वनातात्म विह्वतय ४ ॥ त्वभवदवदवजः, कानन्यकत रादनः ॥ वसीदद्वदवावाह, मखचक्रगदाधन ४ ॥ १५९ ॥ तम ४ समसु द्वताना ० सादिहताय
 यं द्वतय ॥ अनुकनूययवाच, विम्ववयवविम्वव ॥ १६० ॥ यथावकादवाधवा, विदकीवैसु न्धन ॥ महिमाननुधा ० ॥ १६१ ॥ वाचम ० गावभायव
 महिमानं नवाचूत ४ ॥ जात्यादिहि न संख्य ४ सुदाध्या सितत्वत ४ ॥ १६२ ॥ तथाविधद्वधन, रकानामनुकास्यया ॥ मत्स्याकमादिद्वधन, दध्धतयनूवाकम ४ ॥ १६३
 ॥ हीमादवाच ॥ वृत्तिरुधेर्वधा हि के उद्धावयुधाकमः ॥ तमवाला कयवान, चिनवार्थितदर्पितः ॥ १६४ ॥ ततस्तुमादुहगवान् यद्वना रक्षि विक्रम ४ ॥ वृद्धनीकी महा रा
 गः कयप्रोगंती नवास्यरुः ॥ १६५ ॥ ग्राहगवान्वाच ॥ व्रीतास्मिन्वद्वक, वृद्धनीकरवानच ॥ अगद्वकनू मलीतसु, ममलाकी सुद्वन्तः ॥ १६६ ॥ हीमादवाच ॥ तमवम
 के गोविन्द, ग्राधन राकि वल्लभ ॥ ईदवद्वद्वतानद्व ४ वृद्धवृद्धि ४ यथातय ४ ॥ १६७ ॥ दवाध्याकथा सिद्धा ४ साधुसाध्या तिवावृवन् ॥ जगुध सिद्ध गद्वर्वा नद्वधु अय

ASMA ARCHIVES

1.608

ਗੁਰਮਤਿ ਨਾਮੋ

1608